



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 246]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 22, 2015/भाद्र 31, 1937

No. 246]

NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 22, 2015/BHADRA 31, 1937

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 सितम्बर, 2015

अंतिम जाँच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. और थाइलैंड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'पालिएस्टर (गैर-टैक्सचर्ड और गैर-पीओवाई) के सभी फुली ड्रान यार्न या फुली ओरिएंटेड यार्न/स्पिन ड्रान यार्न/फ्लैट यार्न और अन्य यार्न' के आयातों से संबंधित निर्णायक समीक्षा (एसएसआर) पाटनरोधी जाँच ।

क. मामले की पृष्ठभूमि

फा. संख्या 15/03/2014-डीजीएडी.—यतः समय-समय पर यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात अधिनियम भी कहा गया है) और उसकी समय-समय पर यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात नियमावली भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग, भारत सरकार में संबंधित नियमावली के अंतर्गत नियुक्त निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात प्राधिकारी भी कहा गया है) ने दिनांक 6 मई, 2008 की अधिसूचना सं. 14/3/2008-डीजीएडी द्वारा चीन जन. गण., थाइलैंड और वियतनाम के मूल के अथवा वहां से निर्यातित 'पालिएस्टर (गैर-टैक्सचर्ड और गैर-पीओवाई) के सभी फुली ड्रान यार्न या फुली ओरिएंटेड यार्न/स्पिन ड्रान यार्न/फ्लैट यार्न और अन्य यार्न' (जिसे एतदपश्चात 'संबद्ध वस्तु' कहा गया है) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जाँच की शुरुआत की थी। प्राधिकारी ने दिनांक 23 जनवरी, 2009 की अधिसूचना सं. 14/3/2008-डीजीएडी द्वारा प्रारंभिक जाँच परिणाम जारी किए थे और केन्द्र सरकार द्वारा दिनांक 26 मार्च, 2009 की अधिसूचना सं. 29/2009-सीमाशुल्क द्वारा

अनंतिम शुल्क लगाया गया था। प्राधिकारी द्वारा दिनांक 29 सितम्बर, 2009 की अधिसूचना सं. 14/3/2008-डीजीएडी द्वारा अंतिम जाँच परिणाम जारी किए गए थे। अंतिम जाँच परिणामों में प्राधिकारी द्वारा की गई सिफारिश के आधार पर केन्द्र सरकार द्वारा संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित उक्त वस्तु के आयातों पर अनंतिम शुल्क के लागू होने की तारीख से दिनांक 11 नवम्बर, 2009 की अधिसूचना सं. 124/2009-सीमाशुल्क द्वारा निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

2. यतः, मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि., मै. वेलनोन पालिएस्टर्स लि., मै. गार्डन सिल्क मिल्स लि. और मै. आलोक इंडस्ट्रीज लि. जो भारत में संबद्ध वस्तु के प्रमुख घरेलू विनिर्माता हैं ने अधिनियम और नियमावली के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से एक विधिवत रूप से साक्ष्यांकित आवेदन प्राधिकारी को प्रस्तुत किया है जिसमें संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित उक्त वस्तु के पाटन के जारी रहने और उसकी पुनरावृत्ति होने और शुल्क की अवधि समाप्त होने की दशा में घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति होने का आरोप लगाया गया है और संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित आयातों पर पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने और उसे बढ़ाने के लिए उसकी समीक्षा करने का अनुरोध किया है।

3. घरेलू उद्योग की ओर से प्रस्तुत पाटन और क्षति के प्रथमदृष्टया साक्ष्य वाले विधिवत रूप से साक्ष्यांकित आवेदन और पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9 क (5) के अनुसार प्राधिकारी ने दिनांक 24 मार्च, 2014 की अधिसूचना सं. 15/3/2014-डीजीएडी द्वारा निर्णायक समीक्षा जाँच की शुरुआत की ताकि चीन जन. गण., थाइलैंड और वियतनाम के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के संबंध में लागू शुल्कों को जारी रखने की आवश्यकता की समीक्षा की जा सके और इस बात की जाँच की जा सके कि क्या ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने और घरेलू उद्योग को क्षति होने की आशंका है। तथापि, प्राधिकारी ने नोट किया कि संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान न तो वियतनाम से कोई आयात हुए हैं और न ही वियतनाम से अन्य देशों से कीमतों को दशानि वाले वाला कोई आकड़ा या साक्ष्य उपलब्ध है। अतः, वियतनाम को वर्तमान जाँच के दायरे से बाहर रखा गया है। तदनुसार, वर्तमान निर्णायक समीक्षा जाँच में शामिल देश चीन और थाइलैंड (जिन्हें आगे 'संबद्ध देश' कहा गया है) हैं। केन्द्र सरकार द्वारा दिनांक 9 मई, 2014 की अधिसूचना सं. 18/2014-सीमाशुल्क (एडीडी) द्वारा 25 मार्च, 2015 तक और उसे शामिल करते हुए संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क की वैधता अवधि को बढ़ाया गया था।

4. प्राधिकारी के अनुरोध पर केन्द्र सरकार ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 17 के अनुसार जाँच को पूरा करने के लिए समय-सीमा को 23 सितम्बर, 2015 तक बढ़ाया था।

5. वर्तमान समीक्षा के कार्यक्षेत्र में संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित उक्त वस्तु के आयातों से संबंधित मूल जाँच के सभी पहलू शामिल हैं।

ख. प्रक्रिया

6. संबद्ध जाँच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:

- i. नियम 6 (2) के अनुसार जाँच की शुरुआत के के बारे में नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को सूचित किया गया।
- ii. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली 6(3) के अनुरूप संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों तथा संबद्ध देशों के दूतावासों को इस आवेदनों के अगोपनीय पाठ की प्रतियां उपलब्ध कराई थी। आवेदन अगोपनीय अंश की एक प्रति सार्वजनिक फाइल में भी उपलब्ध कराई गई और अनुरोध करने पर अन्य हितबद्ध पक्षकारों को दी गई।
- iii. प्राधिकारी ने नियम 6(2) एवं 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के निम्नलिखित ज्ञात विनिर्माताओं/निर्यातकों (जिनके व्योरे घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए) को सार्वजनिक सूचना की प्रति भेजी और इस पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में अपने दृष्टिकोण रखने का उन्हें अवसर दिया:

चीन जन. गण.

- i. टांगकुन ग्रुप कं. लि.
- ii. वुसी गॉडशीप इंडस्ट्रीयल (ग्रुप) कं. लि.

- iii. जियांगसु हेंग्ली कैमिकल फाइबर कं.
- iv. झेजियांग फ्लेमरिटारडेंट कं. लि.
- v. झेजियांग हुआक्सीन कैमिकल फाइबर कं. लि.
- vi. शाओजिंग यिफेंग फैसी यार्न कं. लि.
- vii. झेजियांग सिफू इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कं. लि.
- viii. शानडोंग वांटोन्गडा फाइबर कं. लि.
- ix. यिविन ग्रेस कं. लि.

थाइलैंड

- i. थाई पॉलिएस्टर कंपनी लिमिटेड

7. संबद्ध देशों से निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है।

चीन जन. गण.

- i. जियांगसु हेंग्ली कैमिकल फाइबर कं. (जिसे आगे 'मै. जियांगसु' कहा गया है)

थाइलैंड

- i. थाई पॉलिएस्टर कंपनी लिमिटेड
- ii. मै. इंडोरामा पालिएस्टर इंडस्ट्रीज

8. चीन के गैर-बाजार अर्थव्यवस्था होने के कारण, बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एमईटी) संबंधी प्रश्नावली चीन जन. गण. के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों तथा भारत स्थित चीन जन. गण. के दूतावास को भी भेजी गई थी जिसमें विहित समय-सीमा के भीतर प्राधिकारी को संगत सूचना प्रदान करने का अनुरोध किया गया। यद्यपि जाँच शुरुआत के प्रयोजनार्थ चीन जन. गण. के लिए सामान्य मूल्य पर भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत को विधिवत रूप से समायोजित करके किया गया है तथापि, प्राधिकारी ने चीन जन. गण. के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को सूचित किया है कि उन्होंने आवेदक के दावे की यथा संशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध के पैरा 7 और पैरा 8 के आलोक में जाँच की है। अंतः चीन जन. गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से ऊपर दिए गए अनुबंध I के पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया है ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सकें कि चीन जन. गण. के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार प्रदान किया जा सकता है। तथापि, मै. जियांगसु ने एमईटी का दावा नहीं किया है और केवल निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है।

9. प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/उपभोक्ताओं (जिनके नाम एवं पते प्राधिकारी को उपलब्ध कराये गए थे) को सार्वजनिक सूचना की प्रतियां अंग्रेषित की तथा उन्हें सलाह दी कि नियम 6(4) के अनुरूप इस पत्र के जारी होने की तिथि से चालीस (40) दिनों के भीतर लिखित रूप में अपने दृष्टिकोण से अवगत कराएं:

- i. मै. कोरल इंडिया
- ii. मै. वैद नैरो फैब प्रा. लि.
- iii. मै. साफ्ट अच फेब्रिक्स प्रा. लि.
- iv. मै. आशु इमपैक्स
- v. मै. सी के लेस
- vi. मै. किनसुम इंडस्ट्रीज

- vii. मै. शुभम मार्केटिंग
- viii. मै. सुजाता सिंथेटिक्स
- ix. मै. एम. डी. रेयान
- x. मै. जय रघुवीर
- xi. मै. तान्या सिंथेटिक्स
- xii. मै. मुरलीधर टैक्सटाइल्स
- xiii. मै. मीना टैक्सटाइल्स
- xiv. योगेश्वर टिवस्टर्स
- xv. मै. सहस सिंथेटिक्स

10. किसी भी आयातक और/या प्रयोक्ता उद्योग द्वारा विहित प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं दिया गया है।

11. वाणिज्य आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) से प्राप्त सौदा-वार आयात आकड़ों का प्रयोग वर्तमान एसएसआर में व्यापक-विश्लेषण के लिए किया गया है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने संभावना के आकलन के प्रयोजनार्थ प्रवृत्तियों के विश्लेषण के लिए पीओआई के बाद (अक्टूबर 2013- मार्च 2014) के आयात आंकड़े और विश्व व्यापार एटलस के आकड़ों की भी जाँच की गई है। प्राधिकारी ने मै. इंडोरामा पालिएस्टर इंडस्ट्रीज के आकड़ों का निर्यातों की मात्रा, सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत, उत्पादन लागत और संभावना संबंधी मापदंडों के विभिन्न पहलुओं के संबंध में सत्यापन भी किया गया है।

12. निर्यातक, उत्पादक, आयातक और अन्य हितबद्ध पक्षकारों, जिन्होंने प्राधिकारी को न तो उत्तर दिया है और न ही इस जांच से संबंधित सूचना दी है, को प्राधिकारी द्वारा असहयोगी हितबद्ध पक्षकारों के रूप में माना गया है।

13. प्राधिकारी ने नियम 6 (7) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय पाठ को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण हेतु रखी गई सार्वजनिक फाईल के रूप में उपलब्ध कराया।

14. प्राधिकारी ने उत्पादन की लागत तय करने तथा अपनी सतत रीतियों के अनुसार भारत से संबद्ध वस्तुओं का क्षति रहित मूल्य का निर्धारण करने जिससे इस बात की जांच की जा सके कि पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा, के आधार पर संभव सीमा तक घरेलू उत्पादक द्वारा प्रस्तुत सूचना की जांच की है।

15. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को 16.02.2015 को आयोजित आम सुनवाई में अपना दृष्टिकोण मौखिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर दिया। मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने वाले सभी हितबद्ध पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने अनुरोध और उनके बाद खंडनों को लिखित रूप में प्रस्तुत करें। तथापि, उसके बाद निर्दिष्ट प्राधिकारी के बदल जाने के कारण यह आवश्यक हो गया कि 7.1.2011 को 2006 की सिविल अपील संख्या 949 में एक डिविजन पीठ द्वारा आटोमोटिव टायर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (एटीएमए) बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय के अनुसार नए डीए द्वारा नई आम सुनवाई आयोजित की जाए। अतः नए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा दिनांक 20.08.2015 को पुनः मौखिक सुनवाई की गई। सुनवाई में भाग लेने वाले सभी हितबद्ध पक्षों से पुनः मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने अनुरोधों/खंडनों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया।

16. निम्नलिखित हितबद्ध पक्षों द्वारा लिखित अनुरोधों और खंडन संबंधी अनुरोधों को प्रस्तुत किया गया है:-

(क) घरेलू उद्योग

(ख) मै. जियांगसु हेंगली कैमिकल फाइबर कं. लि. चीन

(ग) मै. इंडोरामा पालिएस्टर इंडस्ट्रीज पीसीएल, थाइलैंड (जिसे आगे 'मै. इंडोरामा' कहा गया है)

17. इस जाँच के दौरान हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत किए गए अनुरोधों पर इस जाँच परिणाम में संगत पाई गई सीमा तक जाँच और उनका समाधान किया गया।

18. भागीदार घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना और आंकड़ों का आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया था। गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दी गई सूचना की जाँच नियमों/प्रक्रिया के अनुसार उनके गोपनीयता के दावे के पर्याप्त होने के संबंध में की गई। आवश्यक होने पर इस प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक हुआ गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय माना गया है और उसे अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं बताया गया है। जहां भी संभव हुआ गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को निर्देश दिया गया है कि वे गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय भाग उपलब्ध कराएं।

19. जहां भी किसी हितबद्ध पक्ष ने वर्तमान जाँच की प्रक्रिया के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया या जाँच में अत्यधिक बाधा डाली तो प्राधिकारी ने अपने पास "उपलब्ध तथ्यों" का प्रयोग किया है और ऐसे पक्षकारों को असहयोगी माना है।

20. प्राधिकारी ने 11 सितम्बर, 2015 को एक प्रकटन विवरण के रूप में मामले के अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन सभी हितबद्ध पक्षों को किया। हितबद्ध पक्षकारों को विवरण में प्रकट जाँच के विभिन्न पहलुओं उसके संबंध में 16 सितम्बर, 2015 तक टिप्पणियां प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया। हितबद्ध पक्षों से प्राप्त टिप्पणियों पर उनके संगत होने की सीमा तक विचार किया गया और इस जाँच परिणाम अधिसूचना में उनका उचित ढंग से समाधान किया गया है।

21. इस अंतिम जाँच परिणाम में "****" किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इस प्रकार से विचार किये जाने का द्योतक है।

22. पीओआई के लिए विनियम दर प्राधिकारी द्वारा 56.90 रुपया = 1 अमरीकी डॉलर के रूप में लिया गया है।

ग. विचाराधीन उत्पाद का दायरा और समान वस्तु

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

23. विचाराधीन उत्पाद (पीयूसी) और समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- i. वर्तमान जाँच एक निर्णायक समीक्षा जाँच है। तदनुसार, वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद का दायरा मूल जाँच के समान ही रहना चाहिए।
- ii. विचाराधीन उत्पाद में 'पालिएस्टर (गैर-टैक्सचर्ड और गैर-पीओवाई) के सभी फुली ड्रान यार्न या फुली ओरिएंटेड यार्न/स्पिन ड्रान यार्न/फ्लैट यार्न और अन्य यार्न' शामिल हैं जो सीमाशुल्क शीर्ष 5402.47 के टैरिफ विवरण के अनुसार हों।
- iii. इस उत्पाद को वाणिज्यिक बाजार शब्दावली में आम तौर पर 'फुली ड्रान यार्न' के रूप में जाना जाता है और इसका प्रयोग परिधान/घरेलू वस्त्र और अन्य औद्योगिक वस्त्रों के विनिर्माण के लिए किया जाता है।
- iv. संबद्ध वस्तु की तकनीकी विनिर्देशनों को उनके डेनियर, तन्यता, चमक, रंग आदि के रूप में परिभाषित किया जाता है।

उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षों के अनुरोध

24. विचाराधीन उत्पाद (पीयूसी) और समान वस्तु के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा कोई अनुरोध नहीं किए गए हैं।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

25. वर्तमान आवेदन में विचाराधीन उत्पाद जैसा कि मूल जाँच में भी परिभाषित है, 'पालिएस्टर (गैर-टैक्सचर्ड और गैर-पीओवाई) के सभी फुली ड्रान यार्न या फुली ओरिएंटेड यार्न/स्पिन ड्रान यार्न/फ्लैट यार्न और अन्य यार्न' हैं (जिसे आगे 'विचाराधीन उत्पाद/संबद्ध वस्तु भी कहा गया है)। इस उत्पाद को वाणिज्यिक बाजार शब्दावली में आम तौर पर 'फुली ड्रान यार्न' (एफडीवाई) के रूप में जाना जाता है। संबद्ध वस्तु का प्रयोग परिधान/घरेलू वस्त्र और अन्य औद्योगिक वस्त्रों के

विनिर्माण के लिए किया जाता है। संबद्ध वस्तु की तकनीकी विनिर्देशनों को उनके डेनियर, तन्म्यता, आदि के रूप में परिभाषित किया जाता है।

26. विचाराधीन उत्पाद को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 54 में और सीमाशुल्क वर्गीकरण के अनुसार 5402.47 के अंतर्गत भी 'मानव-निर्मित फिलामेंट' की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और जाँच के दायरे पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु के समान है। आयातों और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के तकनीकी विनिर्देशनों, कार्यों और अंतिम प्रयोगों के बीच कोई अंतर नहीं है। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और इसलिए याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु को वर्तमान समीक्षा जाँच के प्रयोजनार्थ संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु माना जा रहा है।

27. प्राधिकारी मानते हैं कि वर्तमान जाँच एक निर्णायक समीक्षा जाँच है इसलिए वर्तमान जाँच में विचाराधीन उत्पाद का दायरा मूल जाँच के समान ही रहेगा।

घ. घरेलू उद्योग और उसकी स्थिति

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

28. घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि आवेदक उत्पादकों को कुल घरेलू उत्पादन में 52 प्रतिशत हिस्सा बनता है और इसलिए उनके पास पाटनरोधी नियमावली के अनुसार स्पष्ट योग्यता है।

29. निर्णायक समीक्षा जाँच के लिए 'योग्यता' की शर्त लागू नहीं होती है क्योंकि नियम 23 (3) के अंतर्गत नियम 5 को लागू नहीं किया गया है।

30. ऐसा कोई कानून नहीं है जिसके अंतर्गत पूर्ववर्ती जाँचों की तुलना में संबद्ध जाँच में घरेलू उद्योग के संघटन में बदलाव पर कोई प्रतिबंध नहीं है। इसके अलावा, हितबद्ध पक्षों ने ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है जो यह दर्शाता हो कि आवेदक घरेलू उत्पादक घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षों के अनुरोध

31. मै. जियांगसू ने अनुरोध किया कि मूल जाँच की तुलना में वर्तमान निर्णायक समीक्षा जाँच में घरेलू उद्योग के संघटन में बदलाव हुआ है। मूल जाँच में 4 उत्पादक अर्थात् मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि., मै. नोवा, मै. पेट्रोकेमिकल्स लि., मै. गुप्ता सिंथेटिक्स लि. और मै. चिरीपाल पेट्रोकेमिकल्स लि. थे, जो याचिकाकर्ता थे। वर्तमान निर्णायक समीक्षा जाँच में 4 याचिकाकर्ताओं अर्थात् मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि., मै. आलोक इंडस्ट्रीज लि., मै. गार्डन सिल्क मिल्स लि. और मै. वेलनोन द्वारा सूचना प्रदान की जा रही है। इस बात के कोई कारण रिकार्ड में नहीं हैं कि क्यों पूर्ववर्ती जाँचों में याचिकाकर्ताओं अर्थात् मै. नोवा, मै. पेट्रोकेमिकल्स लि., मै. गुप्ता सिंथेटिक्स लि. और मै. चिरीपाल पेट्रोकेमिकल्स लि., ने वर्तमान जाँच में कोई सूचना प्रदान क्यों नहीं की है। अतः मै. जियांगसू ने प्राधिकारी से उक्त 3 उत्पादकों पर पाटनरोधी शुल्क के लागू होने के प्रभाव की जाँच करने को ध्यान में रखते हुए उनसे सूचना मंगाने के लिए प्राधिकारी से अनुरोध किया है।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

32. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में निम्नानुसार उल्लेख है:

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा ऐसे उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है सिवाए उस स्थिति के जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं अथवा वे स्वयं उसके आयातक होते हैं, तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ शेष उत्पादकों के संदर्भ में लगाया जा सकता है।

33. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह आवेदन मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि., मै. वेलनोन पालिएस्टर्स लि., मै. गार्डन सिल्क मिल्स लि. और मै. आलोक इंडस्ट्रीज लि. द्वारा दायर किया गया है। यह आवेदन मै. जेबीएफ इंडस्ट्रीज लि. और मै. सुमित इंडस्ट्रीज लि. द्वारा विधिवत रूप से समर्थित है।

34. अतः प्राधिकारी मानते हैं कि उत्पादन के आधार पर आवेदक उत्पादकों का भारतीय उत्पादन में एक प्रमुख हिस्सा अर्थात् 52 प्रतिशत बनता है और इसलिए वे योग्यता संबंधी अपेक्षा को पूरा करते हैं। घरेलू उत्पादकों के उत्पादन के आंकड़े निम्नानुसार हैं:-

उत्पादन	2010-11	हिस्सा	2011-12	हिस्सा	2012-13	हिस्सा	पीओआई	हिस्सा
रिलायंस	***	19%	***	15%	***	16%	***	15%
आलोक	***	4%	***	11%	***	11%	***	9%
गार्डन	***	13%	***	14%	***	14%	***	12%
वेलनोन	***	11%	***	10%	***	10%	***	15%
कुल याचिकाकर्ता	182966	47%	204803	49%	224709	50%	244843	52%
जेबीएफ	***	9%	***	10%	***	10%	***	10%
सुमित	***	3%	***	3%	***	7%	***	8%
समर्थक	44243	11%	55107	13%	76121	17%	82628	17%
इंडोरामा	***	2%	***	1%	***	1%	***	1%
नोवा/चिरीपाल	***	6%	***	5%	***	3%	***	3%
नोवा/गुप्ता	***	5%	***	5%	***	1%	***	0%
शुभलक्ष्मी	***	5%	***	6%	***	4%	***	4%
भिलोसा	***	3%	***	6%	***	5%	***	5%
राज रेयान	***	4%	***	4%	***	3%	***	2%
गुजरात पॉलीफिल	***	5%	***	4%	***	3%	***	3%
वेलस्पन	***	1%	***	2%	***	1%	***	1%
अन्य	***	10%	***	5%	***	10%	***	11%
अन्य उत्पादक	158831	41%	154180	37%	144954	33%	145395	31%
कुल उत्पादन	386039	100%	414090	100%	445783	100%	472866	100%

ड. गोपनीयता

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

35. घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि निर्यातकों ने उत्तर के अगोपनीय अंश में संलग्न विभिन्न परिशिष्टों का कोई सार्थक सारांश प्रस्तुत नहीं किया है, और यह कि लगभग सभी उक्त परिशिष्टों में सूचीबद्ध रूप में भी सूचना नहीं दी गई है।

36. उत्पादन, भारत को निर्यात, घरेलू बिक्रियों और क्षमता के संबंध में भी व्योरो के गोपनीय होने का दावा संबद्ध देशों से निर्यातकों ने किया है। प्राधिकारी से प्राधिकारी की संगत प्रक्रिया पर विचार करते हुए निर्यातकों के निर्यातों, उत्पादन और क्षमताओं की समग्र संख्याओं को प्रकट करने का अनुरोध किया जाता है।

37. घरेलू उद्योग ने विधिक प्रावधानों और प्राधिकारी द्वारा विहित दिशानिर्देशों के अनुसार पर्याप्त कारणों के साथ उनकी व्यापार संवेदनशील सूचना के बारे में गोपनीयता का दावा किया है। गोपनीयता का दावा करने के कारण और आधारों को आवेदन के अगोपनीय अंश में दिया गया है।

38. घरेलू उद्योग ने आवेदन में आवेदकों और समर्थकों के नामों सहित भारत में सभी प्रमुख उत्पादकों के नाम भी बताए हैं। कुल भारतीय उत्पादन के केवल शेष 11 प्रतिशत के लिए ही आवेदन में नाम नहीं बताए गए हैं क्योंकि ये इकाइयां बहुत छोटी और तितर-बितर हैं। घरेलू उद्योग से सभी उत्पादकों के नामों को देने की आशा नहीं की जा सकती है जबकि उससे उसकी स्वयं की स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और न ही उससे जाँच पर किसी भी तरह से प्रभाव पड़ेगा।

उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षों के अनुरोध**1. मै. जियांगसु के अनुरोध:**

39. मै. जियांगसु ने अनुरोध किया कि घरेलू उद्योग के आवेदन का अगोपनीय अंश बिल्कुल अधूरा है। घरेलू उद्योग ने रिकार्ड में कोई कारण बताए बिना अनेक सूचनाओं के गोपनीय होने का दावा किया है। इसके अलावा, मै. जियांगसु ने गोपनीयता के संबंध में घरेलू उद्योग की ओर से निम्नलिखित खामियों की ओर ध्यान दिलाया:

- i. **अगोपनीय आवेदन के क्रमांक नहीं लिखे गए:** दिनांक 9 दिसम्बर, 2013 की व्यापार सूचना सं. 1/2013 के अनुसार, आवेदन के अगोपनीय अंश को गोपनीय आवेदन की अनुकृति होना चाहिए। चूंकि आवेदन का अगोपनीय अंश क्रमांक के बिना है इसलिए उसे घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत गोपनीय आवेदन की सही अनुकृति नहीं कहा जा सकता है। हम प्राधिकारी का ध्यान उक्त व्यापार सूचना के संगत पैरा की ओर भी दिलाना चाहते हैं और प्राधिकारी के तत्काल संदर्भ के लिए उसे नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

‘पैरा 2 (iii): अगोपनीय अंश को गोपनीय अंश की अनुकृति होना चाहिए जिसमें गोपनीय सूचना गोपनीयता के दावे के आधार पर सूचीबद्ध या रिक्त छोड़ी गई (जहां सूचीबद्ध करना संभव न हो) और सारांशीकृत किया जाना चाहिए’

प्राधिकारी द्वारा जारी उक्त दिशानिर्देशों के मद्देनजर, आवेदन का अगोपनीय अंश गोपनीय अंश की अनुकृति होने से संबंधित अपेक्षा को पूरा करने में विफल रहा है।

- ii. **भारत में अन्य घरेलू उत्पादकों के नाम नहीं बताए गए:** घरेलू उद्योग ने ‘अन्य घरेलू उत्पादकों’ श्रेणी के नामों का प्रकटन नहीं किया है। यह देखा जा सकता है कि आम सुनवाई में घरेलू उद्योग के अनुरोधों के अनुसार, भारत में संबद्ध वस्तु के 25 से अधिक उत्पादक हैं। तथापि उन्होंने 11 से अधिक अन्य उत्पादकों की श्रेणी की सूचना नहीं दी है। यह भी देखा जाए कि इन अन्य उत्पादकों का उत्पादन कुल घरेलू उत्पादन का बड़ा हिस्सा 11 प्रतिशत है और ऐसा लगता है कि माननीय प्राधिकारी द्वारा उन्हें सूचित या सूचना भी नहीं दी गई है क्योंकि घरेलू उद्योग ने उन अन्य उत्पादकों के संपर्क के ब्योरे भी उपलब्ध नहीं कराए हैं।
- iii. घरेलू उद्योग ने खंड 2 के प्रश्न सं. 3 के उत्तर में प्रदत्त उत्पादन ब्योरो की तालिका में उनके द्वारा सूचीबद्ध अधिकांश घरेलू उत्पादकों के पूरे नाम और संपर्क संबंधी ब्योरे भी उपलब्ध नहीं कराए हैं। हम यह नहीं समझ पा रहे हैं कि किस उपबन्ध के अंतर्गत वे घरेलू उत्पादकों के नाम और संपर्क संबंधी ब्योरों को नहीं बताने के लिए प्राधिकृत किए गए हैं। यह महत्वपूर्ण सूचना है और माननीय प्राधिकारी को अवश्य बताई जानी चाहिए और उन घरेलू उत्पादकों को जाँच में उनके विचारों से अवगत कराने का अवसर भी दिया जाना चाहिए। ऐसे ब्योरों के नहीं होने पर, घरेलू उद्योग की स्थिति को सही नहीं माना जा सकता है।
- iv. **आईसीएल से मूल/अपरिष्कृत आयात आकड़ों की साफ्ट और हार्ड कॉपी:** घरेलू उद्योग ने आवेदन के साथ आईसीएल से उसके द्वारा प्राप्त किए गए मूल/अपरिष्कृत आयात आकड़ों की एक्सेल फाइल की साफ्ट कॉपी उपलब्ध नहीं कराई है और न ही उसने प्राधिकारी को इस आशय की सूचना दी है। प्राधिकारी और हमें यह सूचना नहीं दिए जाने से हम याचिका के साथ प्रदत्त याचिकाकर्ताओं द्वारा दिए गए आयात आकड़ों की सत्यता पर अपनी टिप्पणियां नहीं दे सकते हैं। यह अनुरोध किया जाता है कि घरेलू उद्योग का यह दायित्व है कि वह आईसीएल से प्राप्त अपरिष्कृत आयातआकड़ों को हमारे साथ-साथ सभी हितबद्ध पक्षों को उपलब्ध कराए और यह कि उसे 9.12.2013 की व्यापार सूचनासं.1/2013 के अनुसार गोपनीय नहीं रखा जा सकता है। उक्त व्यापार सूचना से संगत उद्धरणमाननीय प्राधिकारी के तत्काल संदर्भ के लिए नीचे दिए गए हैं:

‘अनुबंध 1 का 4(iv): गोपनीयता का दावा प्राधिकारी द्वारा वाणिज्यिक प्रतिबंधों के आधार पर स्वीकार नहीं किया जाएगा उदाहरण के लिए यदि सूचना सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध है और शुल्क आदि के भुगतान पर किसी पक्षकार द्वारा प्राप्त की जा सकती है। आईबीआईएस जैसे प्राइवेट स्रोत से ली गई सूचना/आकड़ों को गोपनीय नहीं माना जाएगा और उसे प्रस्तुत करने वाले पक्ष को उसे स्वीकार किए जाने से पहले उसके प्रकटन के लिए अनुमति पत्र प्रस्तुत करना चाहिए।(इस पर जोर दिया जाए)’

- v. इस प्रकार, प्राधिकारी द्वारा जारी किए गए स्पष्ट दिशानिर्देशों का देखते हुए, घरेलू उद्योग का दायित्व है कि वह अगोपनीय अंश के हिस्से के रूप में अपरिष्कृत आयात आकड़ों की एक प्रति उपलब्ध कराए। **और उसके प्रकटन के अभाव में, घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत आकड़ों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है।**
- vi. **चयनित आयात आकड़ों की साफ्ट प्रति :** घरेलू उद्योग ने अप्रैल 10- मार्च 11, अप्रैल 11- मार्च 12, अप्रैल 12- मार्च 13 और अक्टूबर 2012 से सितम्बर 2013 की अवधि के लिए चयनित आईसीएल आयात आकड़ों की एक्सेल फाइल की साफ्ट प्रति भी उपलब्ध नहीं कराई है। इस बात को समझना चाहिए कि अपरिष्कृत/मूल आईसीएल आयात आकड़े तथा चयनित आयात आकड़े हमारे लिए घरेलू उद्योग द्वारा उसके आवेदन में लिए गए आयात आकड़ों की सत्यता के संबंध में टिप्पणी करने के लिए आवश्यक हैं।
- vii. **स्टॉक और कर्मचारियों की संख्या:** याचिकाकर्ताओं ने स्टॉक की मात्रा और कर्मचारियों की संख्या के आकड़ों को भी गोपनीय रखा है। हम पुनः इस बात को समझ नहीं पा रहे कि उक्त सूचना को कैसे गोपनीय रखा जा सकता है।
- viii. **वार्षिक रिपोर्ट:** याचिकाकर्ताओं ने आवेदन के अगोपनीय अंश के साथ याचिकाकर्ताओं की वार्षिक रिपोर्ट की प्रतियों भी उपलब्ध नहीं कराई हैं और न ही उन्हें सार्वजनिक फाइल में रखा गया है। यह अनुरोध किया जाता है कि उसे अगोपनीय अंश के रूप में उपलब्ध कराया जाना आवश्यक है और उसे छिपाया नहीं जा सकता है। इस संबंध में, हम पुनः प्राधिकारी का ध्यान दिनांक 9 दिसम्बर, 2013 की व्यापार सूचना सं. 1 के पैरा 2 के उप-पैरा (i) पर दिलाना चाहते हैं जिसमें यह निर्धारित है कि घरेलू उद्योग के लिए हार्ड प्रतियों के साथ साफ्ट प्रतियों में गोपनीय अंश तथा अगोपनीय अंश दोनों को प्रस्तुत करना अपेक्षित है और प्राधिकारी के सहज संदर्भ के लिए उसे नीचे पुनः प्रस्तुत किया गया है:

'पैरा 2 (i): ... किसी गोपनीय अंकन के बिना प्रस्तुत सूचना को अगोपनीय माना जाएगा। दोनों अंशों की हार्ड प्रतियों के साथ-साथ साफ्ट प्रतियां प्रस्तुत की जानी चाहिए'

ix. उक्त से यह देखा जा सकता है कि चूंकि घरेलू उद्योग कानून के अंतर्गत यथा अपेक्षित अगोपनीय अंश को प्रस्तुत नहीं कर पाया है इसलिए उनके द्वारा प्रस्तुत सूचना पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और इसलिए इस आधार पर भी वर्तमान जाँच को समाप्त किया जाना चाहिए।

40. घरेलू उद्योग ने जाँच में भागीदारी करने वाले सभी निर्यातकों के लिए सामान्य विवरण दिया है। उन्होंने जियांगसू के उत्तर में किसी विशिष्ट कमी को नहीं बताया है। विशिष्ट टिप्पणियों के अभाव में, घरेलू उद्योग के अनुरोधों को जियांगसू द्वारा अस्वीकृत किए जाने का अनुरोध किया जाता है। इसके अलावा, जियांगसू ने अनुरोध किया है कि उसने अपने अगोपनीय उत्तर में परिशिष्ट 1, 2, 2क, 3, 4, 7, 8, 8क और 9 में सार्थक सारांश उपलब्ध कराया है और इन परिशिष्टों में सूचना की गोपनीयता का अनुमत सीमा तक दावा किया है।

41. ऐसे में चार घरेलू उत्पादक हैं जो वर्तमान जाँच में याचिकाकर्ता हैं और चारों घरेलू उत्पादकों में से किसी ने भी अपने लिए अलग से सूचना नहीं दी है और घरेलू उद्योग के लिए समग्र रूप से संयुक्त सूचना ही दी गई है। अतः यह अनुरोध किया गया है कि प्राधिकारी ऐसे किसी दावे की अनुमति दिए जाने से पहले घरेलू उद्योग के प्रत्येक घटक से अलग सूचना मांगें। इसके अलावा, यह कि घरेलू उद्योग ने अपने दावे के समर्थन में संगत उपबंधों का उल्लेख नहीं किया है जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के अनुरोधों में कोई सत्यता नहीं है और उन्हें अस्वीकार किया जाना चाहिए।

42. इसके अलावा, अलग-अलग निर्यातकों के लिए मात्रात्मक सूचना देना वाणिज्यिक रूप से अलाभकारी होगा और इससे उसके प्रतिस्पर्धियों को प्रतिस्पर्धी लाभ मिलेगा।

मै. इंडोरामा के अनुरोध

43. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित मुद्दों के संबंध में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है जिससे याचिका के संबंध में सार्थक टिप्पणी करने की प्रतिवादी की क्षमता में बाधा हुई है:

क. चीन जन. गण. में क्षमताओं के संबंध में सीसीएफआईआई से मेल की प्रति

ख. उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित सूचना

ग. लागत निर्धारण से संबंधित सूचना जो सूचीबद्ध रूप में दी जा सकती थी

घ. संक्षिप्त राइट-अप नीतियां, और

ङ. आवेदक घरेलू उत्पादकों की वार्षिक रिपोर्ट

44. प्राधिकारी को गोपनीयता के दावे का अवश्य मूल्यांकन करना चाहिए और उचित जाँच के बिना सूचना को गोपनीय नहीं मानना चाहिए। इस संबंध में स्टर्लाइट इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2003 (158) ई.एल.टी. 673 (एस.सी.) में माननीय उच्चतम न्यायालय का निर्णय प्रासंगिक है, जिसमें माननीय न्यायालय ने माना कि गोपनीयता स्वतः नहीं प्रदान की जाए और वह व्यापक जाँच पर आधारित होनी चाहिए।

45. मै. इंडोरामा ने विधिवत रूप से भरा हुआ निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर और निर्णायक समीक्षा प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है और केवल व्यवसायिक स्वामित्व की सूचना की गोपनीयता का दावा किया है जिसे प्राधिकारी ने गोपनीय प्रकृति का स्वीकार किया है। इसके अलावा, यह कि उसने प्राधिकारी की पूर्ववर्ती प्रक्रिया के अनुसार विभिन्न परिशिष्टों का सार्थक सारांश उपलब्ध कराया है।

46. मै. इंडोरामा ने घरेलू उद्योग के इस आरोप से इंकार किया है कि उसने प्राधिकारी द्वारा की गई अनेक जाँच में निर्यातों की समग्र संख्या को बताया है। अतः उसने प्राधिकारी से भागीदार निर्यातकों के निर्यात, उत्पादन न और क्षमता के प्रकटन के प्रयोजनार्थ मामला-वार आधार पर अपनाने के बजाय एक नीतिगत निर्णय लेने का अनुरोध किया है।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

47. सूचना की गोपनीयता के संबंध में पाटन-रोधी नियमावली के नियम-7 में निम्नानुसार व्यवस्था है:-

(1) नियम 6 के उपनियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उपनियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जांच की प्रक्रिया में नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किसी अन्य सूचना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट होने पर उस सूचना को गोपनीय मानेंगे और ऐसी सूचना देने वाले पक्षकार से स्पष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को ऐसी किसी सूचना का प्रकटन नहीं करेंगे।

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय अधिकारी पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले किसी पक्षकार की राय में उस सूचना का सारांश नहीं हो सकता है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात के कारण संबंधी विवरण प्रस्तुत करेगा कि सारांश करना संभव क्यों नहीं है।

(3) उप नियम (2) में किसी बात के होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध अनावश्यक है या सूचना देने वाला या तो सूचना को सार्वजनिक नहीं करना चाहता है या उसकी सामान्य रूप में या सारांश रूप में प्रकटन नहीं करना चाहता है तो वह ऐसी सूचना पर ध्यान नहीं दे सकते हैं।

48. प्राधिकारी ने अपनी संगत प्रक्रिया और नियमों के आलोक में हितबद्ध पक्षों के गोपनीयता के दावों की जाँच की है और नियम 6 (7) के अनुसार स्वयं को संतुष्ट करने के बाद विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत किए गए अनुरोधों/साक्ष्यों के अगोपनीय अंश को ही सार्वजनिक फाइल के रूप में निरीक्षण हेतु रखा है।

च. आयात आकड़ों की पूर्णता

उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए अनुरोध

49. मै. इंडोरामा ने अनुरोध किया है कि घरेलू उत्पादकों ने भारत में संबद्ध वस्तु के आयात आकड़ों का प्रकटन करते समय केवल परिष्कृत आकड़ों को प्रस्तुत किया है और न कि अपरिष्कृत आकड़ों को। अतः अब आयात आकड़ों की सत्यता का सत्यापन करना असंभव है।

50. घरेलू उत्पादकों ने एक प्राइवेट स्रोत: इमोरटल कंप्यूटर लैब प्रा. लि. से आयात आकड़ों को प्राप्त किया है। दिनांक 9 दिसम्बर, 2013 की व्यापार सूचना सं. 1/2013 के अनुसार अनुबंध 1 का 4(iv) में उल्लेख है कि: 'आईबीआईएस जैसे प्राइवेट स्रोत से ली गई सूचना/आकड़ों को गोपनीय नहीं माना जाएगा और उसे प्रस्तुत करने वाले पक्ष को उसे स्वीकार किए

जाने से पहले उसके प्रकटन के लिए अनुमति पत्र प्रस्तुत करना चाहिए।(इस पर जोर दिया जाए)।' अतः व्यापार सूचना सं. 1/2013 के अनुसार आवेदक घरेलू उत्पादकों को आयात आकड़ों का प्रकटन करना अपेक्षित है और अपरिष्कृत आयात आकड़ों पर गोपनीयता का दावा नहीं किया जा सकता है।

51. आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत आवेदन अधूरा है क्योंकि उसमें इस तथ्य के बावजूद 'ज्ञात निर्यातक' के रूप में इंडोरामा के नाम और पते को नहीं दिया गया है कि इंडोरामा ने मूल जॉच में भाग लिया है। परिणामस्वरूप, आवेदक घरेलू उत्पादक पाटनरोधी नियमावली के नियम 5 (3) के साथ पठित डब्ल्यूटीओ पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 5.3 में निर्धारित मानकों को पूरा करने में विफल हैं जिसमें प्राधिकारी के लिए किसी जॉच की शुरुआत करने से पहले आवेदक घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत याचिका की 'सटीकता और पर्याप्तता' की जाँच करना अपेक्षित है।

52. प्राधिकारी द्वारा जारी आवेदन प्रपत्र के अनुसार, घरेलू उद्योग के लिए भारत में कथित पाटित वस्तुओं के ज्ञात निर्यातकों के नामों और पतों के संबंध में पूरी सूचना देना अपेक्षित है (आवेदन प्रपत्र का भाग I, प्रश्न 7)।

छ. विविध अनुरोध

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

53. कथित सहयोगी निर्यातकों की भारत को निर्यात बिक्रियों की डीजी प्रणाली डाटा के साथ सुमेलित किया जाना चाहिए ताकि प्राधिकारी की संगत प्रक्रिया पर विचार करते हुए निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत आकड़ों की सत्यापन किया जा सके। प्राधिकारी ने चीन जन. गण. से ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड (सं. 14/02/2013-डीजीएडी दिनांक 19 नवम्बर, 2014) समेत अनेक मामलों में इसी नीति को अपनाया है।

54. केवल संबंधित उत्पाद के एचएस कोड अर्थात् 5402470 में सूचित संबद्ध वस्तु पर भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तु के रूप में विचार किया जाना चाहिए। अन्य एचएस कोडों में वर्णित संबद्ध उत्पाद को रिकार्ड में नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि एचएस कोड में वस्तुओं को स्वीकृत करने का एकमात्र प्रयोजन या तो प्राधिकारी द्वारा लगाए गए पाटनरोधी शुल्क से बचना है या सीमाशुल्क के भुगतान के प्रयोजनार्थ वस्तुओं का कम मूल्य आंकना है।

55. सामान्य मूल्य, क्षतिरहित कीमत आदि का परिकलन करने के लिए पीओआई की विनिमय दर को अपनाना पाटनरोधी प्राधिकारियों द्वारा अपनाई जाने वाली मानक प्रक्रिया है जो मजबूत आर्थिक और लेखांकन औचित्य और तर्क पर आधारित है। प्राधिकारी की मानक प्रक्रिया पर विचार करते हुए, घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात कीमत, सामान्य मूल्य आदि का परिकलन करने के लिए उसे अपनाया है। इसके अलावा हितबद्ध पक्षों ने उक्त नीति में किसी विधिक या तार्किक कमजोरी की ओर ध्यान नहीं दिलाया है।

56. भारत को संबद्ध वस्तु के संभावित पंधुच मूल्य की गणना भारत को चीन जन. गण. से और न कि कोरिया गणराज्य/ तुर्की से चीन जन. गण. को प्रभारणीय भाड़े को समायोजित करते हुए की गई है।

57. थाईलैंड, कोरिया गणराज्य, मलेशिया और चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फुली ड्रान यार्न के आयातों के विरुद्ध निर्णायक समीक्षा संगत समय में प्रचलित कानूनी स्थिति के अनुसार जाँच की स्वतः शुरुआत है। स्वतः जाँच शुरुआत के बाद प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग से यह सिद्ध करने के लिए आवश्यक सूचना उपलब्ध कराने के लिए कहा कि पाटन/क्षति की संभावना है। चूंकि उस समय इन स्रोतों से प्रचलित अंतर्राष्ट्रीय बाजार की कीमतें और बाजार की अन्य दशाओं में शुल्कों को जारी रखना आवश्यक नहीं था इसलिए जाँच समाप्त कर दी गई।

संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए अनुरोध

58. घरेलू उद्योग द्वारा अम.डॉ की विनिमय दर को 56.90 के स्तर पर अपनाया गया है। तथापि, आरबीआई के अनुसार अम. डॉ. की प्रचलित दर इस समय 62.24 रुपये है। यह भी अनुमान है कि रुपये की कीमत पुनः नहीं बढ़ेगी और आगे और कम हो सकती है। इसका अर्थ है कि इस समय भारत में आयातों की कीमत उससे काफी अधिक है जो वह जाँच अवधि के दौरान होती थी।

59. घरेलू उद्योग ने उस कीमत के आधार पर भारत को संबद्ध वस्तु के संभावित पंधुच मूल्य की गणना की है जिस पर उनका चीन जन. गण. से निर्यात हुआ है।

60. हितबद्ध पक्षों ने तर्क दिया है कि प्राधिकारी ने इस तथ्य के कारण दिनांक 16 अगस्त, 2012 की अंतिम जाँच परिणाम सं. 15/26/2010 के द्वारा थाइलैंड, कोरिया गणराज्य, मलेशिया और चीनी ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फुली ड्रान यार्न के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्कों की पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा को समाप्त कर दिया था कि घरेलू उद्योग स्वयं ही मूल शुल्कों को लागू रखने की अवधि को बढ़ाने का इच्छुक नहीं था। अतः, संबद्ध जाँच को भी समाप्त कर दिया जाना चाहिए क्योंकि घरेलू उद्योग को सर्वोच्च स्तर पर भी क्षति का वही स्तर झेलना पड़ रहा है जो वह पूर्ववर्ती पाटनरोधी जाँच में उठा रहा था और बदतर रूप में उसकी तुलना में काफी कम क्षति जो वह पूर्ववर्ती पाटनरोधी जाँच में उठा रहा था।

61. जाँच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में प्राधिकारी ने बताया कि उसने वियतनाम को निर्णायक समीक्षा के दायरे से बाहर रखा है क्योंकि जाँच अवधि के दौरान वियतनाम से फुली ड्रान यार्न से कोई निर्यात नहीं किया गया है। तथापि, निर्यातक यह नहीं समझ पा रहे हैं कि प्राधिकारी ने चीन जन. गण. के विरुद्ध जाँच को क्यों जारी रखा जबकि इन देशों से आयात काफी कम मात्रा में भारत में कुल मांग के केवल 0.02% रहे हैं।

62. प्राधिकारी अपने निर्यात आंकड़ों का मिलान डी जी पद्धति के आंकड़ों से कर सकते हैं ।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

63. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस के सौदावार आकड़ों और संबद्ध देशों से निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत उत्तरों के संदर्भ में आयात आकड़ों को सुमेलित किया है। प्राधिकारी ने यही प्रक्रिया वर्तमान अंतिम जाँच परिणामों में अपनाई है।

64. प्राधिकारी ने आयात आकड़ों की सत्यता के संबंध में विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए दावों को नोट करते हुए, संगत प्रक्रिया के अनुसार प्रकटन विवरण के पैराओं 24 और 25 में भी यथा निर्धारित विचाराधीन उत्पाद के विवरण के आधार पर प्राथमिक रूप से डीजीसीआईएंडएस के आकड़ों का विश्लेषण किया है।

65. प्राधिकारी ने जाँच की अवधि के लिए विनिमय दर पर विचार किया है और संगत प्रक्रिया के अनुसार उसे निर्धारित किया है। प्राधिकारी पाते हैं कि हितबद्ध पक्षों द्वारा ऐसा कोई मामला नहीं बताया गया है जो सुदूर रूप से भी यह सुझाता हो कि प्राधिकारी की संगत नीति किसी विधिक या तार्किक कमजोरी से ग्रस्त है।

ज. पाटन का आकलन – पद्धति और मापदंड

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

क. सामान्य मूल्य

i. चीन जन. गण. के लिए सामान्य मूल्य:

66. जियांगसु हेंगली कैमिकल फाइबर कं. लि., चीन ('मै. जियांगसु') ने अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी जियांगसु डेलीफाइबर कं. लि. जो संबंधित उत्पाद से जुड़ा है का प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत अधूरी सूचना के कारण जाँच में बाधा होती है और प्राधिकारी उनके और उनके संबंधित पक्षों द्वारा किए गए निर्यातों/घरेलू बिक्रियों की वास्तविक स्थिति का सत्यापन नहीं कर पाते हैं। तदनुसार, मै. जियांगसु द्वारा प्रस्तुत उत्तर को तत्काल अस्वीकार किया जाना चाहिए और प्राधिकारी की मानक प्रक्रिया पर विचार करते हुए जिसे उन्होंने मलेशिया, श्रीलंका, चीन और थाइलैंड के हाल के मामले (अंतिम जाँच परिणाम सं. 15/28/2015-डीजीएडी दिनांक 17 अगस्त, 2014) में अपनाया है, उन्हें अलग पाटन मार्जिन नहीं दिया जाना चाहिए।

67. थाई पालिएस्टर कं. लि., थाइलैंड ('मै. टीपीसी') ने अपने एक संबंधित पक्ष को संबंधित उत्पाद को बेचा परंतु उन्होंने उक्त संबंधित पक्ष का प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। मै. टीपीसी द्वारा प्रस्तुत अधूरी सूचना के कारण जाँच में बाधा होती है और प्राधिकारी उनके और उनके संबंधित पक्षों द्वारा किए गए निर्यातों/घरेलू बिक्रियों की वास्तविक स्थिति का सत्यापन नहीं कर पाते हैं। तदनुसार, मै. टीपीसी द्वारा प्रस्तुत उत्तर को तत्काल अस्वीकार किया जाना चाहिए और प्राधिकारी की मानक प्रक्रिया पर विचार करते हुए जिसे उन्होंने मलेशिया, श्रीलंका, चीन और थाइलैंड के हाल के मामले (संबंधित) में अपनाया है, उन्हें अलग पाटन मार्जिन नहीं दिया जाना चाहिए।

68. मै. इंडोरामा पालिएस्टर इंडस्ट्रीज पीसीएल, थाइलैंड ('मै. इंडोरामा') ने दावा किया कि उन्होंने संबंधित उत्पाद को अपने किसी संबंधित पक्ष को नहीं बेचा है। तथापि, वर्ष 2013 के लिए इंडोरामा वेंचर्स की वार्षिक रिपोर्ट में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि मै. इंडोरामा ने अपने एक संबद्ध पक्ष अर्थात् पीटी. इंडोरामा सिंथेटिक्स टीबीके ('पीटीआईआरएस') को संबंधित उत्पाद को बेचा है जिसके पास थाइलैंड में स्थित एक शाखा सहित अनेक बिक्री शाखाएं हैं। तदनुसार यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मै. इंडोरामा ने अपने संबंधित पक्ष अर्थात् पीटीआईआरएस का प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है और इस तथ्य को प्राधिकारी से छिपाया गया है। निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत अधूरी सूचना के कारण जाँच में बाधा होती है और प्राधिकारी उनके और उनके संबंधित पक्षों द्वारा किए गए निर्यातों/घरेलू बिक्रियों की वास्तविक स्थिति का सत्यापन नहीं कर पाते हैं। तदनुसार, मै. इंडोरामा द्वारा प्रस्तुत उत्तर को तत्काल अस्वीकार किया जाना चाहिए और प्राधिकारी की मानक प्रक्रिया पर विचार करते हुए उन्हें अलग पाटन मार्जिन भी नहीं दिया जाना चाहिए। मलेशिया, श्रीलंका, चीन और थाइलैंड के हाल के मामले (यथोक्त) में माननीय प्राधिकारी का निर्णय इस मामले पर भी पूर्णतः लागू होता है।

69. इसके अलावा, चूंकि चीन एक गैर-बाजार वाला देश है, इसलिए उस देश में संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य उस देश में प्रचलित कीमत के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता है और इसलिए उसका परिकलन किया जाना चाहिए।

70. किसी देश को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा तब तक प्रदान नहीं किया जा सकता है जब तक निर्यातक/कंपनी और उसका समूह समग्र रूप से कोई दावा न करें। वर्तमान मामले में, चीन के निर्यातकों द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार का कोई दावा नहीं किया गया है।

71. यदि निर्यातक द्वारा कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया जाता है तो चीन में सामान्य मूल्य को निम्न के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है (क) भारत में कीमत; और (ख) भारत में उत्पादन लागत जो बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्यय और लाभ को शामिल करते हुए विधिवत रूप से समायोजित हो। चीन में सामान्य मूल्य भारत में उत्पादन लागत को विधिवत रूप से समायोजित करके निर्धारित किया जाना चाहिए।

72. चीन में सामान्य मूल्य की गणना कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर विचार करते हुए और सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना, घरेलू उद्योग की सूचना सहित के अनुसार खपत मानकों और परिवर्तन लागत को अपनाते हुए की जा सकती है।

ii. थाइलैंड में सामान्य मूल्य :

73. केवल दो निर्यातकों अर्थात् मै. थाई पालिएस्टर कं. लि., थाइलैंड (मै. टीपीसी) और मै. इंडोरामा पालिएस्टर इंडस्ट्रीज पीसीएल, थाइलैंड (मै. इंडोरामा) ने प्रश्नावली का उत्तर दिया है। इन निर्यातकों ने अपने संबंधित पक्षों की प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। ऐसे पूरे उत्तर के अभाव में, इन निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तरों को प्राधिकारी की मानक प्रक्रिया पर विचार करते हुए स्वीकार नहीं किया जा सकता है और इसलिए, थाइलैंड के लिए सामान्य मूल्य उनके द्वारा प्रस्तुत अधूरी सूचना पर आधारित नहीं किया जा सकता है। अतः थाइलैंड के लिए सामान्य मूल्य की गणना भी कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत पर विचार करते हुए और सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना, घरेलू उद्योग की सूचना सहित के अनुसार खपत मानकों और परिवर्तन लागत को अपनाते हुए की जा सकती है।

74. घरेलू उद्योग ने उसके पास तर्कसंगत रूप से उपलब्ध निर्यात कीमत की गणना के संबंध में समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, पत्तन संभलाई, अंतर्देशीय मालभाड़ा, बिक्री कमीशन और बैंक प्रभारों की श्रेणी के अंतर्गत कटौतियों के लिए सभी साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं।

उत्पादकों/आयातकों/निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा किए गए अनुरोध

क. सामान्य मूल्य

75. घरेलू उत्पादकों ने थाइलैंड के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों और घरेलू उद्योग के सर्वोत्तम मानकों के आधार पर किया है। उन्होंने चीन जन. गण. के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य का प्रयोग थाइलैंड के लिए भी किया है जो त्रुटिपूर्ण है क्योंकि अधिनियम की धारा 9क, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 और डब्ल्यूटीओ एडीए के अनुच्छेद 2.2 में दिए गए संगत उपबंधों से असंगत है। परिणामस्वरूप, घरेलू उद्योग द्वारा इस प्रकार परिकलित सामान्य मूल्य एक अस्वीकार किया जाए।

76. कोई भी केवल निम्नलिखित परिस्थितियों में सामान्य मूल्य का परिकलन कर सकता है:

क. जहां निर्यातक देश के घरेलू बाजार में समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हुई हो; या

जब बाजार की किसी विशेष स्थिति या निर्यातक देश के घरेलू बाजार में बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों से उचित तुलना करना संभव न हो। (सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9क(1) का स्पष्टीकरण (ग)(ii))

77. घरेलू उत्पादकों ने कहीं भी यह साबित नहीं किया है कि उपरोक्त दोनों शर्तों में से किसी शर्त में सामान्य मूल्य का आकलन अनिवार्य नहीं किया गया है। संगत प्रावधानों में विनिर्दिष्ट दोनों शर्तों में सामान्य मूल्य के आकलन के लिए एक आधार के रूप में घरेलू बिक्री मूल्यों के संबंध में आंकड़ों की "अनुपलब्धता" शामिल नहीं है। इस प्रकार के आकलित सामान्य मूल्य का सहारा लेने के लिए आवेदन में दिए गए आधार गलत हैं।

78. घरेलू उत्पादकों ने संबद्ध वस्तुओं की लागत की गणना कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों के आधार पर की गई है लेकिन इसके लिए कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराए हैं। अतः ऐसी सूचना को याचिका के साथ प्रकट किए जाने की जरूरत है ताकि सामान्य मूल्य की गणना करने के लिए अपनाई गई कीमतों की यथातथ्यता प्रमाणित हो सके।

79. घरेलू उत्पादकों ने सामान्य मूल्य का आकलन करने के लिए उचित सिद्धांतों को नहीं अपनाया है। पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध-1 के नियम 4 में यह उल्लेख किया गया है कि प्रशासनिक, विक्रय और सामान्य लागतों के लिए धनराशियां और लाभ जांच के तहत निर्यातक अथवा उत्पादक द्वारा समान वस्तु के सामान्य व्यापार के दौरान उत्पादन और बिक्रियों से संबंधित वास्तविक आंकड़ों के आधार पर होंगे। पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध में कहीं भी यह नहीं किया गया है कि 'घरेलू उद्योग का अनुभव अथवा घरेलू उद्योग द्वारा कम की गई लागत को सामान्य मूल्य का आकलन करने में उपयोग में लाया गया। दूसरी ओर घरेलू उत्पादकों ने घरेलू उद्योग उत्पादकों की लागत के साथ इन्डोरामा के लिए सामान्य मूल्य की गणना के लिए अपेक्षित सभी संगत लागतों की बराबरी की है जबकि घरेलू उत्पादक और इन्डोरामा क्रमशः भारत और थाइलैंड में कार्यरत पूर्णतया भिन्न संस्थाएं हैं।

80. यहां तक कि चीन जन. गण. के लिए सामान्य मूल्य का आकलन, जिस थाइलैंड के लिए सामान्य मूल्य के रूप में प्रयोग किया गया है, पाटन रोधी नियमावली के अनुसार नहीं किया गया है। पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध-1 में नियम 7 और गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों के लिए सामान्य मूल्य की गणना के संबंध में है। उपरोक्त नियम 7 में यह उल्लेख किया गया है कि गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नलिखित के आधार पर किया जाना है :-

क. एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत और आकलित मूल्य; अथवा

ख. ऐसे किसी तीसरे देश से अन्य देशों, जिसमें भारत भी शामिल है, की कीमतें; अथवा

ग. जहां उपरोक्त विकल्प संभव नहीं है वहां सामान्य मूल्य का आकलन किसी अन्य तर्कसंगत आधार पर किया जाए, जिसमें समायोजन के बाद समान उत्पाद के लिए भारत में वास्तव में भुगतान की गई अथवा भुगतान की जाने वाली कीमत और एक तर्कसंगत लाभ मार्जिन भी शामिल है।

81. अतः दोनों अपेक्षाओं में (i) एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में प्रचलित कीमतों पर घरेलू उत्पादकों के अनुरोध, और (ii) ऐसे अनुरोध का प्राधिकारी द्वारा मूल्यांकन शामिल है। इन अपेक्षाओं में से कोई भी वर्तमान मामले में उपयुक्त नहीं है।

82. घरेलू उत्पादकों द्वारा पहले किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत अथवा आकलित मूल्य पर विचार किया जाना चाहिए और यदि यह विकल्प संभव नहीं हो तो ऐसे बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश से अन्य देशों के लिए तय कीमतों पर विचार किया जाए। केवल तभी जबकि ये दोनों ही विकल्प संभव नहीं हैं तो वे किसी अन्य तर्कसंगत आधार पर सामान्य मूल्य के आकलन का सहारा ले सकते हैं। तथापि, वर्तमान मामले में, घरेलू उद्योग ने पहले दो विकल्पों का प्रयोग नहीं किया है बल्कि "किसी अन्य तर्कसंगत आधार" पर सीधे ही सामान्य मूल्य का आकलन किया है। अतः उनके द्वारा आकलित सामान्य मूल्य अधिनियम की धारा 9क पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1, और विश्व व्यापार संगठन

(WTO) ए डी ए के अनुच्छेद 202 में निहित संगत प्रावधानों के अनुसार नहीं है। परिणामस्वरूप घरेलू उत्पादकों द्वारा अकलित ऐसा सामान्य मूल्य स्वीकार किया जाए।

ख. निर्यात मूल्य

83. आवेदक घरेलू उत्पादकों ने समुद्री माल-भाड़ा, पोत बीमा, पोर्ट हैंडलिंग, अंतर्देशीय माल-भाड़ा, बिक्री कमीशन तथा बैंक प्रभारों जैसे श्रेणियों के तहत की गई कटौतियों के लिए कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है। इसके अलावा, कुछेक समायोजन में भारी वृद्धि की गई है और अस्वीकार किए जाने हैं। बीमा के लिए पोत सी आई एफ मूल्य का सामान्यतः 110 प्रतिशत का 0.125 प्रतिशत है और यह कभी भी सी आई एफ के 0.5 प्रतिशत से अधिक नहीं गया।

84. चीन और थाइलैंड से समुद्री मालभाड़ा समर्थन में कोई साक्ष्य प्रदान किए बिना 50 यूएस डॉलर/ मी. टन किया गया है। समुद्री माल भाड़े के लिए समायोजन चीन जन. गण. और थाइलैंड, दोनों के लिए 50 यूएस डॉलर/ मी. टन का अनुमान लगाया गया है जबकि थाइलैंड (बैंकांक टर्मिनल) से भारत जवाहरलाल नेहरू पोर्ट टर्मिनल तक की दूरी 6030 कि.मी. है और चीन जन. गण. (ज़ेंजियांग टर्मिनल) से भारत (जवाहरलाल नेहरू पोर्ट टर्मिनल) तक की दूरी 8792 कि.मी.¹ है। दूरी में अंतर यह दर्शाता है कि किसी भी मामले में दोनों देशों के लिए समुद्री माल भाड़े के लिए एक समान दर नहीं अपनाई जा सकती।

85. मैसर्स जियांग्सू ने यह अनुरोध किया है कि वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग का तर्क परस्पर विरोधी है क्योंकि एक तरफ तो वे निर्यातकों के लिए अथवा क्षति के लिए कम आयात के कारण पाटन मार्जिन का निर्धारण न करने की बात करते हैं और वहीं दूसरी ओर घरेलू उद्योग यह दलील देता है कि :

क. संबद्ध देशों से कथित कम आयात (घरेलू उद्योग के लिखित अनुरोध का पैरा सं. 14-18) के कारण कम मुनाफा, बिक्री लागत, क्लोजिंग स्टॉक में वृद्धि, भारी पाटन मार्जिन के संदर्भ में घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

ख. संबद्ध देशों से कथित कम आयात के कारण कीमतों में कटौती और कम कीमत पर बिक्री हो रही है (घरेलू उद्योग के लिखित अनुरोध का पैरा 13)।

ग. संबद्ध देशों से कथित कम आयातों के आधार पर कीमत में कटौती, क्षति मार्जिन/ कम कीमत पर बिक्री होने की संभावना है (घरेलू उद्योग के लिखित अनुरोध का पैरा सं. 23-26)।

घ. संबद्ध देशों से कथित कम आयातों के आधार पर क्षति मार्जिन विश्लेषण की संभावना है (घरेलू उद्योग के लिखित अनुरोध का पैरा सं. 27-28)।

ङ. संबद्ध देशों से कथित कम आयातों के आधार पर मुनाफे और अन्य विकास मापदंडों पर प्रभाव पड़ने की संभावना है (घरेलू उद्योग के लिखित अनुरोध का पैरा सं. 29-30)।

86. अतः घरेलू उद्योग के अनुरोधों में उपरोक्त स्पष्ट अंतर विरोधों को देखते हुए घरेलू उद्योग के मामले को अस्वीकार किया जाना है जैसा कि चीन, मलेशिया, थाइलैंड और श्रीलंका से एम डी एफ बोर्ड के निर्णायक समीक्षा पाटन रोधी जांच की आयात से संबंधित मामले में किया गया है, जबकि माननीय प्राधिकारी ने निर्यातक के व्यक्तिगत पाटन मार्जिन के लिए दावे/ प्रत्युत्तर को उनके अनुरोधों में परस्पर विरोध होने के आधार पर अस्वीकार कर दिया था।

87. इसके अलावा, यह भी कहा जाता है कि यहां तक कि घरेलू उद्योग द्वारा उल्लिखित पी ओ वाई मामले में, प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन निर्धारित किया था और इसीलिए घरेलू उद्योग के अनुरोधों में कोई दम नहीं है।

88. अतः उपरोक्त अंतर-विरोध को देखते हुए, मैसर्स जियांग्सू ने माननीय प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि क्षति मार्जिन के निर्धारण, पाटन मार्जिन की संभावना और क्षति मार्जिन की संभावना के संबंध में घरेलू उद्योग के अनुरोध परिवर्तन न किया जाए और वर्तमान जांच को समाप्त किया जाए।

89. इसके अतिरिक्त, मैसर्स जियांग्सू ने यह तर्क दिया है कि उसने पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए निर्यातक प्रश्नावली में सभी विवरण और निर्यातक प्रश्नावली के भाग-II में यथा अपेक्षित सूचना प्रस्तुत कर दी है। उसने माननीय

¹ दूरी के <http://www.searates.com/reference/portdistance/> से लिया गया है (साइट का अंतिम अवलोकन दिनांक 19 फरवरी, 2015 को किया गया था)

प्राधिकारी से पुनः यह अनुरोध किया है कि वह पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए उसके आंकड़ों का सत्यापन करने के लिए दौरा करे और डीजी प्रणाली आंकड़ों के आधार पर उसके द्वारा प्रस्तुत निर्यात से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण करे।

90. इसके अलावा जियांग्सू ने घरेलू उद्योग के इस तर्क का भी विरोध किया है कि उसने अपनी संगत कंपनी मैसर्स जियांग्सू डेली फाइबर कं., लिमि. का प्रत्युत्तर प्रस्तुत नहीं किया है, जिसका आधार पर यह है कि संगत कंपनी ने जांच की अवधि में भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया है। यह उसने अनुरोध किया है कि वर्तमान जांच में घरेलू उद्योग का अनुरोध अनुचित है और बहकाने वाला है क्योंकि चीन, मलेशिया, थाइलैंड और श्रीलंका से एम डी एफ बोर्ड के मामले में पाटन रोधी जांच की निर्णायक समीक्षा के मामले में तथ्य बिल्कुल अलग थे।

91. उस मामले में, किसी एक कंपनी द्वारा निर्मित किया गया उत्पाद दूसरी कंपनी द्वारा निर्यात किया जाता है और निर्यात किए गए सामान की समूची मूल्य श्रृंखला के समस्त व्यय वहां उपलब्ध नहीं थे। इसके अलावा, निर्यातक के अनुरोधों में भी परस्पर विरोध थे। यही कारण है कि माननीय प्राधिकारी ने उनके व्यक्तिगत पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया था। जबकि हमने अपनी प्रश्नावली उत्तर में स्पष्ट तौर पर यह बता दिया था कि हमारी संगत कंपनी ने जांच की अवधि में भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया था और हमारे अनुरोधों में कोई अंतर विरोध नहीं है। वास्तव में ऐसा पहली बार हुआ है कि घरेलू उद्योग में पहली बार करीब 17 माह का इतना अधिक समय बीत जाने के बाद हमारी संगत कंपनी के प्रत्युत्तर पर प्रश्न उठाया है जो, उचित नहीं है। अतः घरेलू उद्योग के अनुरोधों में कोई दम नहीं है और उन्हें अस्वीकार किए जाने की जरूरत है।

92. पाटन मार्जिन की गणना के संबंध में इन्डोरामा ने घरेलू उद्योग के अनुरोध का विरोध किया है कि क्षति और पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए कम मात्रा को विचार में शामिल नहीं किया जाए। इन्डोरामा ने इसके समर्थन में निम्नलिखित जांचों का उल्लेख किया है :

क. चीन जन. गण., मलेशिया, इंडोनेशिया, ताइवान, कोरिया और थाइलैंड के मूल के अथवा कहां से निर्यातित नाइलोन फिलामेंट यार्न के संबंध में पाटन रोधी जांच की निर्णायक समीक्षा (अंतिम जांच परिणाम दिनांक 19 नवंबर, 2011 को जारी) : इंडोनेशिया (पी टी सुशील इन्दा सिंथेटिक फाइबर इंडस्ट्रीज) से सहयोगी निर्यातकों ने जांच की अवधि के दौरान काफी ऊंची कीमतों पर भारत को केवल तीन कंसाइनमेंट निर्यात किए थे, जिससे उन्हें इंडोनेशिया में सबसे कम पाटन मार्जिन मिला।

ख. कोरिया के मूल के अथवा कहां से निर्यातित फिनोल के संबंध में पाटन रोधी जांच की मध्यावधिक समीक्षा (अंतिम जांच परिणाम दिनांक 23 फरवरी, 2012 से जारी) : कोरिया से सहयोगी निर्यातकों (कुम्हो पी एंड बी कैमिकल्स इंक) ने जांच की अवधि के दौरान भारत को केवल दो कंसाइनमेंट (एक इंसाइनमेंट हुमेड कं. कोरिया और दूसरा कंसाइनमेंट केमोइल कं. कोरिया के माध्यम से) का काफी ऊंची कीमतों पर निर्यात किया था, जिससे उसे एक के लिए नकारात्मक पाटन मार्जिन और दूसरे के लिए 0.9 प्रतिशत पाटन मार्जिन मिला था।

ग. यूरोपीय संघ, सिंगापुर और साउथ अफ्रीका के मूल की अथवा कहां से निर्यातित फिनोल के संबंध में पाटन रोधी जांच की निर्णायक समीक्षा (अंतिम जांच परिणाम दिनांक 4 अगस्त, 2008 को जारी) : सिंगापुर से सहयोगी निर्यातक (मित्सुई एंड कं. लिमि. (एशिया पैसेफिक प्रा. लिमि.)) ने जांच की अवधि के दौरान भारत को केवल दो कंसाइनमेंट काफी ऊंची कीमतों पर निर्यात किए थे जिसके कारण पाटन मार्जिन का नकारात्मक आकलन हुआ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

क. सामान्य मान

1. चीन जन. गण. से उत्पादक/ निर्यातक मैसर्स जियांग्सू हेंगली कैमिकल्स फाइबर कं. लिमि. चीन ("मैसर्स जियांग्सू"), के लिए सामान्य मूल्य :

93. मैसर्स जियांग्सू के निर्यातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर भाग-I और II दाखिल किया है और एम ई टी का दावा नहीं किया है। प्राधिकारी ने यह पाया कि मैसर्स जियांग्सू डेली फाइबर कं. लिमि. जो मैसर्स जियांग्सू की एक पूर्णतः स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है, ने जांच की अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया है।

94. इस तथ्य को देखते हुए कि मैसर्स जियांग्सू, जो संबद्ध वस्तुओं का उत्पादक/ निर्यातक है, ने सीधे निर्यात किया है और एम ई टी का दावा नहीं किया है, प्राधिकारी ने प्रमुख कच्ची सामग्रियों की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को अपनाकर, घरेलू उद्योग को हासिल सर्वोत्तम खपत मानकों, घरेलू उद्योग के सबसे कम एन आई पी वाले संयंत्र द्वारा व्यय की गई उपयोग व खर्च की लागत को अपनाकर तथा अपनी प्रचलित प्रक्रिया के अनुसार आकलित लागत पर एक सामान्य लाभ प्रदान करने उत्पादक/ निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य का हवाला दिया है। तदनुसार, चीन जन. गण. के संबद्ध वस्तुओं का सामान्य मूल्य *** यूएस डॉलर/ मी. टन माना है।

95. चीन जन. गण. में असहयोगी/ अवशिष्ट उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए, प्राधिकारी ने मैसर्स जियांग्सू जैसे सहयोगी निर्यातक सहित चीन जन. गण. में सभी उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए नियमों के अनुसार उपरोक्त *** यूएस डॉलर/ मी. टन सामान्य मूल्य आकलन को अपनाया है।

i. थाइलैंड से उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य

• **मैसर्स इंडोरामा पोलिसटर इंडस्ट्रीज पी सी एल, थाइलैंड के लिए ("मैसर्स इंडोरामा") के लिए सामान्य मूल्य :**

96. मैसर्स इंडोरामा के निर्णायक समीक्षा के संबंध में प्रश्नावली उत्तर और उत्तर का भाग-II दाखिल किया है। प्राधिकारी ने निर्यातक के परिसर में प्रश्नावली में दाखिल आंकड़ों की स्थल पर पुष्टि की और घरेलू बिक्रियों, उत्पादन की लागत, कारखाना बाह्य निर्यात मूल्यों तथा उत्पादन प्रक्रिया से संबंधित अन्य पहलुओं इत्यादि के संबंध में आंकड़ों की पुष्टि की। विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न ग्रेड की भारित औसतन लागत का मूल्यांकन वित्तीय रिकार्ड के आधार पर जी ए ए पी के अनुसार किया है।

97. प्राधिकारी ने महत्वपूर्ण मात्रा परीक्षण और साथ ही सामान्य व्यावसायिक परीक्षण (80:20 परीक्षण) का प्रयोग करके घरेलू बिक्रियों के संबंध में किए गए कई समायोजन दावों की पुष्टि की। पैकिंग प्रभारों, कमीशन, अंतर्देशीय परिवहन भाड़े, ऋण लागत तथा बीमा के संबंध में क्रमशः *** यूएस डॉलर/ मी. टन, *** यूएस डॉलर/ मी. टन, *** यूएस डॉलर/ मी. टन, *** यूएस डॉलर/ मी. टन और *** यूएस डॉलर/ मी. टन तक समायोजन की अनुमति है। तदनुसार, प्राधिकारी ने कारखाना बाह्य सामान्य मूल्य *** यूएस डॉलर/ मी. टन माना है

• **थाई पोलियस्टर कं. लिमि., थाइलैंड ("मैसर्स टी पी सी") के लिए सामान्य मूल्य :**

98. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के एक उत्पादक मैसर्स टी पी सी को आंकड़ों के सत्यापन के बारे में दिनांक 27.10.2015 को एक ई-मेल भेजा था। तथापि, मैसर्स टी पी सी से प्राधिकारी को कोई भी उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था। प्राधिकारी ने दिनांक 30.01.2015 और 07.08.2015 को भी मैसर्स टी पी सी को क्रमशः 15.02.2015 और 20.08.2015 को सार्वजनिक सुनवाई के संबंध में ई-मेल भेजा था। लेकिन मैसर्स टी पी सी से न तो कोई उत्तर प्राप्त हुआ है न ही मौखिक सुनवाई में उपस्थित हुए और न ही जांच की अवधि के दौरान, जिसमें प्रकटीकरण विवरण का प्रत्युत्तर दाखिल करने की अवस्था शामिल है, कोई अनुरोध किया। इसके अलावा यह भी नोट किया गया था कि मैसर्स टी पी सी ने मैसर्स ग्लोबल ट्रेड वेल प्रा. लिमि., सिंगापुर को जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया था। प्रश्नावली उत्तर मैसर्स टी पी सी द्वारा दाखिल किया गया था न कि मैसर्स ग्लोबल ट्रेड वेल, सिंगापुर द्वारा। इस प्रकार मूल्य श्रृंखला की अधूरी और अपुष्ट जानकारी के कारण प्राधिकारी निर्यातक द्वारा की गई निर्यात बिक्रियों की तथ्यपरक स्थिति की पुष्टि नहीं कर पाया। अतः प्राधिकारी ने अपनी प्रक्रिया के अनुसार मैसर्स टी पी सी के संबंध में व्यक्तिगत पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया और अवशिष्ट श्रेणी के लिए निर्धारित पाटन मार्जिन को अपनाया।

• **थाइलैंड के अवशिष्ट/ असहयोगी उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य :**

99. थाइलैंड के सभी अवशिष्ट/ असहयोगी उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातक मैसर्स इंडोरामा के औसतन घरेलू बिक्री मूल्य का हवाला दिया है, जिसमें इनके संबंध में कोई समायोजन नहीं किया है। सामान्य मूल्य को *** यूएस डॉलर के रूप में दर्शाया है।

ख. कारखाना बाह्य निर्यात मूल्य**i. चीन, जन. गण. से उत्पादक/निर्यातक मैसर्स जियांग्सू के लिए निर्यात कीमत :**

100. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के साथ-साथ संबद्ध वस्तुओं के उत्पादक/निर्यातक द्वारा हाल ही में निर्दिष्ट प्राधिकारी की चीन, मलेशिया, थाइलैंड और श्रीलंका से एम डी एफ बोर्ड के मामले में पाटन रोधी जांच की निर्णायक समीक्षा (अंतिम जांच परिणाम फाइल सं. 15/28/2013 – डी जी ए डी दिनांक 17 अगस्त, 2015) के आलोक में मैसर्स जियांग्सू द्वारा प्रश्नावली उत्तर दाखिल नहीं किए जाने के संबंध में किए गए अनुरोधों को नोट किया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस मामले में तथ्य एम डी एफ मामले से अलग हैं। इस मामले में उत्पादक/निर्यातक की सहायक कंपनी ने जांच की अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात नहीं किया है और इसीलिए समग्र मूल्य श्रृंखला का मूल्यांकन करने के लिए कोई बाधा उत्पन्न करने का प्रश्न नहीं उठता।

101. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मैसर्स जियांग्सू के जांच की अवधि के दौरान भारत को केवल *** मी. टन संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है। प्राधिकारी ने आयात के साक्ष्य के साथ सह संबद्ध स्थापित करके सी आई एफ निर्यात कीमत, अर्थात् *** यूएस डॉलर/ मी. टन का हवाला देते हुए और उत्पादक/निर्यातक द्वारा दाखिल प्रत्युत्तर/साक्ष्य के अनुसार विदेशी माल भाड़े, बैंक प्रभारों, ऋण लागत, अंतर्देशीय माल भाड़ा एवं पोर्ट हैंडलिंग चार्ज को क्रमशः *** यूएस डॉलर/ मी. टन, *** यूएस डॉलर/ मी. टन, *** यूएस डॉलर/ मी. टन और *** यूएस डॉलर/ मी. टन तक समायोजित करने की अनुमति प्रदान करके और आयात के आंकड़ों के साथ सह-संबंध स्थापित करके यह नोट करते हैं कि निकल कारखाना बाह्य निर्यात मूल्य *** यूएस डॉलर/ मी. टन है और तदनुसार पाटन मार्जिन कम किया गया है तथापि, निर्यातों की मात्रा काफी कम है और यह तर्कसंगत नहीं मानी गई है तथा इसीलिए इसे व्यक्तिगत पाटन मार्जिन के मूल्यांकन के लिए नहीं अपनाया गया है।

ii. थाइलैंड के उत्पादकों/निर्यातक के लिए निर्यात कीमत**• मैसर्स इंडोरामा के लिए निर्यात :**

102. प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा और संबद्ध वस्तुओं के उत्पादक/निर्यातक द्वारा निर्दिष्ट प्राधिकारी के हाल ही के मामले, चीन, मलेशिया, थाइलैंड और श्रीलंका से एम डी एफ बोर्ड के मामले में पाटन रोधी जांच की निर्णायक समीक्षा (अंतिम जांच परिणाम फाइल सं. 15/28/2013 – डी जी ए डी, दिनांक 17 अगस्त, 2015 द्वारा मामले के आलोक में प्रश्नावली उत्तर दाखिल करने के संबंध में किए गए अनुरोधों को नोट करते हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि इस मामले में तथ्य एम डी एफ मामले से अलग हो। प्राधिकारी ने वास्तव में निर्यातक के आंकड़ों की स्थल पर जाकर पुष्टि की थी, जहां पर कि जांच की अवधि के दौरान मैसर्स ट्रंडोरामा के संगत पक्षकार अर्थात् मैसर्स पीटीआईआरएस के विचाराधीन उत्पादों की कोई बिक्री नहीं पाई गई।

103. मैसर्स इंडोरामा की सी आई एफ निर्यात कीमत *** यू एस डॉलर/ मी. टन निर्धारित की गई है। मैसर्स इंडोरामा के लिए कारखाना बाह्य निर्यात कीमत की गणना करने के लिए प्राधिकारी ने अंतर्देशीय परिवहन भाड़ा, समुद्री माल भाड़े, बीमा, पोर्ट हैंडलिंग प्रभारों, कमीशन, ऋण लागत, बैंक प्रभारों तथा शुल्क वापसी को क्रमशः *** यू एस डॉलर/ मी. टन, *** यू एस डॉलर/ मी. टन, *** यू एस डॉलर/ मी. टन, *** यू एस डॉलर/ मी. टन, *** यू एस डॉलर/ मी. टन और *** यू एस डॉलर/ मी. टन तक समायोजन पर विचार किया है। कारखाना बाह्य कीमत का निर्धारण *** यू एस डॉलर/ मी. टन के रूप में किया गया है और तदनुसार, पाटन मार्जिन को *** यू एस डॉलर/ मी. टन (0 – 10 प्रतिशत) के रूप में माना गया है।

• मैसर्स थाई पोलिस्टर कं. लिमि., थाइलैंड के लिए ("टी पी सी") के लिए निर्यात कीमत

- 104. प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के एक उत्पादक मैसर्स टी पी सी को आंकड़ों के सत्यापन के बारे में दिनांक 27.10.2015 को एक ई-मेल भेजा था। तथापि, मैसर्स टी पी सी से प्राधिकारी को कोई भी उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था। प्राधिकारी ने दिनांक 30.01.2015 और 07.08.2015 को भी मैसर्स टी पी सी को क्रमशः 15.02.2015 और 20.08.2015 को सार्वजनिक सुनवाई के संबंध में ई-मेल भेजा था। लेकिन मैसर्स टी पी सी से न तो कोई उत्तर प्राप्त हुआ है न ही मौखिक सुनवाई में उपस्थित हुए और न ही जांच की अवधि के दौरान, जिसमें प्रकटीकरण

विवरण का प्रत्युत्तर दाखिल करने की अवस्था शामिल है, कोई अनुरोध किया। इसके अलावा यह भी नोट किया गया था कि मैसर्स टी पी सी ने मैसर्स ग्लोबल ट्रेड वेल प्रा. लिमि., सिंगापुर को जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया था। प्रश्नावली उत्तर मैसर्स टी पी सी द्वारा दाखिल किया गया था न कि मैसर्स ग्लोबल ट्रेड वेल, सिंगापुर द्वारा। इस प्रकार मूल्य श्रृंखला की अधूरी और अपुष्ट जानकारी के कारण प्राधिकारी निर्यातक द्वारा की गई निर्यात बिक्रियों की तथ्यपरक स्थिति की पुष्टि नहीं कर पाया। अतः प्राधिकारी ने अपनी प्रक्रिया के अनुसार मैसर्स टी पी सी के संबंध में व्यक्तिगत कारखाना बाह्य निर्यात कीमत का निर्धारण नहीं किया।

• **थाइलैंड के अवशिष्ट/ असहयोगी/ उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत :**

105. मैसर्स टी पी सी सहित थाइलैंड के सभी अवशिष्ट/ असहयोगी उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए कारखाना बाह्य निर्यात कीमत के लिए प्राधिकारी ने अंतर्देशीय परिवहन भाड़े, समुद्री माल भाड़े, बीमा, पोर्ट हैंडलिंग प्रभारों, कमीशन, और बैंक प्रभारों का क्रमशः *** यू एस डॉलर/ मी. टन, *** यू एस डॉलर/ मी. टन, *** यू एस डॉलर/ मी. टन, *** यू एस डॉलर/ मी. टन, *** यू एस डॉलर/ मी. टन और *** यू एस डॉलर/ मी. टन तक समायोजन करके मैसर्स इंडोरामा की भारत औसत सी आई एफ निर्यात कीमत और ऐसे मामलों में प्राधिकारी की संगत प्रक्रिया के अनुसार समायोजित *** यू एस डॉलर/ मी. टन का उल्लेख किया है, जैसा कि याचिकाकर्ता ने दावा किया था। ऐसे उत्पादकों/ निर्यातकों के लिए भारत औसत फैक्ट्री बाह्य निर्यात कीमत तदनुसार *** यू एस डॉलर/ मी. टन, आती है। तदनुसार, पाटन मार्जिन *** यू एस डॉलर/ मी. टन (15 – 25 प्रतिशत) के रूप में विचार किया गया है।

106. जांच अवधि के दौरान पाटन मार्जिन नीचे तालिका में दिया गया है :

क्र.सं.	उत्पादक/ निर्यातक	सामान्य मूल्य (अम.डा./मी.)	कारखानागत निर्यात कीमत (अम.डा./मी)	पाटन मार्जिन (अम.डा./मी.ट.)	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज %
1.	मै. इंडोरामा पालिएस्टर इंडस्ट्रीज, थाइलैंड	***	***	***	***	0-10%
2.	थाइलैंड से अन्य उत्पादक/निर्यातक	***	***	***	***	15-25%
3.	मै. जियांगशू हेंगली कैमिकल फाइबर कं. लि., चीन	***	***	न्यूनतम	न्यूनतम	न्यूनतम
4.	चीन से अन्य उत्पादक/निर्यातक	***	***	न्यूनतम	न्यूनतम	न्यूनतम

- प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान चीन से मैसर्स जियांगशू और अन्य उत्पादकों/निर्यातकों ने भारत को कोई निर्यात नहीं किया है। इसलिए चीन से उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा जांच अवधि के बाद एक वर्ष के दौरान तृतीय देश के निर्यातों के आधार पर संभावित पाटन मार्जिन नीचे तालिका में दिया गया है :

क्र.सं.	उत्पादक/ निर्यातक	सामान्य मूल्य (अम.डा./मी.ट.)	कारखानागत निर्यात कीमत (अम.डा./मी.ट.)	पाटन मार्जिन (अम.डा./मी.ट.)	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज %
1.	मै. जियांगशू हेंगली कैमिकल फाइबर कं. लि., चीन	***	***	***	***	0-10%
2.	चीन से अन्य उत्पादक/निर्यातक **	***	***	***	***	10-20%

* निर्यातक के प्रश्नावली के उत्तरों के अनुसार.

** वर्ल्ड ट्रेड एटलस के आंकड़ों के अनुसार.

I. क्षति के निर्धारण और क्षति की जांच के लिए कार्य प्रणाली और अस्थायी संबंध**घरेलू उद्योग के अनुरोध**

107. घरेलू उद्योग ने क्षति और अस्थायी संबंध के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किया है:

- i. लाभ, नकदी लेन देन, माल सूची और क्षमता उपयोग के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में वर्तमान जांच की अवधि में गिरावट आई है।
- ii. विचाराधीन उत्पाद की मांग में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि दर्शाई गई है। अतः मांग में कमी का ऐसी कोई संभव नहीं है, जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।
- iii. चूंकि विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत की पद्धति में कोई बदलाव नहीं आया है, इसलिए खपत की पद्धति में बदलाव होने से घरेलू उद्योग को क्षति की संभावना नहीं है।
- iv. व्यापार प्रतिबंध की भी कोई प्रथा नहीं है, जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो।
- v. उत्पाद के उत्पादन की प्रौद्योगिकी में न तो कोई बदलाव आया है और न ही निकट भविष्य में किसी बदलाव की संभावना है। अतः प्रौद्योगिकी में विकास क्षति का कोई कारण नहीं है।
- vi. घरेलू उद्योग की उत्पादकता समग्र क्षति अवधि के दौरान लगभग एक समान स्तर पर रही है। अतः उत्पादकता क्षति का कोई कारण नहीं है।
- vii. पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन नकारात्मक है। तथापि, यह निर्णायक समीक्षा होने के कारण, भारत के लिए प्रस्तुत की गई कीमतें इस तथ्य पर विचार करके विश्वसनीय नहीं मानी जा सकती कि केवल 27 मीट्रिक टन की नगण्य मात्रा में जांच की अवधि के दौरान भारत को निर्यात किया गया है।

उत्पादकों/ निर्यातकों/ आयातकों और अन्य इच्छुक पक्षकारों द्वारा अनुरोध

108. मैसर्स इंडोरामा पोलिस्टर इंडस्ट्रीज पी सी एल ("इंडोरामा") ने निम्नलिखित अनुरोध किया है :

क. इंडोनेशिया, मलेशिया, कोरिया जन. गण. और ताइवान के मूल के अलावा वहां से निर्यातित पूर्णतः तैयार यार्न के आयातों के लिए पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा को समाप्त करना

निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 16 अगस्त, 2012 के अंतिम जांच परिणाम सं. 15/26/2010 (इसके बाद से इसे "पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच भी कहा गया है") के तहत इंडोनेशिया, कोरिया जन. गण., मलेशिया और चीन ताइपेई के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पूर्णतः तैयार यार्न के आयातों के लिए पाटन रोधी शुल्कों की पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा को इस तथ्य के कारण समाप्त किया था कि घरेलू उद्योग स्वयं ही मूल शुल्कों को लगाने के लिए अवधि को बढ़ाने के लिए इच्छुक नहीं था। मैसर्स वेलनॉन पोलीमर्स लिमिटेड, मैसर्स जे बी एफ इंडस्ट्रीज लिमि., मैसर्स गार्डन सिल्क मिल्स लिमि. और मैसर्स रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमि. नामक चार उत्पादकों की ओर से एसोसिएशन ऑफ सिंथेटिक फाइबर इंडस्ट्री द्वारा पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में याचिका दाखिल की गई थी।

इंडोनेशिया, कोरिया, मलेशिया और ताइवान के संबंध में संबद्ध पाटन रोधी जांच और पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में क्षति के संकेतकों की तुलना से यह पता चलता है कि पूर्ववर्ती और संबद्ध पाटन रोधी जांच में घरेलू उद्योग के कई क्षति संकेतक एक समान प्रवृत्ति का अनुसरण करते हैं और इसीलिए वर्तमान निर्णायक समीक्षा को समाप्त किया जाना चाहिए।

पूर्ववर्ती और संबद्ध पाटन रोधी जांच में क्षति के मापदंडों का सार निम्नलिखित तरीके से दिया गया है:

- (i) पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में उत्पादन 2007-08 में 85631 मीट्रिक टन से बढ़कर 2008-09 में 86599 मीट्रिक टन, 2009-10 में 109727 मीट्रिक टन और जांच की अवधि में 158783 मीट्रिक टन हुआ है। संबद्ध पाटन रोधी जांच में उत्पादन 2010-11 में 182966 मीट्रिक टन से बढ़कर 2011-12 में 204803 मीट्रिक टन, 2012-13 में 224917 मीट्रिक टन और जांच की अवधि में 245638 मीट्रिक टन हुआ है।

(ii) पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में घरेलू उद्योग की बिक्री मांग के प्रतिशत के रूप में 2007-08 में 42 प्रतिशत, 2008-09 में 43 प्रतिशत, 2009-10 में 47 प्रतिशत रहा और जांच की अवधि में मामूली वृद्धि होकर 52 प्रतिशत रहा। संबद्ध पाटन रोधी जांच में घरेलू उद्योग की मांग प्रतिशत के रूप बिक्री में भी इसी प्रकार की प्रवृत्ति रही अर्थात् यह 2010-11 में 46 प्रतिशत, 2011-12 में 48 प्रतिशत, 2012-13 में 50 प्रतिशत और जांच की अवधि में 51 प्रतिशत पर रही।

(iii) पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में, आयातों में मामूली वृद्धि हुई जो 2007'08 में 396 मी. ट., 2008-09 में 379 मी. ट., 2009-10 में 1438 मी. ट. और जांच की अवधि में 2365 मी. ट. रही। संबद्ध पाटन रोधी जांच की अवधि में 96 मी. ट. हो गया।

(ii) पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में संबद्ध देशों से आयात कुल मांग प्रतिशतता के रूप में 200'-08 में 0.2 प्रतिशत से मामूली बढ़कर जांच की अवधि में 0.84 प्रतिशत तक आ गया। संबद्ध पाटन रोधी जांच में संबद्ध देशों से आयात की कुल मांग प्रतिशत 2010-11 में 0.2 प्रतिशत से बढ़कर जांच की अवधि में 0.02 प्रतिशत तक आया।

(v) पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में हानियां 2007-08 में 100 के सूचकांक स्थान से बढ़कर जांच की अवधि में 545 सूचकांक स्थान पर आ गई। संबद्ध पाटन रोधी जांच में घरेलू उद्योग मुनाफे में रहा, यद्यपि मुनाफा 2010-11 में 100 के सूचकांक से घटकर जांच की अवधि में 26 सूचकांक तक आ गई।

109. पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच और संबद्ध पाटन रोधी जांच में प्रमुख क्षति मापदंडों से संबंधित आंकड़ों की तुलना को निम्नलिखित सारणी के माध्यम से स्पष्ट किया गया है :

विवरण	पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में प्रवृत्ति	संबद्ध जांचमें प्रवृत्ति
मांग % के रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री	पूर्ववर्ती पाटनरोधी जांच में शेयर कम था	पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच की तुलना में संबद्ध जांच में शेयर अधिक है
आयात	497% की वृद्धि	83% की गिरावट
लाभ/ हानियां	हानियों में 445% तक वृद्धि	लाभ में 74% तक की गिरावट
मांग के % के रूप में आयात	0.2% से 0.84% तक की वृद्धि	0.2% से 0.02% तक की गिरावट

110. समग्र विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग संबद्ध जांच की बजाय पूर्ववर्ती पाटन रोधी जांच में अधिक खराब स्थिति में प्रचालित हो रहा था। जबकि पूर्ववर्ती जांच समाप्त कर दी गई थी फिर भी वर्तमान जांच जारी है।

विवरण	मूल जांच में जांच की अवधि (अक्टूबर, 06 – सितंबर, 07)	निर्णायक समीक्षा में जांच की अवधि (अक्टूबर, 12-सितंबर, 13)
घरेलू उद्योग की बिक्रिया	98365 मी. ट.	220967 मी. ट.
सभी घरेलू उत्पादकों के बाजार अंश की मांग	77.11%	99.98%
घरेलू उद्योग का उत्पादन	99479 मी. ट.	245638
घरेलू उद्योग की क्षमता	101346 मी. ट.	322460

111. घरेलू उद्योग को मूल जांच में पाटन रोधी शुल्क लगाए जाने के बाद से काफी संरक्षण मिला है। घरेलू उद्योग ऐसा शुल्क लगाए जाने के बाद विकसित हुआ है और अब आयातों की मात्रा नगण्य मानी जा सकती है। अतः प्रतिवादी प्राधिकारी से यह अनुरोध करता है कि वह 5 वर्षों की अवधि के आगे पाटन रोधी शुल्क न बढ़ाए।

क. घरेलू उद्योग में वर्तमानक्षति स्थिर नहीं है**क्षति कारक**

112. आवेदक घरेलू उत्पादों ने क्षति के तकरीबन सभी सकारात्मक और अपवादात्मक बदलावों को दर्शाया है, जिनका ब्यौरा इस प्रकार है :

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच की अवधि
क्षमता	मी. ट.	214290	286460	289460	322460
उत्पादन	मी. ट.	182966	204803	224917	245638
विक्रिया	मी. ट.	154434	183420	207243	220967
क्षमता उपयोग	%	85%	71%	78%	76%
कर्मचारी	इंडेक्स्ड	100	104	116	133
उत्पाद/कर्मचारी	इंडेक्स्ड	100	108	106	101
मजदूरी/कर्मचारी	इंडेक्स्ड	100	123	125	120
लाभ	इंडेक्स्ड	100	-11	13	26
नकदी लेन देन	इंडेक्स्ड	100	39	50	53
आर ओ सी ई	इंडेक्स्ड	100	64	79	99
संबद्ध देशों से आयात	मी. ट.	566	1080	174	96
कुल मांग में आयात का %	%	0.2	0.3	0.04	0.02

113. उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि आवेदक घरेलू उत्पादकों को ऊपर दशाई गई क्षमता, उत्पादन, विक्रियों, क्षमता उपयोग, कर्मचारियों, उत्पादकता और मजदूरी के संबंध में सकारात्मक बदलावों के कारण समूची क्षतिकी अवधि और जांच की अवधि के दौरान वर्तमान में किसी क्षति का सामना नहीं करना पड़ रहा।

114. इंडोरामा ने यह अनुरोध किया है कि आवेदक के घरेलू उत्पादकों को आर ओ सी एफ अभी काफी प्रभावी है। इसके अलावा, किसी भी तरह से यह स्पष्ट नहीं है कि कैसे आवेदक घरेलू उत्पादक आर ओ सी एफ को संबद्ध आयातों के साथ जोड़ने का प्रस्ताव करते हैं क्योंकि दो संकेतक पूरी तरह से अलग हैं। आयातों में वृद्धि अथवा कमी का घरेलू उद्योग के आर ओ सी एफ पर कोई प्रभाव नहीं है और इस पर विचार करने का यह व्यर्थ का प्रस्ताव है। किसी भी मामले में आयातों से आर ओ सी एफ में कमी नहीं आ सकती क्योंकि ये मांग का सिर्फ 0.02 प्रतिशत अंश ही पूरा करते हैं।

115. आवेदक घरेलू उत्पादकों के लाभ और नकदी लेन देन के संबंध में यह स्पष्ट है कि आवेदक घरेलू उत्पादकों के लाभ और नकदी लाभ तर्कसंगत हैं। यह उल्लेखनीय है कि संबद्ध आयातों को उपरोक्त कारकों में कटौती के साथ जोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि संबद्ध आयात काफी कम हैं और वे बाजार के केवल 0.02 प्रतिशत अंश की ही पूर्ति करते हैं और उनसे भारत में संबद्ध वस्तुओं की कीमतों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। दूसरी ओर घरेलू उद्योग बाजार के 99.98 प्रतिशत हिस्से को नियंत्रित करता है। ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को यदि किसी क्षति का सामना करना पड़ रहा है तो उसके आंतरिक कारण हैं जो ऐसी क्षति के लिए जिम्मेदार हैं न कि संबद्ध आयात।

ख. घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की कोई संभावना नहीं**116. आयात की मात्रा****(i) घरेलू बिक्री मूल्य और तीसरे देशों को निर्यात कीमत :**

सार्वजनिक सुनवाई के दौरान आवेदक घरेलू उत्पादकों ने यह दलील दी कि इंडोरामा संबद्ध वस्तुओं के अपने निर्यातों को भविष्य में संभवतः भारत शिफ्ट कर रहा है, अतः यह कहना है कि आवेदक घरेलू उत्पादकों को पाटन और क्षति होने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। इंडोरामा इस दलील से इस आधार पर असहमत है कि थाइलैंड में संबद्ध वस्तुओं की

घरेलू बिक्री की कीमत और तीसरे देशों को संबद्ध वस्तुओं की निर्यात की कीमत भारत को संबद्ध वस्तुओं की निर्यात कीमत से अधिक है।

(ii) प्रतिवादी के पास उपलब्ध क्षमता :

निर्यातक प्रश्नावली उत्तर के परिशिष्ट 4 में यह देखा जा सकता है कि इंडोरामा की संस्थापित क्षमता *** मी. ट. है। जांच की अवधि में उसने *** मी. ट. पूर्णतः तैयार यार्न का उत्पादन किया, जिससे वह *** प्रतिशत की क्षमता उपयोग दर पर प्रचालन कर रहा है। अतः इंडोरामा अधिकतम क्षमता उपयोग दर पर प्रचालन कर रहा है और उसके पास बहुत ही कम अप्रयुक्त क्षमता अर्थात् *** प्रतिशत शेष है। अतः इंडोरामा की अपने निर्यातों को भारत में बढ़ाने की संभावना बहुत ही कम है क्योंकि वह पहले से ही अपनी अधिकतम क्षमता उपयोग के साथ प्रचालन कर रहा है।

यहां तक कि यदि इंडोरामा अपनी अप्रयुक्त क्षमता को भारत में निर्यात के लिए लगाने की सोचता है, जो करीब *** मी. ट. है, तो भी इन निर्यातों से भारत में कुल मांग का केवल करीब *** प्रतिशत ही अंश होगा। अतः यह मानकर भी कि इंडोरामा अपनी 100 प्रतिशत क्षमता के साथ प्रचालन करता है तो और अपनी अप्रयुक्त क्षमताओं का इस्तेमाल भारत के लिए करता है तो भी इससे भारत में घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

(iii) आयातों की नगण्य मात्रा :

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच की अवधि
संबद्ध देशों से आयात	मी. ट.	566	1080	174	96
अन्य देशों से आयात	मी. ट.	9	0	0	24
कुल आयात	मी. ट.	574	1080	174	120
घरेलू उद्योग का कुल उत्पादन	मी. ट.	182966	204803	2241917	245638
घरेलू मांग	मी. ट.	339152	378448	412475	431643
समस्त घरेलू उत्पादकों की कुल घरेलू बिक्री	मी. ट.	338577	377368	412301	431523
कुल उत्पादन में आयातों का %	%	0.3	0.5	0.008	0.04
कुल घरेलू बिक्रियों में आयातों का %	%	0.2	0.3	0.04	0.02
कुल मांग में आयातों का %	%	0.2	0.3	0.04	0.02

117. प्राधिकारी की यह निर्धारित प्रथा है कि संबद्ध देश के खिलाफ जब उस देश वे आयातों की मात्रा काफी कम है तो पाटन रोधी जांच समाप्त कर दी जाती है। यह उल्लेखनीय बात है कि चीन जन. गण. और स्वीडन के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पेंटाइरिग्राइटोल के आयातों के खिलाफ पाटन रोधी जांच की **निर्णायक समीक्षा में दिनांक 25 मार्च, 2011 के अंतिम जांच परिणाम में, प्राधिकारी ने यह पाया था कि स्वीडन से भारत को बहुत ही कम मात्रामें आयात हो रहा था और पाटन तथा क्षति मार्जिन नकारात्मक था। ऐसे कारण से प्राधिकारी ने स्वीडन के मूल के अथवा वहां से निर्यातित पेंटाइरिग्राइटोल के आयातों के खिलाफ पाटन रोधी शुल्क समाप्त कर दिया था।**

118. इसके अलावा, चीन जन. गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित ड्राइ सेल बैट्रियों के आयातों के खिलाफ पाटन रोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा में दिनांक 20 मई, 2013 के अंतिम जांच परिणामों में प्राधिकारी ने यह पाया था कि पाटन रोधी शुल्क को कम मात्रा में आयात होने के कारण समाप्त किया जाए। प्राधिकारी की टिप्पणियां नीचे दी गई हैं :

“80. इस मामले का विश्लेषण करने के बाद, यह उल्लेख किया जाता है कि विचाराधीन **उत्पाद का आयात अपर्याप्त है और यह देश में संबद्ध वस्तुओं की मांग का 0.5 प्रतिशत से भी कम होता है। यह भी उल्लेख किया जाता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का निर्यात समीक्षा जांच की समग्र क्षति अवधि के दौरान मांग का 0.5 प्रतिशत से कम होता है। इसके अतिरिक्त देश में संबद्ध वस्तुओं के 3 प्रमुख उत्पादक हैं और उनके निष्पादन में समीक्षा अवधि के दौरान काफी सुधार आया**

है। अतः यह उपर्युक्त समझा गया कि यदि पाटन रोधी शुल्कों को आगे नहीं बढ़ाया जाए तो भी घरेलू उद्योग को किसी क्षति की संभावना नहीं है।

“81. अतः समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि 1.7 बिलियन पीस की कुल मांग की तुलना में चीन जन. गण. से आयात केवल 7 मिलियन पीस ही रहा। पाटन रोधी शुल्क हटा लिए जाने के बाद आयात में तेजी आने की संभावना इस मामले के तथ्यों और परिस्थितियों से उत्पन्न नहीं होती। तीन उत्पादक, जो घरेलू उद्योग है, उनका घरेलू बाजार पर पूरा कब्जा है। **तथापि, यह भी उल्लेख किया जाता है कि यदि मौजूदा पाटन रोधी शुल्क इस मामले में आगे नहीं बढ़ाए जाने के बाद संबद्ध देश से पाटन आयातों में बढोत्तरी होती है तो घरेलू उद्योग कभी भी पुनः पाटन रोधी जांच आरंभ करने के लिए याचिका कर सकता है लेकिन उपरोक्त आधार पर शुल्क आगे बढ़ाया नहीं जा सकता।”**

119. प्राधिकारी के उपरोक्त जांच परिणाम संबद्ध जांच के तथ्यों पर भी समान रूप से लागू होते हैं। प्रतिवादी पुनः यह बात दोहराता है कि **जांच की अवधि में कुल मांग में आयात का प्रतिशत मात्र 0.02 प्रतिशत होता है।**

120. यह सिद्धांत कि पाटन रोधी शुल्क को ऐसी स्थिति में जारी न रखा जाए जब किसी संबद्ध देश से नगण्य निर्यात हो रहा है, एक संभावित विश्लेषण में यूरोपीय आयोगों द्वारा अपने दिनांक 10 जून, 1996 के परिषद विनियम (ई सी) सं. 1074/96 में प्रयोग किया गया था, जिसमें ताइवान और टर्की के मूल के पोलिस्टर यार्न के आयातों पर निश्चयात्मक पाटन रोधी शुल्क के संबंध में आयोग ने आयातों की अत्यधिक कम मात्रा होने के कारण ताइवान के मूल की वस्तुओं के लिए निर्णायक समीक्षा को समाप्त कर दिया था। आयोग की संगत टिप्पणियों का उद्धरण नीचे दिया गया है :

“ताइवान के पोलिस्टर यार्न (पी ओ वाई) में 1991 में 2812 टन से गिरावट होकर (बाजार अंश का 2.4 प्रतिशत) वर्ष 1992 में 1117 टन (बाजार अंश का 0.9 प्रतिशत), 1993 में 551 टन (बाजार अंश का 0.5 प्रतिशत) और जांच की अवधि के दौरान 448 टन (बाजार अंश का 0.4 प्रतिशत) आ गई। इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि तीन प्रमुख ताइवानी उत्पादकों पर कोई पाटन रोधी शुल्क नहीं लगाया गया। जब इन तीन उत्पादकों से आयात को निकाला गया, जो समीक्षा जांच से संबंधित नहीं थे, ताइवान से शेष आयातों पर समुदाय बाजार का हिस्सा मात्र 0.1 प्रतिशत रहा। उपलब्ध सूचना के आधार पर यह सुझाव है कि ताइवान के उत्पादकों ने अपना निर्यात किसी अन्य तीसरे देशों, जो भौगोलिक रूप से उनके समीप थे, के लिए किया, जहां पोलिस्टर यार्न (पी ओ वाई) में धीरे धीरे बढोत्तरी दर्ज की गई। इसके अलावा, इन उत्पादकों के निम्न उत्पाद पी टी वाई की ओर रुख कर लिया। परिणामस्वरूप ऐसा कोई तर्कसंगत उल्लेख नहीं है कि ताइवान के मूल के पी ओ वाई के आयातों पर पाटन रोधी उपाय को समाप्त किए जाने से समुदाय उद्योगों को क्षति की पुनरावृत्ति अथवा क्षति होगी।”

121. वर्तमान मामले में, यह स्पष्ट है कि आयातों की मात्रा काफी कम है और इससे संबद्ध आयातों की मात्रा में घरेलू उद्योग को किसी प्रकार की क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना नहीं है।

ख. मूल्य का असर :

122. संबद्ध वस्तुओं के संबंध में कीमत संबंधी आंकड़े नीचे दिए गए हैं :

विवरण	इकाई	2010-11	2011-12	2012-13	जांच की अवधि
लदान मूल्य	रु./मी. ट.	98086	109481	106576	82663
प्रवृत्ति	इंडेक्स्ड	100	112	109	84
घरेलू बिक्री कीमत	इंडेक्स्ड	100	112	119	121

उपरोक्त से यह देखा जा सकता है कि संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्री कीमत सबसे ऊंची थी जबकि लदान मूल्य सबसे कम था, इस प्रकार यह सिद्ध हो जाता है कि आयातित वस्तुओं के लदान मूल्य और घरेलू बिक्री कीमत के बीच कोई संबंध नहीं है।

(ii) संभावित क्षति मार्जिन

आवेदक घरेलू उत्पादकों ने चीन जन. गण. के मूल के आयातों के क्षति मार्जिन की संभावना और चीन जन. गण. से कोरिया गणतंत्र और टर्की को संबद्ध वस्तुओं की कीमतों के उद्धृत साक्ष्य के संबंध में भी अनुरोध किया है। तथापि, पुनः यह उल्लेख

करना जरूरी है कि आवेदक घरेलू उद्योग ने थाइलैंड और थाइलैंड के आयातों के परिणामस्वरूप होने वाली संभावित क्षति मार्जिन/ कीमत कटौती के संबंध में कोई अनुरोध नहीं किया है। प्रतिवादी का यह कहना है कि थाइलैंड से आयातों के कारण आवेदक घरेलू उत्पादक द्वारा यथाउल्लिखित किसी क्षति मार्जिन की कोई संभावना नहीं है।

(iii) संभावित कीमत कटौती :

आवेदक घरेलू उत्पादकों ने चीन से तीसरे देशों को निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के लदान मूल्य और कीमतों के संबंध में कीमत कटौती की संभावना के संबंध में भी दावे और अनुरोध किए हैं। थाइलैंड से आयातों के परिणामस्वरूप होने वाली किसी कीमत कटौती के संबंध में कोई पर्याप्त विस्तृत दावा नहीं किया गया है।

ग. थाइलैंड के लिए कोई संभावित विश्लेषण नहीं :

123. यह भी उल्लेखनीय है कि आवेदक घरेलू उत्पादकों द्वारा व्यापक रूप से केवल चीन के संबंध में क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। थाइलैंड से आयातों के कारण क्षति की संभावना के संबंध में कोई अनुरोध नहीं किया गया है, इसके निम्नलिखित कारण हैं :

i. निर्यातक देशों में अधिशेष क्षमताएं : आवेदक घरेलू उत्पादकों ने यह कहा है कि चीन के पास घरेलू उद्योग की क्षमता की 34 गुणा तक अधिशेष क्षमता है और उसने पाटन रोधी शुल्कों को आगे बढ़ाने के समर्थन में ऐसा अनुरोध किया है। तथापि, स्पष्ट तौर पर यह उल्लेख किया जाता है कि थाइलैंड आधारित निर्यातकों के संबंध में किसी अधिशेष क्षमता के बारे में अभी तक कोई अनुरोध नहीं किया गया है। प्रतिवादी द्वारा प्राधिकारी को प्रस्तुत किए गए आंकड़ों से यह देखा जा सकता है कि उसके पास संबद्ध वस्तुओं के लिए अधिशेष क्षमता अधिक नहीं है। इसके आधार पर प्रतिवादी का यह कहना है कि प्रतिवादी के संबंध में किए गए अधिकतम क्षमताओं से संबंधित सभी दावों को प्राधिकारी द्वारा अस्वीकार किया जाए।

ii. इसके अतिरिक्त अधिक्य क्षमताओं के दावे के संबंध में यह कहना है कि केवल अधिशेष क्षमताएं होने से ही क्षति की पुनरावृत्ति की संभावना साबित नहीं हो जाती। अधिशेष क्षमताएं होने के किसी भी प्रमाण के साथ कम कीमतों के आयातों का होना भी जरूरी है जो इस वर्तमान मामले में प्रमाणित नहीं होता। ऐसा इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2004 (170) ई. एल. टी. 144 (ट्राई – डेल) मामले में हुआ है “अधिशेष उत्पादक क्षमता को स्पष्ट क्षति होने और भावी क्षति की संभावना के रूप में नहीं देखा जा सकता।” इसके अलावा, प्राधिकारी अन्य जांचों में भी इस निष्कर्ष तक पहुंचे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान से ऐनिलीन के संबंध में निर्णायक समीक्षा जांच में प्राधिकारी ने अपने दिनांक 17 जनवरी, 2012 के अंतिम जांच परिणाम में यह व्यवस्था दी है कि :

“73 ... कारोबार का उद्देश्य लाभ कमाना और उसे अधिक से अधिक बढ़ाना होता है न कि हानि उठाना और हानि को बढ़ाना। मात्र अधिशेष क्षमता उपलब्ध होने का तथ्य किसी अंतिम निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए स्वयं ही पर्याप्त नहीं है कि एक संबद्ध देश, संयुक्त राज्य अमेरिका से वर्तमान मामले में पाटन होने से यदि यदि शुल्कों को वापस ले लिया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति होने अथवा उसकी पुनरावृत्ति जारी रहेगी रहेगी ।”

iii. संभावित क्षति मार्जिन : आवेदक घरेलू उत्पादकों ने चीन जन. गण. के मूल के आयातों के क्षति मार्जिन की संभावना और चीन जन. गण. से कोरिया गणतंत्र और टर्की को संबद्ध वस्तुओं की कीमतों के उद्धृत साक्ष्य के संबंध में भी अनुरोध किया है। तथापि, पुनः यह उल्लेख करना जरूरी है कि आवेदक घरेलू उद्योग ने थाइलैंड और थाइलैंड के आयातों के परिणामस्वरूप होने वाली संभावित क्षति मार्जिन/ कीमत कटौती के संबंध में कोई अनुरोध नहीं किया है। प्रतिवादी का यह कहना है कि थाइलैंड से आयातों के कारण आवेदक घरेलू उत्पादक द्वारा यथाउल्लिखित किसी क्षति मार्जिन की कोई संभावना नहीं है।

iv. आवेदक घरेलू उत्पादकों ने चीन से तीसरे देशों को निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के लदान मूल्य और कीमतों के संबंध में कीमत कटौती की संभावना के संबंध में भी दावे और अनुरोध किए हैं। थाइलैंड से आयातों के परिणामस्वरूप होने वाली किसी कीमत कटौती के संबंध में कोई पर्याप्त विस्तृत दावा नहीं किया गया है।

घ. भारत के लिए संभावित लदान मूल्य की अनुचित गणना

124. आवेदक घरेलू उत्पादकों ने भारत के लिए संबद्ध वस्तुओं के संभावित लदान मूल्य की गणना ऐसी कीमत के आधार पर की है, जिस कीमत पर वे चीन जन. गण. से निर्यातित किए जाते हैं। इस प्रयोजन के लिए आवेदक घरेलू उत्पादकों ने चीन जन. गण. से कोरिया गणतंत्र और टर्की के लिए सी आई एफ कीमत अपनाई है। इसकी गणना के लिए आवेदक घरेलू उत्पादकों ने चीन जन. गण. से कोरिया गण. और टर्की के लिए समुद्री माल भाड़े पर विचार किया है। प्रतिवादी का यह कहना है कि चीन जन. गण. से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के भारत में लदान मूल्य की गणना ऐसी स्थिति में सही होगा।

125. उपरोक्त के लिए कारण यह है कि संबद्ध वस्तुओं के सही लदान मूल्य में चीन जन. गण. से भारत के लिए प्रभारित माल भाड़ा शामिल किया जाना चाहिए न कि चीन जन. गण. से कोरिया गण./ टर्की के लिए/ ऐसी गणना गलत है और प्राधिकारी द्वारा उसे अस्वीकार किया जाना चाहिए।

ड. पाटित आयातों से अलग कारक

126. घरेलू उद्योग को क्षति की जांच करने के लिए पाटन रोधी नियमावली के अनुबंध-॥ में यह विनिर्दिष्ट है कि पाटित आयातों से अलग कोई भी कारक क्षति विश्लेषण से अलग किए जाएं। पाटन रोधी नियमालयी के अनुबंध-॥ के पैरा (V) का संबंधित भाग इस प्रकार है:

"... निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों के अलावा अन्य ऐसे ज्ञात कारकों की भी जांच करेंगे जो इसी समय पर घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहे हैं तथा इन अन्य कारकों द्वारा, होने वाली क्षति को पाटित आयातों द्वारा होने वाली क्षति नहीं माना जाना चाहिए।"

127. वर्तमान मामले के तथ्यों में, आवेदक घरेलू उत्पादक निम्नलिखित अतिरिक्त कारकों का समाधान करने में असफल रहे। प्राधिकारी से अनुरोध किया जाता है कि वह आवेदक घरेलू उत्पादकों को क्षति की जांच करते समय इन कारकों को ध्यान में रखे :

च. विनिमय दर पर विचार :

128. यह उल्लेख करना उचित है कि जांच की अवधि के दौरान यू एस डॉलर के लिए विनिमय दर जो घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई, वह 56.90 है। तथापि, वर्तमान में भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार यू एस डॉलर की वर्तमान दर 62.24 है। यह भी अनुमान है कि रुपए का मूल्य एक बार पुनः बढ़ेगा नहीं बल्कि आगे गिर सकता है।

129. मैसर्स जियांग्सू ने यह कहा कि वर्तमान जांच में पाटन और क्षति की कोई संभावना नहीं है, जैसा कि निम्नलिखित से देखा जा सकता है :

क. चीन से नगण्य आयात : यह कहना है कि समूची क्षति जांच अवधि के दौरान चीन से आयात नगण्य हो रहे हैं। चीन से आयात वास्तव में आधार वर्ष 2010-11 में केवल 21 मी. टन और जांच की अवधि, अक्टूबर, 2012 से सितंबर, 2013 में 48 मी. टन रहा है और कुल मांग और कुल घरेलू उत्पादन की तुलना में आधार वर्ष और जांच की अवधि, दोनों में 0.01 प्रतिशत रहा है। यह दर्शाता है कि शुल्कों के समाप्त होने पर चीन से आयातों में वृद्धि होने की संभावना नहीं है।

ख. चीन से निर्यात के लिए कोई पाटन मार्जिन नहीं : यह कहना है कि हमारे निर्यातकों के लिए कोई पाटन मार्जिन नहीं है। यह दर्शाता है कि हमारी ओर से अथवा चीन की ओर से निर्यात होने से पाटन की कोई संभावना नहीं है।

ग. आयातों से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं : यह कहना है कि घरेलू उद्योग को चीन अथवा अन्य संबद्ध देशों से आयातों से कोई क्षति नहीं है उनका कम मुनाफा और अपनी लागत वृद्धि को वसूलने के लिए कीमतों में वृद्धि करने में उनकी अक्षमता यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग की क्षति का कारण किसी अन्य कारण में मौजूद है। क्षति का कारण घरेलू उत्पादकों के बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा का होना, उच्च उत्पादन लागत, अक्षमता का होना इत्यादि है। अतः घरेलू उद्योग को क्षति की संभावनाचीन अथवा किसी अन्य संबद्ध देश से आयातों के कारण नहीं है।

घ. चीन में कोई अधिक्य क्षमता नहीं : चीन में क्षमता के संबंध में जियांग्सू का कहना है कि घरेलू उद्योग ने आवेदन के अगोपनीय अंश के साथ कोई साक्ष्य भी उपलब्ध नहीं कराया है। घरेलू उद्योग ने चीन में क्षमता के ब्यौरे दिए हैं। तथापि, उन्होंने चीन में उपलब्ध अधिक्य क्षमता के ब्यौरे नहीं दिए हैं। क्षति की संभावना का विश्लेषण उपलब्ध अधिक्य क्षमता के आधार पर किया जाता है न कि नाम की क्षमताओं के अनुसार, क्योंकि इससे गलत निष्कर्ष निकलेगा। अधिक्य क्षमताओं के

कारण ही निर्यातकों को अपने उत्पादन का निर्यात करने की आवश्यकता पड़ती है अन्य कारण से नहीं। निर्यातक के पास उपलब्ध सूचना के अनुसार चीन के उत्पादकों के पास कोई अधिक्य क्षमता नहीं है, जिनके कारण भारतीय बाजार शुल्कों को हटाए जाने के बाद प्रभावित हो।

अतः उपर्युक्त को देखते हुए जियांग्सू का कहना है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से आयोग तथा संबद्ध देशों से पाटन के कारण क्षति की कोई संभावना नहीं है। अतः वर्तमान मामले में यह उचित होगा कि माननीय प्राधिकारी जांच को बंद करके न्याय के हित में वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में पाटन रोधी शुल्कों को बंद कर सकते हैं।

130. इच्छुक पक्षकारों ने यह अनुरोध किया है कि संबद्ध आयातों के संबंध में कोई क्षति और अस्थायी संबंध नहीं है क्योंकि इसकी मात्रा काफी कम है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

131. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के संबंध में इच्छुक पक्षकारों के विभिन्न अनुरोधों को नोट किया है और उपलब्ध अभिलेखों तथा लागू कानून के अनुसार तथ्यों पर विचार करके उनका विश्लेषण किया है। तथ्यों और आंकड़ों से संबंधित सभी संगत मामलों पर क्षति विश्लेषण में पर्याप्त रूप से विचार किया गया है।

132. अनुबंध-॥ के साथ पठित पाटन रोधी नियमावली के नियम 11 में यह प्रावधान है कि क्षति निर्धारण में ऐसे कारकों की जांच करना शामिल होगा जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है, “.... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति, घरेलू उद्योग को क्षति के खतरे, घरेलू उद्योग की स्थापना के लिए वास्तविक बाधा और पारित आयोग तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का निर्धारण किया जाएगा।” कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करने के लिए आवश्यक समझा गया कि यह जांच की जाए कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से कीमत में काफी कटौती हुई है। अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा कोई कमी हुई है अथवा कीमत में वृद्धि होने से रोका गया है, जो अन्यथा काफी मात्रा में होती।

133. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयोगों के प्रभाव की जांच करने के लिए, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, मुनाफा, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन पर प्रभाव होता है, पर कथित नियम के अनुबंध-॥ के अनुसार विचार किया गया है।

134. वर्तमान जांच प्रभावी पाटन रोधी शुल्कों की एक निर्णायक समीक्षा है। नियम 23 में यह प्रावधान है कि नियम 11 के प्रावधान समीक्षा के मामले में आवश्यक परिवर्तनों सहित लागू होंगे। अतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति का निर्धारण अनुबंध-॥ के साथ पठित नियम 11 के प्रावधानों के अनुसार आवश्यक परिवर्तनों के साथ विचार करके किया है। इसके अलावा चूंकि विचाराधीन उत्पादों के आयातों पर पाटन रोधी शुल्क लागू हैं, प्राधिकारी ने यह विचार किया है कि क्या संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर लागू मौजूदा पाटन रोधी शुल्कों पर घरेलू उद्योग की क्षति की जांच करते समय विचार किया जाए। प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या पाटन के कारण हो रही क्षति पर रोक लगाने के लिए मौजूदा पाटन रोधी उपाय पर्याप्त हैं अथवा नहीं।

135. सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9(क) (5) के अनुसार लगाया गया पाटन रोधी शुल्क जब तक उसे पहले ही समाप्त न किया जाए, इस प्रकार से लगाए जाने की तारीख से 5 वर्ष की समाप्ति पर निष्प्रभावी हो जाएगा, बशर्ते यदि किसी समीक्षा में केंद्र सरकार का यह मत हो कि ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन तथा क्षति के जारी रहने या उनकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है तो वह इस प्रकार से लगाए गए शुल्क की अवधि को समय समय पर आगे और 5 वर्ष के लिए बढ़ा सकती है और आगे की ऐसी अवधि इस प्रकार के समय विस्तार के आदेश की तारीख से शुरू होगी।

136. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजन से प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तुओं की मात्रा और कीमत के प्रभाव तथा कीमतों और मुनाफे पर उसके प्रभाव की जांच की ताकि यह पता चल सके कि पाटन और क्षति के बीच कोई क्षति और अस्थायी संबंध मौजूद है अथवा नहीं। पाटित आयातों की मात्रा और कीमत के प्रभाव की जांच की गई, जो इस प्रकार हैं :

मात्रा का प्रभाव

पाटित आयात के प्रभाव की मात्रा और उसका घरेलू उद्योग की मांग और बाजार के हिस्से पर प्रभाव

137. प्राधिकारी ने भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और डीजीसीआईएंडएस से आयात के निष्कर्ष के रूप में देश में मांग अथवा उत्पादों की प्रत्यक्ष खपत का निर्धारण किया है। इस प्रकार से निर्धारित की गई मांग को नीचे तालिका में देखा जा सकता है। प्राधिकारी ने सहयोगी निर्यातकों से प्राप्त हुई प्रतिक्रिया के आधार पर यह नोट किया है कि अन्य शीर्षों के अंतर्गत पीयूसी के आयात भी मांग के लगभग 0.5% के आस पास बनते हैं। प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान देश में संबद्ध सामान की मांग में वृद्धि हुई है। तथापि, पाटन रोधी शुल्क लगे होने तथा आयात का वर्तमान बाजार में बहुत कम हिस्सा होने के कारण संबद्ध देशों से आयात बहुत कम हैं और यह नगण्य मात्रा है।

वर्ष	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
संबंधित देशों से आयात (मी.टन)	731	726	89	27
अन्य देशों से आयात (मी.टन)	11	27	64	18
कुल आयात (मी.टन)	741	753	153	45
कुल मांग (मी.टन)	339319	378121	412384	430994
घरेलू उद्योग की बिक्रियां (मी.टन)	154434	183420	207173	220393

आयात की मात्रा और बाजार का हिस्सा

138. पाटित आयात की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को इस बात पर विचार करने की आवश्यकता होती है कि क्या पूर्णतया अथवा अपेक्षाकृत दृष्टि से पाटित आयातों में विशेष वृद्धि हुई है। आयात की मात्रा और बाजार के हिस्से के आंकड़े नीचे तालिका में दिए गए हैं।

वर्ष	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
संबद्ध देशों से आयात (मी.टन)	731	726	89	27
अन्य देशों से आयात (मी.टन)	11	27	64	18
कुल आयात (मी.टन)	741	753	153	45
कुल मांग (मी.टन)	339319	378121	412384	430994
मांग में संबंधित देशों का हिस्सा	0.22%	0.19%	0.02%	0.01%
मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा	99.78%	99.80%	99.96%	99.99%

139. आयात की मात्रा बहुत कम और नगण्य है क्योंकि इस समय संबद्ध सामान पर पाटन-रोधी शुल्क लगा हुआ है। जैसा कि सहयोगी निर्यातकों ने सूचित किया है, यदि संबद्ध देशों द्वारा अध्याय - 54 के विभिन्न शीर्षों के अंतर्गत किए गए निर्यातों को शामिल किया जाता है तो संबद्ध देशों से आयात के हिस्से में 0.5 प्रतिशत की वृद्धि दृष्टिगत होती है जो कि निम्न स्तर पर है।

कीमत का प्रभाव**पाटित आयात पर कीमत का प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव**

140. संबद्ध देशों से संबद्ध सामान के आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव की जांच, कीमत में कटौती होने, कम कीमतों पर बिक्री होने, कीमत ह्रास और न्यूनीकरण को ध्यान में रख कर की गई है। इस प्रकार के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की उत्पादन की लागत, निबल बिक्री वसूली (एनएसआर) और गैर-क्षति कीमत

(एनआईपी) की तुलना संबद्ध देशों से आयात के पहुंच मूल्य से की गई है। जांच अवधि के दौरान संबद्ध सामान की तुलना, संबद्ध देशों से आयात के पहुंच मूल्य और घरेलू बाजार में घरेलू बिक्री कीमत से की गई है। घरेलू उद्योग की निबल बिक्री वसूली का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा कर्तों, छूटों, डिस्काउंट्स और कमीशन पर किए गए खर्च को समंजित किया गया है। क्षति का मूल्यांकन करने के लिए कीमत में कटौती एक महत्वपूर्ण संकेतक है, इसलिए प्राधिकारी ने गैर-क्षति कीमत का निर्धारण किया और उसकी तुलना पहुंच कीमत से की है ताकि यह पता लग सके कि किस सीमा तक कम कीमत पर बिक्री की गई है। जांच अवधि के दौरान विचारार्थ उत्पाद की उत्पादन लागत पर उपयुक्त रूप से विचार करके अनुबंध-3 में उल्लिखित सिद्धांतों के अनुरूप घरेलू उद्योग के लिए गैर-क्षति कीमत का मूल्यांकन किया गया है। तदनुसार प्राधिकारी ने नीचे दिए गए भाग में सहयोगी और असहयोगी निर्यातकों के लिए इन प्राचलों का मूल्यांकन किया है।

कीमत में कटौती

141. प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि यह विचार करने योग्य है कि क्या भारत में सदृश उत्पाद की कीमत की तुलना में संबद्ध देशों से आयातों द्वारा कीमत में विशेष कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का अन्यथा कीमतों में विशेष सीमा तक ह्रास हुआ है अथवा उनसे कीमतों में वृद्धि होने में रुकावट आई है जो कि अन्यथा विशेष सीमा तक होती।

142. प्राधिकारी ने नोट किया है कि डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों के आधार पर चीन जन. गणराज्य और थाईलैंड के लिए कीमत में कटौती नगण्य है। डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों के आधार पर सीमा शुल्क शीर्ष 540247 के अंतर्गत संबद्ध देशों से कुल मात्रा 27 मी.टन है। चीन से आयात लगभग 21 मी.टन हुए हैं जबकि थाईलैंड से आयात लगभग 6 मी.टन मात्र हुए हैं। चूंकि यह मामला अंतिम जांच परिणाम का है, इसलिए आयात की मात्रा के साथ-साथ संभावित पाटन और क्षति की जांच की जानी जरूरी है। प्राधिकारी ने निर्यातों के सह संबंध के लिए सहयोगी निर्यातकों की प्रतिक्रिया का हवाला दिया है और जांच अवधि के दौरान कीमत में कटौती होने और कम कीमत पर बिक्री होने का विश्लेषण किया है तथा विश्व व्यापार के आंकड़ों, विभिन्न इच्छुक पक्षकारों नामतः घरेलू और सहयोगी निर्यातकों द्वारा दिए गए तर्कों के आधार पर ऐसा संभावित विश्लेषण किया है।

143. उपरोक्त उपागम, कीमत में कटौती होने के विश्लेषण पर भी समान रूप से लागू होता है। चीन जन. गण. और थाईलैंड के लिए कीमत में नकारात्मक कटौती होने को सहयोगी/अन्य उत्पादकों/संबद्ध देशों के निर्यातकों के लिए संभावित विश्लेषण के रूप में देखा जाए।

कीमत ह्रास और न्यूनीकरण

144. घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों के कीमत ह्रास और न्यूनीकरण के प्रभाव की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग की निबल बिक्री वसूली की प्रवृत्ति की तुलना बिक्रियों की लागत से की गई है। नीचे दिए गए आंकड़ों से पता चलता है कि अधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री की कीमत में वृद्धि, लागत में हुई वृद्धि के समनुरूप नहीं हुई है।

विवरण	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
बिक्रियों की लागत रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	118	124	124
निबल बिक्री कीमत रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	112	119	120

घरेलू उद्योग के अन्य आर्थिक प्राचलों की जांच

145. पाटन-रोधी नियमों के अनुबंध-2 में यह अपेक्षित है कि क्षति का निर्धारण करने के लिए सदृश उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयात के परिणामी प्रभाव की सार्थक जांच करना जरूरी है। नियमों में आगे यह भी प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर संबद्ध देशों से होने वाले आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों के सार्थक और पक्षपात रहित मूल्यांकन तथा उद्योग की स्थिति को प्रभावित करने वाले सूचकों, जिनमें बिक्रियों, लाभ, निर्गम, बाजार के हिस्से,

उत्पादकता, निवेश से होने वाली आय अथवा क्षमता का उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह, माल सूचियों, रोजगार, वेतन, उन्नति, पूंजी निवेश को बढ़ाने की क्षमता पर पड़ने वाले वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव निहित हैं, को भी शामिल किया जाना चाहिए। घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन की जांच करने पर यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को सामग्री की क्षति हुई है। घरेलू उद्योग से संबंधित क्षति के विभिन्न प्राचलों का उल्लेख नीचे किया गया है।

उत्पादन, क्षमता और क्षमता उपयोग

146. प्राधिकारी ने नीचे तालिका में दिए गए आंकड़ों से नोट किया है कि विचारार्थ उत्पादन का क्षमता उपयोग, आधार वर्ष में 83.23 प्रतिशत से गिर कर जांच अवधि में 75.20 प्रतिशत हो गया है। तथापि, यह भी नोट किया गया है कि यदि वर्ष 2011-12 से तुलना की जाए तो क्षमता उपयोग के स्तर में वृद्धि हुई है। यदि इसके स्तर की तुलना तात्कालिक परवर्ती वर्ष से की जाए तो यह कुल मिलाकर स्थिर बना हुआ है। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि मांग में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग की क्षमता में वृद्धि हुई है।

वर्ष	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
क्षमता (मी.टन)	219840	289610	292610	325610
प्रवृत्ति	100	132	133	148
केवल पीयूसी उत्पादन	182966	204803	224709	244843
प्रवृत्ति	100	112	123	134
क्षमता utilization (मी.टन)	83.23%	70.72%	76.79%	75.20%
प्रवृत्ति	100	85	92	90

घरेलू उद्योग की बिक्रियां

147. नीचे दी गई सूचना से प्राधिकारी ने नोट किया है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों में वृद्धि हुई है क्योंकि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मांग में बढोत्तरी हुई है। तात्कालिक पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में बिक्रियों में भी वृद्धि हुई है।

विवरण	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
घरेलू बिक्रियां (मी.टन)	154434	183420	207173	220393
प्रवृत्ति	100	119	134	143

लाभ/हानि, निवेश पर आय और नकदी प्रवाह

148. निवेश पर आय, प्रति यूनिट लाभप्रदता और नकद लाभ के ब्यौरे नीचे तालिका में दिए गए हैं:

वर्ष	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
घरेलू बिक्री कीमत रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	112	119	120
लागत रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	118	124	124
लाभ रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	-13	16	39

नकद लाभ रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	40	53	63
आरओसीई (%)	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	59	81	105

149. प्राधिकारी ने नोट किया है कि जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आई है। बिक्री कीमत में वृद्धि, लागत के स्तर में हुई वृद्धि से कम है। इसके अतिरिक्त यह भी नोट किया गया है कि विगत दो वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान नकद लाभ में वृद्धि हुई है लेकिन आधार वर्ष की तुलना में इसमें गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त नियोजित पूंजी से प्राप्त होने वाली आय में भी आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान मामूली वृद्धि हुई है।

माल सूचियां

150. नीचे तालिका में दिए गए आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग से माल सूची के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

वर्ष	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
अंत स्टॉक (मी.टन)	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	100	93	121

151. नीचे तालिका में दिए गए आंकड़ों से प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि आधार वर्ष की तुलना में क्षति अवधि के दौरान रोजगार में सुधार हुआ है। प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि वेतन में वार्षिक वृद्धि होने के कारण आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान प्रत्येक कर्मचारी के वेतन में वृद्धि हुई है।

वर्ष	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
कर्मचारी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	104	116	133
वेतन/कर्मचारी (रूप ए)	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	124	122	115

उत्पादकता

152. प्राधिकारी ने नीचे तालिका में दिए गए आंकड़ों से यह नोट किया है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

वर्ष	2010-11	2011-12	2012-13	जांच अवधि
उत्पादन (मी.टन)	182966	204803	224709	244843
कर्मचारी	100	112	123	134
उत्पादन/कर्मचारी	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	108	106	101

पाटन के मार्जिन की मात्रा

153. प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि डीजीसीआईएंडएस के समग्र आंकड़ों के आधार पर संबद्ध देशों से संबद्ध माल के आयातों का पाटन मार्जिन नकारात्मक है। लेकिन इनका सहयोगी निर्यातकों के लिए पृथक से मूल्यांकन किया जाता है और इन्हें पृथक सहयोगी निर्यातकों के लिए उपयुक्त रूप से संदर्भित किया जाता है।

विकास

154. प्राधिकारी ने नोट किया है कि विकास में भी वही प्रवृत्ति परिलक्षित हुई है जो कि लाभप्रदता, नकदी प्रवाह और माल सूची में देखी गई है।

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

155. हालांकि संबद्ध देशों से आयात कम और नगण्य हैं, प्राधिकारी का यह विचार है कि इसे सहयोगी निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के समग्र परिप्रेक्ष्य में और बेहतर ढंग से उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार संभावित पाटन और क्षति के विश्लेषण के आधार पर देखे जाने की आवश्यकता है।

पूंजी निवेश बढ़ाने की क्षमता

156. प्राधिकारी ने नोट किया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध सामान पर पाटन-रोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भारत में क्षमताएं बढ़ी हैं। प्राधिकारी ने पाटन-रोधी शुल्क को हटाने की स्थिति में इन पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया है।

क. कारणात्मक संबंध

157. नियमों में प्राधिकारी को यह अधिदेश प्राप्त है कि वह संबद्ध देशों से आयातों और संबद्ध देशों के आयातों के कारण घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के बीच के कारणात्मक संबंध का पता लगाए। इसलिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के लिए निम्नलिखित ज्ञात कारकों का विशेष रूप से उल्लेख किया है, जो इस प्रकार हैं :-

- (i) मांग में संकुचन : प्राधिकारी ने नोट किया है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान देश से संबद्ध सामान की मांग में निरंतर वृद्धि हुई है।
- (ii) तृतीय देशों से आयात : प्राधिकारी ने नोट किया है कि संबद्ध देशों से भिन्न देशों से नगण्य मात्रा में आयात हुआ है।
- (iii) खपत का पैटर्न : यह नोट किया गया है कि किसी भी इच्छुक पक्षकार ने घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले संबद्ध सामान की खपत के पैटर्न में कोई परिवर्तन होने पर कोई टिप्पणी व्यक्त नहीं की है।
- (iv) तृतीय घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन : घरेलू उद्योग का निर्यात-निष्पादन संबद्ध नहीं है, क्योंकि प्राधिकारी ने क्षति का विश्लेषण करने के लिए घरेलू उद्योग के देशी कार्य-निष्पादन पर ही विचार किया है।
- (v) प्रतिस्पर्धा की परिस्थितियां : प्राधिकारी ने नोट किया है कि जांच से ऐसा पता नहीं चला है कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने के लिए उत्तरदायी प्रतिस्पर्धा की परिस्थितियां अथवा व्यापारिक प्रतिबंधित प्रक्रियाएं विद्यमान हैं।
- (vi) प्रोद्योगिकी में विकास : प्राधिकारी ने नोट किया है कि जांच से ऐसा पता नहीं चला है कि प्रोद्योगिकी में ऐसा कोई विशेष परिवर्तन हुआ हो जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंची हो।

सामग्री की क्षति और कारणात्मक संबंध पर निष्कर्ष

158. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि मौजूदा मामला अंतिम जांच निर्णय से संबंधित है, जांच अवधि के दौरान विभिन्न प्राचलों जैसे कि कुल मांग, विक्रियों, उत्पादन में घरेलू उद्योग की बाजार के हिस्से के रूप में हुई क्षति, लागत में वृद्धि के स्तर के समनुरूप उसकी बिक्री कीमत में वृद्धि होने की क्षमता, क्षति अवधि की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, नकदी प्रवाह का मूल्यांकन किया गया है। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने नोट किया है कि इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि शीर्ष 54024700 के अंतर्गत संबद्ध देशों से केवल कम मात्रा में अर्थात् 27 मी.टन का ही आयात हुआ है, समग्र आयात के आंकड़ों पर कीमत में कटौती नहीं होने, कम कीमत पर बिक्री होने और समग्र आयात आंकड़ों पर पाटन

मार्जिन को देखा जाना चाहिए। इसलिए सहयोगी निर्यातकों द्वारा भारत को पेश की गई कीमतों को, कीमत में कटौती होने, कम कीमत पर बिक्री होने और पाटन मार्जिन के प्रयोजनार्थ स्वीकार्य अथवा विश्वसनीय माना गया है।

पाटन और क्षति के निरंतर जारी रहने/पुनरावृत्ति होने की संभावना

घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत टिप्पणियां

159. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित टिप्पणियां की गई हैं :-

- (i) चीन एफडीवाई को सबसे बड़ा उत्पादक है और साथ ही इसके पास एफडीवाई का विनिर्माण करने वाले सर्वाधिक उद्यम भी हैं। नीचे तालिका में दी गई सूचना से यह स्पष्ट होता है कि चीन में संबद्ध सामान की उत्पादन क्षमता, घरेलू उद्योग की क्षमता की तुलना में 34 गुणा (3411 %) अधिक है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग ने यह निवेदन किया है कि संबद्ध सामान की चीन की क्षमता, भारत में मांग और घरेलू उद्योग की तुलना में क्रमशः 25 गुणा (2548 %) और 44 गुणा (4478 %) है। तदनुसार यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि यदि लगाए गए पाटन-रोधी शुल्क को प्राधिकारी द्वारा एक बार हटा दिया जाता है, तो ऐसी संभावना है कि पाटन निरंतर जारी रहेगा अथवा उसकी पुनरावृत्ति होती रहेगी और उससे घरेलू उद्योग को क्षति होगी।

विवरण	
चीन की क्षमता (मी.टन)	11000000
घरेलू उद्योग की क्षमता (मी.टन)	322460
भारत में मांग (मी.टन)	431643
घरेलू उद्योग का उत्पादन (मी.टन)	245638
घरेलू उद्योग की बिक्रियां (मी.टन)	220967
घरेलू उद्योग की क्षमता के % के रूप में चीन की क्षमता (%)	3411%
भारत में मांग की क्षमता के % के रूप में चीन की क्षमता (%)	2548%
घरेलू उद्योग के उत्पादन के % के रूप में चीन की क्षमता (%)	4478%
घरेलू उद्योग की बिक्रियों के % के रूप में चीन की क्षमता (%)	4978%

- (ii) घरेलू उद्योग ने यह निवेदन किया है कि मेसर्ज जिंगसु हेंगली केमिकल फाईबर कंपनी लिमिटेड, चीन ने संबंधित उत्पाद की क्षमता को वर्ष 2010 में 100 (सूचकांक) से बढ़ा कर वर्ष 2013 में 150 (सूचकांक) कर दिया है। इस तथ्य की स्पष्ट पुष्टि, उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर के पृष्ठ 21 में उल्लिखित विवरण से हो जाती है। इसलिए ऐसी स्पष्ट संभावना है कि यदि पाटन-रोधी शुल्क को प्राधिकारी द्वारा समाप्त कर दिया जाता है तो भारतीय बाजार, पाटित सामान के सैलाव से पट जाएगा।
- (iii) पाटन-रोधी शुल्क लगाने के पश्चात आयात में गिरावट आने से ऐस स्पष्ट होता है कि शुल्क को समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन होने की संभावना बढ़ेगी और यह स्वतः पाटन-रोधी शुल्क का विस्तार करने को न्यायोचित ठहराता है।
- (iv) घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि मेसर्ज इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज पीसीएल, थाईलैंड ने अपने लिखित उत्तर के पैरा 42 में विशेष रूप से यह स्वीकार किया है कि थाईलैंड के भीतर घरेलू कीमतें और शेष विश्व की कीमतें, भारत की कीमतों से अधिक हैं। इसलिए उनके पास इसके सिवाए और कोई विकल्प नहीं है कि वे घरेलू बाजार की बिक्रियों के साथ-साथ तृतीय देशों को निर्यात की बिक्रियां करना छोड़ दें और ऐसी बिक्रियों को भारत की

और अपवर्तित कर दें। उक्त निर्यातक द्वारा दिया गया ऐसा विवरण सुस्पष्ट है और यह भारत में वर्तमान और संभावित पाटन को सुस्पष्ट रूप से स्वीकार करना है।

- (v) घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि संबद्ध देशों से भारत से भिन्न अन्य देशों की कीमतों के आधार पर परिकलित करने पर सकारात्मक और विशेष क्षति होने और पाटन का मार्जिन होने का पता चलता है। घरेलू उद्योग ने नमूना बीजकों और चीन जन.गण. से भारत से भिन्न देशों को निर्यातों की संविदा की प्रतियां प्रस्तुत की हैं, जिनसे संबद्ध देशों से अन्य देशों को संबद्ध सामान की प्रचलित कीमतों का पता चलता है। इन कीमतों के आधार पर संभावित क्षति और पाटन मार्जिन को नीचे तालिका में दर्शाया गया है :-

चीन और अन्य देशों की कीमतों के आधार पर क्षति और पाटन मार्जिन

संभावित पाटन का मार्जिन	कोरिया में कीमतों पर		टर्की में कीमतों पर	
विवरण	रूप ए /मी.टन	\$/मी.टन	रूप ए /मी.टन	\$/मी.टन
सामान्य मूल्य	119281	2096	119281	2096
निर्यात कीमत	81821	1438	78307	1376
पाटन मार्जिन	37459	658	40973	720
पाटन मार्जिन %	46%	46%	52%	52%
पाटन मार्जिन (सीमा)	45-50	45-50	50-55	50-55

संभावित क्षति का मार्जिन	कोरिया में कीमतों पर		टर्की में कीमतों पर	
विवरण	रूप ए /मी.टन	\$/मी.टन	रूप ए /मी.टन	\$/मी.टन
एनआईपी	***	***	***	***
पहुंच मूल्य	96073	1689	92146	1620
क्षति मार्जिन	***	***	***	***
क्षति मार्जिन %	***	***	***	***
क्षति मार्जिन (सीमा)	25-30	25-30	30-35	30-35

- (vi) थाईलैंड के संबंध में घरेलू उद्योग ने यह निवेदन किया है कि स्थिति का संभावित विश्लेषण करने के लिए थाईलैंड के निर्यातकों और सरकार को प्राधिकारी को आवश्यक ब्यौरे प्रस्तुत करने चाहिए। यहां यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि थाईलैंड की सरकार सहित किसी भी पक्षकार द्वारा वर्तमान और भावी क्षमताओं तथा मांग की तुलना में बेशी होने से संबंधित पूरी सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है। इस तथ्य को कि पाटन और क्षति होने की कोई संभावना नहीं है, प्रमाणित करने का दायित्व, ऐसा दावा करने वाले इच्छुक पक्षकार का बनता है। यहां यह नोट करना भी महत्वपूर्ण है कि संभावित विश्लेषण तभी किया जा सकता है जबकि सहयोगी निर्यातक अन्य देशों को निर्यातों के बारे में पर्याप्त सूचना प्रदान करें और साथ ही यह भी सिद्ध करें कि एक उपयुक्त ग्रेड-वार कीमत विश्लेषण किए जाने पर पाटन अथवा क्षति होने की कोई संभावना नहीं है। ऐसी किसी भी प्रकार की सूचना प्राप्त नहीं होने की स्थिति में थाईलैंड के खिलाफ ऐसे शुल्कों को निरंतर जारी नहीं रखे जाने का कोई कारण नहीं है।
- (vii) पाटन-रोधी शुल्क को रद्द करने से घरेलू उद्योग पर निरंतर पाटन होता रहेगा और क्षति जारी रहेगी। पाटन-रोधी शुल्क को समाप्त किए जाने से बाजार में विचाराधीन उत्पाद की कीमतों पर विशेष प्रभाव पड़ेगा जो कि ह्रास होने के साथ-साथ न्यूनतम होंगी।

160. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि शुल्कों को हटाते ही पाटन और क्षति की निरंतर पुनरावृत्ति होने की पूरी संभावना है, क्योंकि पाटन-रोधी शुल्क को समाप्त करने से संबद्ध देशों से संबद्ध सामान के विनिर्माताओं/निर्यातकों को, भारत में संबद्ध सामान का पाटन करने के लिए स्वतंत्र अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य इच्छुक पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत टिप्पणियां

161. क्षति की जांच करने की अवधि में चीन से आयात नगण्य रहे हैं और कुल घरेलू उत्पादन और भारत में कुल मांग की तुलना में पूरी तरह से कोई आयात नहीं हुए हैं। इसलिए चीन से होने वाले आयात के स्तर को ध्यान में रखते हुए जो कि नगण्य हैं और इसी प्रकार की स्थिति विपणन से कोई आयात नहीं होने की है, इसलिए चीन के खिलाफ की जाने वाली वर्तमान जांच को समाप्त किया जा सकता है क्योंकि वर्तमान जांच में पाटन अथवा क्षति होने की कोई संभावना नहीं है।

162. संबद्ध आयात की कीमत की दृष्टि से कोई वर्तमान अथवा भावी क्षति नहीं होगी तथा आयात, घरेलू विक्री की कीमत को प्रभावित करने में सक्षम नहीं हैं।

163. मेसर्स इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज प्राइवेट कंपनी लिमिटेड ("मेसर्स इंडोरामा") ने यह तर्क दिया है कि वे पहले से ही अनुकूलतम क्षमता उपयोग स्तर पर प्रचालन कर रहे हैं। इसलिए उनके पास बहुत कम अप्रयुक्त क्षमता बची हुई है।

164. थाईलैंड से किसी भी प्रकार की संभावित क्षति होने के बारे में घरेलू उद्योग ने कोई निवेदन नहीं किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

165. मौजूदा जांच, चीन जन. गण. और थाईलैंड से संबद्ध सामान के आयात पर लगाए गए पाटन-रोधी शुल्कों की अंतिम पुनरीक्षा से संबंधित है, इसलिए प्राधिकारी को यह निर्धारित करने की आवश्यकता है कि क्या पाटन-रोधी शुल्कों को निरंतर लगाए रखा जाना आवश्यक है। मौजूदा जांच में हालांकि संबद्ध देशों से संबद्ध सामान का कम मात्रा में निरंतर आयात होता रहा है, फिर भी प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि इस तथ्य की जांच किए जाने की आवश्यकता है कि क्या शुल्क को रद्द किए जाने के परिणामस्वरूप संबंधित उत्पाद का निरंतर पाटन होना जारी रहेगा। तथापि, इस तथ्य पर विचार करते हुए कि मूल जांच में पाटन का मार्जिन काफी था और यह कि जहां तक संबद्ध सामान की मांग का संबंध है, भारतीय बाजार में अनुकूल बाजार स्थितियां विद्यमान हैं, यदि पाटन-रोधी शुल्कों को रद्द कर दिया जाता है तो पाटन की पुनरावृत्ति हो सकती है।

166. निम्नलिखित विश्लेषण से पता चलता है कि पाटन-रोधी शुल्कों को समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में पाटन की संभावना होने के साथ-साथ घरेलू उद्योग को और क्षति हो सकती है।

(1) पाटन मार्जिन का स्तर

167. मूल जांच में पाटन का मार्जिन स्तर काफी था। जहां तक जांच की वर्तमान अवधि में पाटन के मार्जिन का संबंध है, प्राधिकारी ने उपलब्ध उत्तम सूचना के आधार पर इसका मूल्यांकन, मेसर्स इंडोरामा और अन्य गैर-सहकारी निर्यातकों के लिए किया है। प्राधिकारी ने यह नोट किया है कि डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों के आधार पर चीन के लिए पाटन मार्जिन नगण्य है और मेसर्स जिंगसू का उत्तर भी नगण्य पाटन मार्जिन दर्शाता है। तथापि, मेसर्स जिंगसू द्वारा निर्यात की मात्रा कम होने के कारण प्राधिकारी ने उसे वास्तविक नहीं माना है और पाटन-रोधी शुल्कों को रद्द किए जाने की स्थिति में पाटन की संभावना की जांच की है।

(2) कीमतों और संबद्ध देशों से अन्य देशों में बेची क्षमता के उपयोग के आधार पर क्षति का स्तर और पाटन मार्जिन

168. प्राधिकारी ने नोट किया है कि संबद्ध देशों से अन्य देशों की कीमतों में अनुमानित क्षति और पाटन मार्जिन सकारात्मक और काफी है। इसलिए प्राधिकारी ने नोट किया है कि पाटन-रोधी शुल्कों को हटाने से संबद्ध देशों के विनिर्माता/निर्यातक संबद्ध सामान को भारत में पाटन करने के लिए प्रोत्साहित होंगे और इस प्रकार पाटन-रोधी शुल्कों को हटाते ही पाटन और क्षति की निरंतर जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

(3) भारतीय बाजार का आकर्षण

169. भारत में संबद्ध सामान की मांग बढ़ रही है। पाटन-रोधी शुल्कों को हटाते ही ऐसी संभावना होगी कि तृतीय देशों को, भारत से कम कीमतों पर किए जाने वाले निर्यात, एक तरफ तो भारत की ओर अपवर्तित करने और दूसरी ओर भारत को निर्यात बहाल करने के लिए बेशी क्षमताओं का उपयोग करने को प्रोत्साहन मिलेगा।

(4) संबद्ध देशों में बेशी क्षमताएं

170. प्राधिकारी ने नोट किया है कि चीन के पास संबंधित उत्पाद की काफी क्षमताएं विद्यमान हैं जो कि घरेलू उद्योग की क्षमता से 34 गुणा, भारत में मांग से 25 गुणा और घरेलू उद्योग के उत्पादन से 44 गुणा अधिक हैं। इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि ऐसे सभी निर्यातकों, जिन्होंने प्रश्नावली के उत्तर दिए हैं, के पास भारत में निर्यात बढ़ाने के लिए बेशी क्षमताएं उपलब्ध हैं। ऐसी परिस्थितियों में ऐसी प्रत्येक संभावना है कि पाटन-रोधी शुल्कों को हटाते ही पाटन और क्षति की निरंतर जारी रहेगी अथवा पुनरावृत्ति होगी।

171. उदाहरण के लिए मेसर्ज जिंगसू के पास उसकी 83 प्रतिशत क्षमताओं का उपयोग करने से संबद्ध सामान की क्षमता **** मी.टन है। इसके वैश्विक निर्यात लगभग **** मी.टन से **** मी.टन के बीच हैं, जो कि भारत की कीमतों से कम कीमतों पर किए जाते हैं। हालांकि हाल ही के विगत वर्षों और जांच अवधि के दौरान इसके भारत को किए जा रहे निर्यात में गिरावट आई है, जो कि वर्ष 2009 में लगभग **** मी.टन थे। इस प्रकार भारत में बेहतर कीमतों की उपलब्धता होने तथा उत्पादक/निर्यातक के पास बेशी क्षमता उपलब्ध होने के कारण पाटन-रोधी शुल्कों को हटाते ही पाटन की पुनरावृत्ति होने की संभावना है।

172. इसके अतिरिक्त प्राधिकारी ने यह भी नोट किया है कि यदि चीन से संबद्ध सामान के निर्मित सामान्य मूल्य और जांच अवधि में घरेलू उद्योग के लिए गैर-क्षति कीमत (एनआईपी) के आधार पर इनका विश्लेषण किया जाता है तो विश्व व्यापार एटलस के आंकड़ों के अनुसार जांच अवधि के दौरान विश्व भर में चीन जन. गण. से संबद्ध सामान के **** मी.टन के कुल निर्यात में से संबद्ध सामान के 56 प्रतिशत निर्यात पाटित पाए गए हैं और 54 प्रतिशत भारतीय उद्योग को क्षति पहुंचाते हैं। संबद्ध सामान की चीन जन. गण. में एक्स-फेक्टरी निर्यात कीमत और भारत में पहुंच मूल्य का मूल्यांकन करने के प्रयोजनार्थ सहयोगी निर्यातक के उत्तर को, भाड़े, बीमा और अन्य संभार तंत्र के प्रभारों आदि के लिए समंजन किए जाने के प्रसंग में देखा गया है।

173. प्राधिकारी ने नोट किया है कि जांच अवधि के पश्चात एक वर्ष में चीन जन. गण. से तृतीय देशों को संबद्ध सामान के निर्यात **** मी.टन थे। जैसा कि पूर्व पैरा में उल्लेख किया गया है, सामान्य मूल्य और एनआईपी और समंजन के आधार पर पाटित और क्षतिपूर्ण निर्यात, कुल निर्यात के 90 प्रतिशत से भी अधिक बनते हैं। इसलिए इनसे यह स्पष्ट होता है कि संबद्ध सामान पर पाटन-रोधी शुल्क (एडीडी) को समाप्त किए जाने की स्थिति में ऐसे सामान के निर्यात की संभावना होगी।

174. थाईलैंड के संबंध में प्राधिकारी ने नोट किया है कि विश्व व्यापार एटलस के आंकड़ों के अनुसार जांच अवधि और जांच अवधि के पश्चात थाईलैंड से संबद्ध सामान के कुल निर्यात **** मी.टन से **** मी.टन के बीच हैं। सामान्य मूल्य को ध्यान में रखते हुए जैसा कि थाईलैंड में बाकी निर्यातकों के लिए परिकलित किया जाता है, एक्स-फेक्टरी निर्यात कीमत और भारत में पहुंच मूल्य के लिए एफओबी मूल्य के समंजन से थाईलैंड के वैश्विक निर्यात का 14 % भाग भारत में पाटित किया जाएगा और ऐसे निर्यात घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाएंगे। जांच अवधि पश्चात पाटित आयातों का मूल्य बढ़ कर 17% हो जाएगा। इसलिए ऐसी संभावना है कि संबद्ध सामान पर पाटन-रोधी शुल्क (एडीडी) को समाप्त किए जाने की स्थिति में ऐसे कुछ पाटित निर्यात का भारत में अपवर्तन हों और संबद्ध सामान भारत को क्षति पहुंचाएं।

175. मेसर्ज इंडोरामा जो कि थाईलैंड से संबद्ध सामान का एक उत्पादक/निर्यातक है, के मामले में प्राधिकारी ने नोट किया है कि पाटन-रोधी शुल्क (एडीडी) लगाए जाने के बावजूद जांच अवधि के दौरान मेसर्ज इंडोरामा के भारत को किए गए निर्यात, उसके उत्पादन के लगभग **** % बनते हैं। इस उत्पादक/निर्यातक के पास **** % की बेशी उपलब्धता भी है। इस उत्पादक/निर्यातक के लिए जांच अवधि में पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन दोनों ही सकारात्मक हैं।

176. प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के उत्पादकों/निर्यातकों के लिए क्षति मार्जिन का मूल्यांकन किया है जोकि इस प्रकार है :-

क्र.सं.	उत्पादक/ निर्यातक	पहुंच मूल्य (अम.डा./मी.)	क्षति रहित कीमत (अम.डा./मी.)	क्षति मार्जिन (अम.डा./मी.)	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन रेंज %
1.	मै. इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज, थाइलैंड	***	***	***	***	10-20%
1	थाइलैंड से अन्य उत्पादक/निर्यातक	***	***	***	***	10-20%
2	मै. जियांगशू हेंगली कैमिकल फाइबर कं. लि., चीन	***	***	न्यूनतम	न्यूनतम	न्यूनतम
2.	चीन से अन्य उत्पादक/निर्यातक	***	***	न्यूनतम	न्यूनतम	न्यूनतम

- चूंकि चीन जन.गण. से मै. जियांगशू और अन्य उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा भारत को जांच अवधि के बाद कोई निर्यात नहीं किया गया है, इसलिए भारत को तृतीय देशों के निर्यात का अपवर्तन करने की स्थिति में होने वाली संभावित क्षति का मूल्यांकन निम्नानुसार है:

क्र.सं.	उत्पादक/ निर्यातक	क्षति मार्जिन कीमत (अम.डा./मी.)	पहुंच मूल्य (अम.डा./मी.)	क्षति मार्जिन (अम.डा./मी.)	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन रेंज %
1.	मै. जियांगशू हेंगली कैमिकल फाइबर कं. लि., चीन *	***	***	***	***	0-10%
2.	चीन से अन्य उत्पादक/निर्यातक **	***	***	***	***	0-10%

* निर्यातकों की प्रश्नावली के उत्तर के अनुसार

** वर्ल्ड ट्रेड एटलस के अनुसार

ट. प्रकटन पश्चात् टिप्पणियां

177. घरेलू उद्योग और अन्य इच्छुक पक्षकारों द्वारा प्रकटीकरण के उपरांत निम्नलिखित टिप्पणियां/अनुरोध किए गए हैं :

घरेलू उद्योग

178. दिनांक 11.09.2015 के प्रकटन विवरण पर घरेलू उद्योग की ओर से की गई मुख्य टिप्पणियां निम्नानुसार हैं :-

क. मेसर्ज जिंगसू हेंगली केमिकल फाइबर कंपनी लिमिटेड, चीन और मेसर्ज इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज प्राईवेट कंपनी लिमिटेड, थाइलैंड को पृथक पाटन मार्जिन स्वीकृत नहीं करना।

179. मेसर्ज जिंगसू हेंगली केमिकल फाइबर कंपनी लिमिटेड, चीन और मेसर्ज इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज प्राईवेट कंपनी लिमिटेड, थाइलैंड ने अपने संबंधित पक्षकारों की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं और इसलिए वे सहयोगी निर्यातकों के रूप में माने जाने के हकदार नहीं हैं। ऐसे कथित सहयोगी निर्यातकों और उनसे संबंधित पक्षकारों में से प्रत्येक के ब्यौरे नीचे दिए गए हैं।

(क) मेसर्ज जिंगसू हेंगली केमिकल फाइबर कंपनी लिमिटेड, चीन (जिसे आगे "जिंगसू" संबोधित किया गया है) ने जिंगसू द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर के पृष्ठ 3 में बताया है कि जिंगसू डेली फाइबर कंपनी लिमिटेड, उसकी एक सहायक कंपनी है जो कि उसके पूर्ण स्वामित्वाधीन है और यह कंपनी संबंधित उत्पाद का विनिर्माण करती है। तथापि, जिंगसू ने अपने संबंधित पक्षकार, जिंगसू डेली फाइबर कंपनी लिमिटेड की ओर से प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं।

(ख) मेसर्ज इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज प्राइवेट कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड (जिसे आगे "मेसर्ज इंडोरामा" संबोधित किया गया है) : मेसर्ज इंडोरामा ने अपनी प्रश्नावली के उत्तर के पृष्ठ 4 में यह दावा किया है कि उसने अपने से संबंधित किसी भी पक्षकार को संबद्ध उत्पाद की कोई बिक्री नहीं की है। तथापि, वर्ष 2013 की इंडोरामा वेंचर्स की वार्षिक रिपोर्ट से यह सुस्पष्ट होता है कि मेसर्ज इंडोरामा ने संबद्ध उत्पाद की बिक्री अपने से संबंधित एक पक्षकार नामतः पीटी इंडोरामा सिंथेटिक्स टीबीके (जिसे आगे "पीटीआईआरएस" संबोधित किया गया है) को की है। उसकी वार्षिक रिपोर्ट के संबद्ध पृष्ठ, प्राधिकारी को प्रस्तुत किए गए दिनांक 24 अगस्त, 2015 के लिखित उत्तरों के अनुबंध-1 के रूप में संलग्न हैं। इसके अतिरिक्त यह भी निवेदन किया जाता है कि पीटीआईआरएस की अनेक बिक्री शाखाएं हैं जो कि श्री लंका, भारत, थाईलैंड और नेपाल में स्थित हैं तथा उसके प्रशासनिक कार्यालय यूनाईटेड किंगडम, हांगकांग और सिंगापुर में स्थित हैं। प्राधिकारी को प्रस्तुत किए गए दिनांक 24 अगस्त, 2015 के लिखित उत्तरों के साथ संलग्न अनुबंध - 2, पीटीआईआरएस की बिक्री शाखाओं के परिप्रेक्ष्य में हमारे दावे की पुष्टि करता है। संक्षिप्तता बनाए रखने के प्रयोजन से इसको दुबारा संलग्न नहीं किया गया है।

180. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग विनम्र प्रार्थना करता है कि जिंगसू और मेसर्ज इंडोरामा द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तरों को सीधे अस्वीकार कर दिया जाए क्योंकि उन्होंने अपने से संबंधित पक्षकारों के उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं। निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई अपूर्ण सूचना जांच को बाधित करती है और प्राधिकारी को, उनके और उनसे संबंधित पक्षकारों द्वारा किए गए निर्यातों/की गई बिक्रियों की तथ्य परक स्थिति की जांच करने से रोकती है। तदनुसार प्राधिकारी की मानक पद्धति को ध्यान में रखते हुए उन्हें पृथक पाटन मार्जिन की स्वीकृति भी नहीं दी जानी चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में प्राधिकारी का ध्यान, प्लेन मीडियम डेंसिटी फाईबर बोर्ड के मामले में लिए गए अंतिम निर्णय (एसएसआर जांच - संख्या 15/28/2013-डीजीएडी दिनांक 17 अगस्त, 2015) की ओर आकर्षित किया जाता है। यह सामान मूलभूत से चीन जन. गन., मलेशिया, थाईलैंड और श्री लंका से निकलता था अथवा निर्यातित होता था जिसमें प्राधिकारी ने विशेष रूप से यह उल्लेख किया था कि मेसर्ज डोंगभा एमडीएफ (एम) एसडीएन बीएचडी ने अपनी प्रश्नावली के उत्तर में यह बताया था कि मेसर्ज डोंगभा फाईबर बोर्ड एसडीएन बीएचडी एमडीएफ (डीएफबी) भी घरेलू बिक्रियां कर रहा है। डीएफबी, डीएमएम की एक संबद्ध कंपनी है और उसने प्रश्नावली का कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया था। इसलिए प्राधिकारी ने पद्धति के अनुसार मेसर्ज डोंगभा एमडीएफ (एम) एसडीएन बीएचडी, मलेशिया और मेसर्ज डोंगभा ग्लोबल सेल्स एसडीएन बीएचडी, मलेशिया के संबंध में कोई विशिष्ट पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया था। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग पुनः आग्रह करता है कि इस मामले की वस्तु स्थिति भी वैसी ही है और इसलिए प्राधिकारी एमडीएफ के मामले में निर्धारित किए गए उसी सिद्धांत का अनुपालन करने की कृपा करें। यह तथ्य कि उक्त मामले में निर्यातक के उत्तर को किन्हीं अन्य कारणवश भी खारिज किया जा सकता था, ऐसा वास्तविक कारक नहीं है जिससे सिद्धांत और पद्धति का, समान रूप से और गैर-पक्षपातपूर्ण ढंग से लागू करने से विचलन की अनुमति दी जाए।

यह तथ्य कि निर्यातक के उत्तर को अन्य कारणवश भी खारिज किया जा सकता था, यह ऐसा वास्तविक कारक नहीं है जिससे सिद्धांत और पद्धति का, समान रूप से और गैर-पक्षपातपूर्ण ढंग से लागू करने से विचलन की अनुमति दी जाए।

ख. क्षति और पाटन मार्जिन के लिए भारत को बेची गई कम मात्रा पर विचार नहीं किया जाए

181. प्राधिकारी की तर्क संगत पद्धति को ध्यान में रखते हुए संबद्ध देशों द्वारा निर्यात की गई मामूली मात्रा (अर्थात् 27 मी.टन) को, अंतिम जांच परिणाम के दौरान पृथक क्षति अथवा पाटन मार्जिन का निर्धारण करने का एक आधार नहीं माना जा सकता है। प्राधिकारी द्वारा इसी प्रकार का दृष्टिकोण, चीन जन.गण. से पीओवाई के मामले (एसएसआर जांच - संख्या 15/27/2010-डीजीएडी दिनांक 10 फरवरी, 2012) में भी अपनाया गया है।

182. यह समझना उपयुक्त होगा कि एसएसआर में पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ मामूली मात्रा को स्वीकार नहीं करने की मूल अवधारणा यह तथ्य है कि निर्यातकों को पुनरीक्षा की सही अवधि की जानकारी होती है, जिससे वे ऐसी विशेष अवधि के दौरान अपनी निर्यात कीमतों को चालाकी से बदल लेते हैं। सादर निवेदन है कि विश्व भर में इसी पद्धति को समान रूप से अपनाया जाता है।

ग. कथित सहयोगी निर्यातकों के भारत को निर्यात की बिक्रियों को डीजी प्रणाली डाटा में समायोजित किया जाए

183. कथित सहयोगी निर्यातकों के भारत को निर्यात की बिक्रियों का समाधान, डीजी प्रणाली के आंकड़ों के साथ किया जाना चाहिए ताकि प्राधिकारी की तर्कसंगत पद्धति को ध्यान में रखते हुए उनके दावों की परिशुद्धता सत्यापित की जा सके। प्राधिकारी ने चीन जन.गण. से ग्राफाईट इलेक्ट्रोड (संख्या 14/02/2013-डीजीएडी, दिनांक 19 नवंबर, 2014) सहित अनेक मामलों में यही दृष्टिकोण अपनाया है। प्राधिकारी के अनुशीलन के लिए ग्राफाईट इलेक्ट्रोड मामले में लिए गए अंतिम निर्णय के संबद्ध उद्धरण नीचे दिए गए हैं।

"निर्यातक मेसर्ज अनसीन के उत्तर की जांच करने के दौरान यह नोट किया गया है कि भारत को संबद्ध सामान के उनके निर्यात, डीजी प्रणालियों के रिकार्ड के समनुरूप नहीं थे, जिन्हें महानिदेशक, प्रणाली और आंकड़ा प्रबंधन से प्राप्त किया गया था, जो कि भारत को संबद्ध सामान की कारोबार-वार सूचना दर्शाते हैं। निर्यातक के उत्तर से विशेषकर यह नोट किया गया है कि निर्यातक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना, आयातकों के आंकड़ों से नहीं मिलती है। साथ ही यह भी नोट किया गया है कि भारतीय आयातकों से प्राप्त सूचना के अनुसार कंपनी को भारतीय आयातकों से प्राप्त भुगतान तथा साथ ही महानिदेशक, प्रणाली और आंकड़ा प्रबंधन से प्राप्त आंकड़े भी अनेक कारोबार के बारे में कंपनी द्वारा अपने रिकार्ड में दर्शाए गए भुगतान से नहीं मिलते हैं। विशेषकर आयातकों की प्रश्नावली के अनुसार एल्लोय स्टील प्लांट, एसएआईएल द्वारा किए गए भुगतान तथा महानिदेशक, प्रणाली और आंकड़ा प्रबंधन के अनुसार आंकड़े भी निर्यातकों द्वारा अनेक कारोबार में अपने दस्तावेजों में निर्यातकों द्वारा दर्शाए गए भुगतान से भिन्न हैं।"

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए दो सहयोगी नमूना उत्पादकों नामतः मेसर्ज फुशुन ओरियन्टल और मेसर्ज फंगदा से अधिप्राप्त किए गए संबद्ध सामान के लिए निर्यातक द्वारा दावा की गई निर्यात कीमत को प्राधिकारी द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है और संबद्ध निर्यातित सामान के संबंध में मेसर्ज अनसीन द्वारा किए गए निर्यात के लिए कोई भी पृथक पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया गया है।"

घ. पृथक पाटन मार्जिन स्वीकृत करने 5402470 के कोड से अन्य एचएस कोड में किए गए निर्यातों पर विचार नहीं किया जाए

184. संबंधित उत्पाद के एचएस कोड अर्थात् 5402470 में सूचित किए गए संबद्ध सामान पर ही विचार किया जाना चाहिए क्योंकि संबद्ध सामान का ही निर्यात भारत में किया गया है। अन्य एचएस कोड में सूचित किए गए उत्पादन को रिकार्ड में नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि अन्य एचएस कोड में सामान को अनुमोदित करने का एक मात्र प्रयोजन प्राधिकारी द्वारा लगाए गए पाटन-रोधी शुल्क का अपवंचन करना है।

185. 5402470 से अन्य एचएस कोड में निर्यातकों द्वारा किए गए निर्यात, यदि कोई है, का एक मात्र प्रयोजन, लगाए गए पाटन-रोधी शुल्क का अपवंचन करना है। इसलिए निर्यातकों को ऐसे शुल्कों का अपवंचन करने के लिए पृथक पाटन मार्जिन से पुरस्कृत नहीं किया जाना चाहिए।

ड. मूल जांच में लगाए गए शुल्क को जारी रखना

186. प्राधिकारी से अनुरोध है कि निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मूल जांच में लगाए गए शुल्क को निरंतर जारी रखा जाए।

- (क) मेसर्ज जिंगसू हेंगली केमिकल फाईबर कंपनी लिमिटेड, चीन और मेसर्ज इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज प्राईवेट कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड द्वारा प्रस्तुत की गई अपूर्ण सूचना को, प्राधिकारी द्वारा मानक पद्धति को ध्यान में रखते हुए पाटन और क्षति मार्जिन का परिकलन करने के लिए आधार नहीं माना जा सकता है।
- (ख) पाटन-रोधी शुल्क लगे होने के कारण संबद्ध देशों से मामूली मात्रा में निर्यात किए गए हैं और इसलिए प्राधिकारी द्वारा मानक पद्धति को ध्यान में रखते हुए इन्हें पाटन और क्षति मार्जिन का परिकलन करने के लिए आधार नहीं माना जा सकता है।
- (ग) संबंधित उत्पाद के एचएस कोड अर्थात् एचएस कोड 5402470 से अन्य एचएस कोड में निर्यातकों द्वारा किए गए निर्यात का एक मात्र उद्देश्य लागू पाटन-रोधी शुल्क का अपवंचन करना है। हमारे दावे की पुष्टि इस तथ्य से

होती है कि मूल जांच की जांच अवधि में एचएस कोड 5402470 में संबद्ध सामान के निर्यात की मात्रा 39,137 मी.टन सूचित की गई है जबकि वर्तमान जांच की जांच अवधि में संबद्ध देशों से निर्यातों के रूप में केवल 27 मी.टन की मात्रा सूचित की गई है। इसलिए इन परिस्थितियों में घरेलू उद्योग विनम्र अनुरोध करता है कि प्राधिकारी कृपया उन्हें पृथक पाटन मार्जिन स्वीकार नहीं करें।

- (घ) संबद्ध सामान के आयात की मात्रा 39,137 मी.टन (मूल जांच की जांच अवधि में) से घट कर केवल 27 मी.टन (वर्तमान जांच की जांच अवधि में) रह जाने से यह सुस्पष्ट होता है कि यदि पाटन-रोधी शुल्कों को हटा लिया जाता है तो पाटन होने की संभावना बनी रहेगी तथा यह स्वतः पाटन-रोधी शुल्कों को लगाए रखने को यथोचित ठहराता है।
- (ङ) मेसर्स जिगसू हेंगली केमिकल फाईबर कंपनी लिमिटेड, चीन ने संबद्ध उत्पाद की क्षमता को जो कि वर्ष 2010 में 100 थी (सूचकांक) वर्ष 2013 में बढ़ा कर 150 (सूचकांक) कर दिया है। इस तथ्य की पुष्टि उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर के पृष्ठ संख्या 21 से हो जाती है। इसलिए ऐसी ऐसी स्पष्ट संभावना है कि यदि प्राधिकारी द्वारा पाटन-रोधी शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो भारतीय बाजार, पाटित सामान के सैलाब से पट जाएगा।
- (च) संबद्ध देशों में निर्यातकों के पास संबद्ध उत्पाद की बेशी क्षमताएं उपलब्ध हैं। इनके ब्यौरे हमारे पहले के संप्रेषणों में पहले से ही प्रस्तुत किए जा चुके हैं और इसलिए संक्षिप्तता को बनाए रखने के लिए इन्हें यहां पुनः प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है।
- (छ) मेसर्स इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज प्राईवेट कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड ने अपने लिखित प्रत्युत्तर के पैरा 42 में विशेष रूप से यह स्वीकार किया है कि थाईलैंड के भीतर घरेलू कीमतें और विश्व भर में कीमतें, भारत में प्रचलित कीमतों से अधिक हैं। उक्त निर्यातक के ऐसे विवरण से सुस्पष्ट है और यह भारत में वर्तमान और संभावित पाटन को सुस्पष्ट रूप से स्वीकार करना है।
- (ज) सकारात्मक और विशेष संभावित क्षति और पाटन के मार्जिन का परिकलन, भारत से भिन्न देशों की और संबद्ध देशों की कीमतों के आधार पर गया है। इनके ब्यौरे हमारे पहले के संप्रेषणों में पहले से ही प्रस्तुत किए जा चुके हैं और इसलिए संक्षिप्तता को बनाए रखने के लिए इन्हें यहां पुनः प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है।

च. जैसा कि अन्य जांच में किया गया है, कथित सहयोगी निर्यातकों के निर्यात, उत्पादन और क्षमताओं की संपूर्ण संख्याओं का प्रकटन

187. प्राधिकारी से अनुरोध है कि प्राधिकारी की सुसंगत पद्धति को ध्यान में रखते हुए निर्यातकों के निर्यातों, उत्पादन और क्षमताओं के बारे में सुस्पष्ट विवरण प्रस्तुत करें। इस संबंध में प्राधिकारी का ध्यान, प्राधिकारी के निम्नलिखित निर्णयों की ओर आकर्षित किया जाता है।

- (i) चीन जन. गन., मलेशिया, थाईलैंड और श्री लंका से मूलतः निकलने वाले अथवा निर्यातित प्लेन मीडियम डेंसिटी फाईबर बोर्ड के मामले में लिए गए अंतिम निर्णय (एसएसआर जांच - संख्या 15/28/2013-डीजीएडी दिनांक 17 अगस्त, 2015) - पैरा 37 और
- (ii) चीन जन. गन. से डीआई पाईप्स (एसएसआर जांच - संख्या 15/1006/2012- डीजीएडी, दिनांक 4 सितंबर, 2013) - पैरा 76।

188. निर्धारित प्राधिकारी निरपवाद रूप से घरेलू उद्योग से आग्रह करता है कि वह अपने उत्पादन, क्षमता और घरेलू बिक्रियों के बारे में वास्तविक संपूर्ण आंकड़े, प्राधिकारी को प्रस्तुत किए गए आवेदन पत्र के गैर-विश्वसनीय पाठ में प्रस्तुत करें। घरेलू उद्योग द्वारा अपने उत्पादन, क्षमता और घरेलू बिक्रियों के बारे में प्रस्तुत किए गए वास्तविक संपूर्ण आंकड़ों का स्पष्ट उल्लेख बाद में प्राधिकारी के निर्णय में किया जाता है। इस मामले में भी प्राधिकारी द्वारा इसी उपागम को ध्यान में रखा गया है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए निवेदन किया जाता है कि संबद्ध नियमों और जारी किए गए व्यापारिक नोटिस के अंतर्गत निर्यातकों का भी यह दायित्व होता है कि वे हमें जांच अवधि के दौरान तथा पूर्ववर्ती 3 वर्षों के दौरान अपनी क्षमता, उत्पादन और निर्यात बिक्रियों के वास्तविक सम्पूर्ण विवरणों का सार्थक सारांश हमें प्रस्तुत करें।

189. प्राधिकारी द्वारा संबद्ध देशों से पाटित आयातों के खिलाफ पाटन-रोधी शुल्क लगाने के बतौर समय पर दिए गए संरक्षण के कारण मूल जांच के दौरान न केवल विद्यमान घरेलू उद्योग की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है बल्कि भारत में क्षमताओं में भी काफी वृद्धि हुई है। उपरोक्त दावों के समर्थन में उनके व्यौरे नीचे तालिका में दिए गए हैं।

विवरण	इकाई	मूल जांच अवधि (अक्टूबर 06 - सितंबर 07)	एसएसआर की जांच अवधि (अक्टूबर 12 - सितंबर 13)
भारतीय क्षमता	मी.टन	149038	628851
भारतीय क्षमता	प्रवृत्ति	100	422
भारत में मांग	मी.टन	190798	430994
भारत में मांग	प्रवृत्ति	100	226
भारत में उत्पादन	मी.टन	146293	472866
भारत में उत्पादन	प्रवृत्ति	100	323
भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियां	मी.टन	147139	430949
भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियां	प्रवृत्ति	100	293
मांग में भारतीय उत्पादकों के बाजार का हिस्सा	%	77.11	99.99
घरेलू लाभ/हानि (रूप ए /मी.टन)	सूचकांक	-15	39
घरेलू लाभ/हानि (रूप ए /मी.टन)	प्रवृत्ति	-100	260

* वर्तमान जांच अवधि के आंकड़े सत्यापन पश्चात अंतिम आंकड़ों पर आधारित हैं।

190. उपरोक्त तालिका में निर्दिष्ट सूचना से निम्नलिखित तथ्य सामने उभर कर आते हैं :

(क) क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि - संबद्ध देशों से पाटित आयातों के खिलाफ संरक्षण देने के साथ-साथ अनेक वर्षों से सीएजीआर के *** % की दर से इस देश में मांग बढ़ने को ध्यान में रखते हुए अब घरेलू उद्योग भारत में बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अपनी क्षमता को बढ़ाने की स्थिति में है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, पीयूसी के लिए नए आवेदनों के कारण भी मांग बढ़ी है। तदनुसार मूल जांच अवधि (अक्टूबर, 2006 - सितंबर, 2007) में भारतीय उद्योग की क्षमता 1,49,038 मी.टन से बढ़ कर इस पुनरीक्षा जांच की मूल जांच अवधि (अक्टूबर, 2012 - सितंबर, 2013) के दौरान 6,28,851 मी.टन हो गई है। घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि ऐसी स्थिति में शुल्कों को समाप्त करने से उद्योग के कार्य-निष्पादन और उन्नति की संभावनाओं पर गंभीर प्रहार होगा।

(ख) उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि - मूल जांच अवधि में भारतीय उद्योग का उत्पादन, 1,46,293 मी.टन से बढ़ कर इस पुनरीक्षा जांच अवधि के दौरान 4,72,866 मी.टन हो गया था जो कि देश में बढ़ रही मांग के समनुरूप थे तथा स्थिति यह थी कि संबद्ध देशों से आयात वस्तुतः हो ही नहीं रहे थे, जो इस तथ्य की पुष्टि करते थे कि वे यदि गैर-प्रतिस्पर्द्धी कीमतों पर भी बेचे जाते तो भी प्रतिस्पर्द्धी नहीं होते।

(ग) बिक्रियों में उल्लेखनीय वृद्धि - भारतीय उद्योग की बिक्रियों में भी इसी प्रकार की प्रवृत्ति देखी गई है। मूल जांच अवधि में क्षमता और उत्पादन 1,47,139 मी.टन से बढ़ कर पुनरीक्षा जांच अवधि के दौरान 4,30,949 मी.टन हो गया। इस प्रकार निसन्देह इस तथ्य की पुष्टि होती है कि यदि भारतीय उद्योग को पाटित आयातों से संरक्षित किया जाता है तो वह बढ़ रही मांग को पूरा कर सकता है और बाजार में हो रही वृद्धि का सार्थक मुकाबला कर सकता है।

(घ) बाजार के हिस्से में उल्लेखनीय वृद्धि - मूल जांच अवधि में मांग में घरेलू उत्पादकों के बाजार का हिस्सा 77.11 % से बढ़ कर जांच अवधि की पुनरीक्षा में 99.99 % हो गया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पाटित आयात प्रतिस्पर्द्धी नहीं हैं और यही कारण है कि जांच अवधि के दौरान वस्तुतः कोई आयात नहीं हुआ है। तथापि, ऐसे संकेत मिले हैं कि

वेईमान निर्यातक और आयातक, संबद्ध सामान का आयात, विभिन्न सीमा शुल्कों के शीर्षों के अंतर्गत कर सकते हैं ताकि पाटन-रोधी शुल्क का भुगतान करने से बचा जा सके। इसलिए हम प्राधिकारी से यह विनम्र अनुरोध करते हैं कि अन्य एचएस कोड में सूचित किए गए संबद्ध सामान को रिकार्ड में नहीं लिया जाए क्योंकि इनका एक मात्र उद्देश्य अन्य एचएस कोड में सामान को क्लीयर कराना अथवा प्राधिकारी द्वारा लगाए गए पाटन-रोधी शुल्कों का अपवंचन करना अथवा सीमा शुल्कों का भुगतान करने के प्रयोजनार्थ सामान का अवमूल्यन करना है। इसलिए हम प्राधिकारी से पुनः अनुरोध करते हैं कि वे जैसा उचित समझें, उपयुक्त कार्रवाई करने के लिए इस मुद्दे की जांच करें।

(ड) प्रति यूनिट लाभ में वृद्धि - जांच अवधि में घरेलू उद्योग का लाभ, प्रति यूनिट 15 (सूचकांक) से बढ़ कर जांच अवधि की पुनरीक्षा में 39 (सूचकांक) हो गया है। तथापि, यह लाभ अभी भी उस अनुकूलतम लाभ से कम है, जो कि उद्योग प्राप्त करने का हकदार है। पाटन-रोधी शुल्क को हटाने के परिणाम स्वरूप उद्योग के वित्तीय कार्य-निष्पादन पर निश्चय ही गंभीर प्रभाव पड़ेगा।

191. ऊपर व्यक्त किए गए मंतव्यों को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग प्राधिकारी से विनम्र अनुरोध करता है कि संबद्ध देशों के निर्यातकों को पृथक पाटन और क्षति मार्जिन स्वीकार नहीं करें तथा मूल जांच में लागू किए गए शुल्कों को निरंतर जारी रखें क्योंकि ऐसे शुल्कों को रद्द किए जाने से भारतीय उत्पादकों द्वारा किए गए अत्यधिक निवेश तथा भारतीय उद्योग के हित खतरे में पड़ जाएंगे।

इच्छुक पक्षकार

(i) **मेसर्स इंडोरामा पॉलिएस्टर इंडस्ट्रीज पब्लिक कंपनी लिमिटेड (जिसका आगे उल्लेख "मेसर्स इंडोरामा" के रूप में किया गया है)।**

डीजीएडी द्वारा जारी किए गए प्रकटन विवरण में मेसर्स इंडोरामा ने निम्नोक्त टिप्पणियां दी हैं :-

क. प्रदान नहीं की गई डीजीसीआईएंडएस, विश्व व्यापार एटलस और अन्य सूचना

192. प्राधिकारी ने थाईलैंड के लिए संभावित विश्लेषण करने के प्रयोजन से डीजीसीआईएंडएस के आयात आंकड़ों, विश्व व्यापार एटलस और अन्य सूचनाओं पर विश्वास किया है। मेसर्स इंडोरामा ने निवेदन किया है कि प्राधिकारी द्वारा जिस सूचना पर विश्वास किया है उसे उसको नहीं भेजा गया है न ही उसे जनता की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया है ताकि इच्छुक पक्षकार उसका लाभ उठा सकें। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए मेसर्स इंडोरामा ने आगे यह भी निवेदन किया है कि प्राधिकारी को मेसर्स इंडोरामा को निम्नलिखित सूचना देने से पहले इस मामले में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए और मेसर्स इंडोरामा को उन पर विश्लेषण करने और सार्थक टिप्पणियां देने का पर्याप्त समय मिल सके।

- (क) डीजीसीआईएंडएस के आंकड़े
- (ख) विश्व व्यापार एटलस के आंकड़े
- (ग) विश्व व्यापार एटलस के आंकड़े से संबंधित सामान को अभिज्ञात करने के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई क्रियाविधि
- (घ) सामान्य मूल्य का परिकलन
- (ङ) धारित मूल्य
- (च) **प्राधिकारी द्वारा विचारित समायोजन**

193. इसके अलावा, प्राधिकारी ने उपर्युक्त सूचना को गोपनीय के रूप में दावा करने के लिए कोई उचित कारण नहीं दिया है। माननीय भारतीय उच्चतम न्यायालय ने रिलायंस इंडस्ट्रीज बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (2006 (202) ईएलटी 23 (एस सी)) में यह कहा है कि इस प्राधिकारी को गोपनीयता का दावा करने के लिए नियम 7 और उसके अंतर्गत सीमाशुल्क (पाटित की जाने वाली वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, आकलन और संग्रहण तथा क्षति का निर्धारण), नियमावली, 1995 (इसके बाद "पाटनरोधी नियमावली, 1995" के रूप में संदर्भित) के अंतर्गत कोई अधिकार नहीं है। उच्चतम न्यायालय के निर्णय का संगत सार पुनः नीचे दिया गया है :

हमारे विचार से, नियम 7 गोपनीयता का दावा करने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को कोई अधिकार दिए जाने पर विचार नहीं करता है। नियम 7 में विशिष्ट रूप से यह प्रावधान है कि गोपनीयता का अधिकार उस पक्षकार तक सीमित है जिसने सूचना दी है तथा उस पक्षकार को निर्दिष्ट प्राधिकारी को संतुष्ट भी करना है कि यह मामला वास्तव में गोपनीय है। उस नियम में कहीं भी यह प्रावधान नहीं किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को गोपनीयता विशेष रूप से उस सूचना के संबंध में जो पक्षकार से संबंधित है, जिसने वह सूचना दी है, का दावा करने का कोई अधिकार नहीं है। वर्तमान मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी अपीलकर्ता को विस्तृत लागत के संबंध में सूचना प्रदान करने में असफल रहा है जिसके आधार पर एनआईपी की गणना की गई है। यद्यपि, अपीलकर्ता इस देश में विचाराधीन उत्पाद का एक मात्र उत्पादक था। हमारे विचार से यह स्पष्ट रूप से गैर-कानूनी था और इस पर नियम 7 द्वारा विचार नहीं किया गया था।

194. अतः प्राधिकारी से यह अपेक्षा है कि वह इस सूचना को प्रकट करे जिस पर इसने अपने विश्लेषण और निर्णय को आधारित करेगा। इस सूचना को प्रकट न किए जाने का मतलब पाटनरोधी नियमावली के नियम 7 के अंतर्गत इस पर लगाए गए दायित्वों का सीधा उल्लंघन माना जाएगा। उपर्युक्त सूचना को प्रकट न किए जाने से मै. इंडो रामा के बचाव का अधिकार प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ है।

195. इसके अलावा, माननीय भारतीय उच्चतम न्यायालय ने स्टैरलाइट इंडस्ट्रीज (इंडिया) लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (2003 (158) ईएलटी 673 (एस सी)) में निम्नलिखित का उल्लेख किया है:

“नियम 7 (3) के अंतर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि गोपनीयता की आवश्यकता नहीं है। यह कुछ मामलों में उस सूचना को दरकिनार कर सकते हैं। यह अवश्य ही याद रखा जाना चाहिए कि संगत सामग्री को दूसरे पक्षकार को उपलब्ध नहीं कराने से दूसरे पक्ष पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि उन्हें एक प्रभावकारी अपील दायर करने में दिक्कत आती है”।

196. इसके अलावा, सेस्टेट ने स्पष्ट रूप से बिरला एरीक्शन ऑप्टीकल्स बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (2004 (167) ईएलटी 163 (ट्राय-डेल)) में अपने निर्णय में यह कहा है कि “गोपनीयता किसी पक्षकार के केवल विशिष्ट वास्तविक, वाणिज्यिक आंकड़े पर लागू होते हैं”। यह नोट किया जाना चाहिए कि डी जी सी आई एंड एस तथा वर्ल्ड ट्रेड एटलस डेटा निर्यातकों से संबंधित हैं और इसका संग्रहण किसी एजेंसी/सरकारी प्राधिकारी द्वारा किया जाता है। इसलिए इसका घरेलू उद्योग के किसी विशिष्ट वाणिज्यिक आंकड़ों से संबंध नहीं है। उसको देखते हुए ऐसा कोई आधार नहीं था जिस पर गोपनीयता का दावा वर्ल्ड ट्रेड एटलस डेटा के संबंध में किया जा सकता था।

ख. पूर्व के निष्पत्तिक समीक्षा, इंडोनेशिया, मलेशिया, कोरिया जन.गण. और ताइवान (समाप्त) की तुलना में वर्तमान जांच में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में सुधार पर विचार नहीं करना।

197. प्रकटन विवरण के पैरा 141, 145, 146, 148, 152 और 157 में इस प्राधिकारी की टिप्पणियों का संदर्भ लिया जा रहा है।

198. उपर्युक्त पैराओं में की गई टिप्पणियां समग्र डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों के आधार पर कीमत में कटौती, कम कीमत पर बिक्री और पाटन मार्जिन के न होने के साथ-साथ घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में व्यापक सुधार का संकेत देता है। ये टिप्पणियां इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देश विशेष रूप से थाइलैंड से आयातों के कारण हुई क्षति नहीं हो रही है।

199. प्राधिकारी ने इस तथ्य के कारण दिनांक 16 अगस्त, 2012 के अंतिम जांच परिणाम संख्या 15/26/2010 (इसके बाद “पूर्व की पाटनरोधी जांच” के रूप में संदर्भित) के माध्यम से इंडोनेशिया, कोरिया जन.गण. मलेशिया और चीनी ताइपेई में उत्पादित अथवा वहां से निर्यातित पूर्ण रूप से निकाले गए यार्न के आयातों की तुलना में पाटनरोधी शुल्क की पूर्व की अंतिम निष्पत्तिक समीक्षा समाप्त कर दी थी कि घरेलू उद्योग स्वयं मूल शुल्क लगाए जाने के लिए अवधि के विस्तार की मांग करने में इच्छुक नहीं था। पूर्व के पाटनरोधी जांच में याचिका चार उत्पादकों नामतः मै. वेलनोन पोलिस्टर्स लि., मै. जेबीएफ इंडस्ट्रीज लि., मै. गार्डन सिल्क मिल्स लि. और मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. की ओर से सिंथेटिक फाइबर उद्योग संघ द्वारा दायर की गई थी।

200. मै. इंडोरामा ने विचाराधीन पाटनरोधी जांच और पूर्व के पाटनरोधी जांच में क्षति के संकेतकों की तुलना की है। इस तुलना से निम्नलिखित तथ्य प्रकट होते हैं :

- पूर्व के और विचाराधीन पाटनरोधी जांच में घरेलू उद्योग के बहुत क्षति संकेतकों में समान प्रवृत्ति देखी जाती है;
- यदि आवेदक घरेलू उत्पादक इस बात का दावा कर रहा है कि उन्हें अब क्षति हो रही है तब उन्हें पूर्व के पाटनरोधी जांच में पर्याप्त रूप से अधिक क्षति हो रही थी बजाए इसके कि उन्हें कथित रूप से अब क्षति हो रही है। इसके परिणामस्वरूप, यह प्रकटन होता है कि यदि पूर्व का अंतिम निर्णायक समीक्षा समाप्त कर दी गई होती तब वर्तमान अंतिम निर्णायक समीक्षा भी समाप्त हो जानी चाहिए।

201. मै. इंडोरामा यह तर्क दे रहा है कि विचाराधीन जांच भी समाप्त कर दी जानी चाहिए क्योंकि घरेलू उद्योग को कम से कम उतनी क्षति हो रही है जितना कि इसे पूर्व की पाटनरोधी जांच में हुई थी और अधिकतम क्षति के पर्याप्त रूप से कम स्तर तक जिसकी तुलना पूर्व की पाटनरोधी जांच में हुई क्षति से की जा सकती है।

202. पूर्व के और वर्तमान पाटनरोधी जांच में क्षति के संकेतकों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से सारांश रूप में व्यक्त किया जा सकता है :

विवरण	इकाई	2007-08 (पूर्व की जांच के लिए)/ 2010-11 (वर्तमान जांच के लिए)	2008-09 (पूर्व की जांच के लिए)/ 2011-12 (वर्तमान जांच के लिए)	2009-10 (पूर्व की जांच के लिए)/ 2012-13 (वर्तमान जांच के लिए)	जन. - दिस. '10 (जांच अवधि) (पूर्व की जांच के लिए)/ अक्टू. '12 - सितं. '13 (जांच अवधि) (वर्तमान जांच के लिए)
पूर्व की पाटनरोधी जांच में घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	83195	88478	106908	144669
पूर्व की पाटनरोधी जांच में मांग के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री	%	42%	43%	47%	52%
विचाराधीन पाटनरोधी जांच में घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	154434	183420	207173	220393
विचाराधीन पाटनरोधी जांच में मांग के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री	%	46%	49%	50%	51%
पूर्व के पाटनरोधी जांच में लाभ	सूचीबद्ध	(100)	(217)	(770)	(545)
विचाराधीन पाटनरोधी जांच में लाभ	सूचीबद्ध	100	(13)	16	39
पूर्व के पाटनरोधी जांच में संबद्ध देशों से आयात	मी.ट.	396	379	1438	2365
विचाराधीन पाटनरोधी जांच में संबद्ध देशों से आयात	मी.ट.	731	726	89	27
पूर्व के पाटनरोधी जांच में मांग	मी.ट.	195961	207534	229050	278583
विचाराधीन पाटनरोधी जांच में मांग	मी.ट.	339319	378121	412384	430994
पूर्व के पाटनरोधी जांच में कुल मांग का प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से आयात	%	0.2%	0.18%	0.62%	0.84%
वर्तमान जांच में कुल मांग के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से आयात	%	0.22%	0.19%	0.02%	0.01%

203. कुल मिलाकर पूर्व के और विचाराधीन पाटनरोधी जांच में क्षति के मानदंडों में उतार-चढ़ाव को निम्नलिखित तरीके से संक्षिप्त रूप में उल्लेख किया जा सकता है:

- i. पूर्व के पाटनरोधी जांच में, उत्पादन 2007-08 में 85631 मी.ट. से बढ़कर 2008-09 में 86599 मी.ट., 2009-10 में 109727 मी.ट. और जांच की अवधि में 158783 मी.ट. हो गया। वर्तमान पाटनरोधी जांच में, उत्पादन 2010-11 में 182966 मी.ट. से बढ़कर 2011-12 में 204803 मी.ट., 2012-13 में 224709 मी.ट. और जांच की अवधि में 244843 मी.ट. हो गया।
- ii. पूर्व की पाटनरोधी जांच में, मांग के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री 2007-08 में 42 प्रतिशत, 2008-09 में 43 प्रतिशत, 2009-10 में 47 प्रतिशत तक स्थिर रही और जांच की अवधि में इसमें मामूली वृद्धि होकर 52 प्रतिशत तक पहुंच गई। विचाराधीन पाटनरोधी जांच में, मांग के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री की प्रवृत्ति समान रही; यह 2010-11 में 46 प्रतिशत, 2011-12 में 49 प्रतिशत, 2012-13 में 50 प्रतिशत और जांच की अवधि में 51 प्रतिशत तक स्थिर रही।
- iii. पूर्व की पाटनरोधी जांच में, आयात में आंशिक वृद्धि हुई और यह 2007-08 में 396 मी.ट. से बढ़कर 2008-09 में 379 मी.ट., 2009-10 में 1438 मी.ट. और जांच की अवधि में 2365 मी.ट. हुई। विचाराधीन पाटनरोधी जांच में आयात में 2010-11 में 731 मी.ट. से कम होकर जांच की अवधि में 27 मी.ट. हो गई;
- iv. पूर्व के पाटनरोधी जांच में कुल मांग के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से आयात में आंशिक वृद्धि हुई और यह 2007-08 में 0.2 प्रतिशत से बढ़कर जांच की अवधि में 0.84 प्रतिशत हो गई। विचाराधीन पाटनरोधी जांच में, कुल मांग के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से आयात में 2010-11 में 0.22 प्रतिशत से घटकर जांच की अवधि में 0.01 प्रतिशत हो गई।
- v. पूर्व के पाटनरोधी जांच में 2007-08 में सूचीबद्ध मदों (100) से घाटे में वृद्धि होकर जांच की अवधि में सूचीबद्ध मदों का घाटा (545) हो गया। वर्तमान पाटनरोधी जांच में घरेलू उद्योग को लाभ हुआ। यद्यपि, 2010-11 में 100 सूचीबद्ध मदों से घटकर जांच की अवधि में 39 सूचीबद्ध मदों का घाटा हुआ।

204. पूर्व के पाटनरोधी जांच और वर्तमान पाटनरोधी जांच में क्षति के प्रमुख मानदंडों से संबंधित आंकड़ों की तुलना निम्नलिखित तालिका के माध्यम से व्यक्त की जा सकती है :

विवरण	पूर्व की पाटनरोधी जांच में प्रवृत्ति	विचाराधीन जांच में प्रवृत्ति
मांग के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की बिक्री	पूर्व की पाटनरोधी जांच में हिस्सा अपेक्षाकृत कम था।	पूर्व की पाटनरोधी जांच की तुलना में विचाराधीन जांच में हिस्सा अपेक्षाकृत अधिक है।
आयात	497% की वृद्धि	96% की कमी
लाभ/हानि	हानि 445% तक बढ़ी	लाभ 61% तक बढ़ा
मांग के प्रतिशत के रूप में आयात	0.2% से बढ़कर 0.84% हो गया।	0.22% से घटकर 0.01% हो गया।

205. उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि लाभ और घाटे जैसे क्षति के संकेतकों में, घरेलू उद्योग में वर्तमान जांच की तुलना में पूर्व की पाटनरोधी जांच में विश्लेषण किए गए क्षति की अवधि में बहुत ही खराब कार्य निष्पादन रहा था। मैसर्स इन्डोरामा उस मामले में यह समझ पाने में यह असफल रहा है कि पूर्व की पाटनरोधी जांच को समाप्त कर दिया जाना चाहिए था जबकि वर्तमान जांच में इसे जारी रखा जा रहा है। इसके अलावा प्रकटन विवरण में प्राधिकारी ने मैसर्स इन्डोरामा द्वारा किए गए उपरोक्त के संबंध में कोई टिप्पणी नहीं की है।

206 हालांकि मैसर्स इन्डोरामा के बारबार अनुरोध बावजूद, प्राधिकारी मैसर्स इन्डोरामा द्वारा उठाये गए इस महत्वपूर्ण मुद्दे की जांच करने में असफल रहा है। मैसर्स इन्डोरामा इस प्राधिकारी से अनुरोध करता है कि वह इस महत्वपूर्ण मुद्दे की जांच आलोचनात्मक ढंग से करें और यह अनुरोध करता है कि वर्तमान पाटनरोधी जांच को भी कम से कम थाईलैंड के विरुद्ध समाप्त किया जाना चाहिए।

ग. थाईलैंड और चीन जन.गण. से आयातों की अलग-अलग जांच

207. प्रकटन विवरण से यह देखा जा सकता है कि भारत में घरेलू उत्पादक की वर्तमान में कुल मांग का 99.99 प्रतिशत है और आयात मात्र 0.01 प्रतिशत है। मै. इंडोरामा ने इसके अलावा यह अनुरोध किया है कि प्राधिकारी को थाइलैंड और चीन जन.गण. में उत्पादित आयातों की अलग जांच करनी चाहिए। मै. इंडोरामा द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि यह भारत को संबद्ध वस्तुओं का बहुत मामूली मात्रा का ही निर्यात करता है।

208. इसके अलावा, जांच की अवधि के लिए अवतरित मूल्य चीन जन.गण. के लिए 78871 प्रति मी.ट. और थाइलैंड के लिए 86456 प्रति मी.ट. है जो आवेदक घरेलू उत्पादकों द्वारा दायर याचिका के अनुबंध-12 में दिया गया है। यह देखा जा सकता है कि थाइलैंड के लिए अवतरित कीमत चीन जन.गण. के लिए अवतरित कीमत की तुलना में अधिक है। इसके अलावा, यदि प्राधिकारी मै. इंडोरामा के आंकड़ों का विश्लेषण करते हैं तब यह देखा जा सकता है कि मै. इंडोरामा द्वारा निर्यात किए गए संबद्ध वस्तुओं की अवतरित कीमत थाइलैंड के लिए आवेदक घरेलू उत्पादकों द्वारा दिए गए आंकड़ों की तुलना में अधिक है।

209. प्राधिकारी का देश-वार विश्लेषण करने तथा किसी विशिष्ट देश की तुलना में जांच समाप्त करने की पद्धति है, यदि उस देश से आयात बहुत कम मात्रा में हुआ हो। मै. इंडोरामा का अनुरोध है कि थाइलैंड और चीन जन.गण. से आयातों का अलग-अलग विश्लेषण इस प्राधिकारी को दिए गए अधिकार क्षेत्र में है और प्राधिकारी ने स्वयं विगत में इस प्रकार के अनेक विश्लेषण किए हैं।

210. उपर्युक्त अनुरोधों के आलोक में, मै. इंडोरामा इस प्राधिकारी से यह अनुरोध करता है कि वह थाइलैंड से आयात और चीन जन.गण. से आयातों की अलग-अलग जांच करे।

घ. पाटन और क्षति के जारी रहने/उसके बार-बार होने की कोई संभावना नहीं है।

क. आयात की मामूली मात्रा

211. इस प्रकार से प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण के पैरा 136 में सही टिप्पणी की है कि संबद्ध देशों से आयात बहुत कम हुआ है। यह अनुरोध किया जाता है कि थाइलैंड से संबद्ध आयातों के कारण क्षति के बार-बार होने की कोई संभावना नहीं है। इसके अलावा, प्राधिकारी ने इसका उल्लेख नहीं किया है कि किस प्रकार से ऐसे मामूली आयात से घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।

212. इस प्राधिकारी की संबद्ध देश के विरुद्ध पाटनरोधी जांच समाप्त करने की एक स्थापित परंपरा है। जब उस देश से आयात की मात्रा बहुत ही कम हो। यह नोट किया जाना चाहिए कि चीन जन.गण. और स्वीडन में उत्पादित अथवा वहां से निर्यातित पेंटेरीश्रीटोल के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी जांच की निर्णायक समीक्षा में दिनांक 25 मार्च, 2011 के अंतिम जांच परिणाम में, प्राधिकारी ने टिप्पणी की थी कि स्वीडन से आयात बहुत कम मात्रा में आयात बहुत कम मात्रा में हो रहा था और इससे नकारात्मक पाटन और क्षति मार्जिन हो रहा था। ऐसे कारण से, प्राधिकारी ने स्वीडन में उत्पादित अथवा वहां से निर्यातित पेंटेरीश्रीटोल के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया।

213. इसके अलावा, चीन जन.गण. में उत्पादित अथवा वहां से निर्यातित ड्राइसेल बैटरियों के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा में दिनांक 20 मई, 2013 के अंतिम जांच परिणाम में इस प्राधिकारी ने पैरा 80 और 81 में यह माना कि पाटनरोधी शुल्क को आयात की कम मात्रा के कारण हटा लिया जाए।

214. प्राधिकारी का उपर्युक्त जांच परिणाम विचाराधीन जांच के तथ्यों पर ही लागू होते हैं। मै. इंडोरामा ने एक बार फिर इस तथ्य को दोहराया है कि कुल मांग के प्रतिशत के रूप में आयात जांच की अवधि में मात्र 0.01 प्रतिशत था।

215. यह सिद्धांत कि पाटनरोधी शुल्क जारी नहीं रखा जाना चाहिए जब किसी संबद्ध देश से किसी संभावना के विश्लेषण में मामूली निर्यात हुआ हो, ताइवान और तुर्की जहां आयोग ने आयात की बहुत कम मात्रा के कारण ताइवान से उत्पादित वस्तुओं के लिए निर्णायक समीक्षा समाप्त कर दी थी, में उत्पादित पालिएस्टर यार्न के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्कों के संबंध में दिनांक 10 जून, 1996 के इसके परिषद विनियम (ई सी) सं0 1074/96 में यूरोपीय आयोगों द्वारा लागू की गई थी। आयोग की संगत टिप्पणियां यहां दी गई हैं :

“ताइवान के पीओवाई का आयात 1991 में 2812 टन (बाजार हिस्से का 2.4 प्रतिशत) से घटकर 1992 में 1117 टन (बाजार हिस्से का 0.9 प्रतिशत), 1993 में 551 टन (बाजार हिस्से का 0.5 प्रतिशत) और जांच की अवधि के दौरान 448 टन (बाजार हिस्से का 0.4 प्रतिशत) हो गया। इस संबंध में यह नोट किया जाए कि तीन प्रमुख ताइवानी उत्पादक किसी

पाटनरोधी शुल्क के अध्यक्षीन नहीं थे। जब इन तीन उत्पादकों से आयात को बाहर किया गया जो समीक्षा जांच से संबंधित नहीं हैं, ताइवान से शेष आयातों द्वारा धारित सामुदायिक बाजार हिस्सा केवल 0.1 प्रतिशत होता है। उपलब्ध सूचना यह दर्शाती है कि ताइवान के उत्पादकों ने अपने निर्यात को अन्य तीसरे देशों, जो भौगोलिक रूप से नजदीक थे, की ओर पूर्वाभिमुख किया है जहां पीओवाई के लिए एक स्थिर विकास दर्ज किया जा रहा है। इसके अलावा, ये उत्पादक काफी अधिक सीमा तक डाउन स्ट्रीम उत्पाद, पीटीवाई की ओर स्पष्ट रूप से आगे बढ़े हैं। फलस्वरूप, कोई उचित संकेत नहीं है कि ताइवान में उत्पादित पीओवाई के आयातों पर पाटनरोधी उपायों के समाप्त होने से सामुदायिक उद्योग को बार-बार क्षति अथवा क्षति का खतरा होगा।”

216. वर्तमान मामले में यह स्पष्ट है कि आयातों की मात्रा बहुत कम है जिससे संबद्ध आयातों की मात्रा द्वारा घरेलू उद्योग को क्षति के बार-बार होने की कोई संभावना मौजूद नहीं है। यह सिद्ध हो गया है कि भारत में घरेलू उत्पादक वर्तमान में कुल मांग का 99.99 प्रतिशत पूरा करते हैं और आयात मात्र 0.01 प्रतिशत होता है।

217. जब आयात बहुत कम है और कीमत में कटौती/कम कीमत पर बिक्री नकारात्मक हो, तब प्राधिकारी ने पाटनरोधी शुल्क को कभी भी जारी नहीं रखा है। इस प्रकार से मै. इंडोरामा का अनुरोध है कि प्राधिकारी इंडोनेशिया, कोरिया, मलेशिया और चीनी ताइपेई से पूर्ण रूप से निकाले गए यार्न के आयातों के विरुद्ध पाटनरोधी जांच समाप्त करने के अपने निर्णय के अनुरूप वर्तमान जांच को भी समाप्त करे।

ख. पाटन और क्षति मार्जिन का आकार

218. पाटन के मार्जिन के संबंध में प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण के पैरा 152 और 157 में परस्पर विरोधी टिप्पणियां की हैं।

219. प्रकटन विवरण के पैरा 173 में, प्राधिकारी ने थाइलैंड के लिए एक धनात्मक संभावना विश्लेषण किया।

220. प्रकटन विवरण के पैरा 152 में प्राधिकारी डी जी सी आई एस के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पाटन मार्जिन नकारात्मक है। इसके अलावा, पैरा 157 में, प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि कम कीमत पर बिक्री नहीं हुई है। हालांकि पैरा 173 में प्राधिकारी ने अप्रकटित वर्ल्ड ट्रेड एटलस आंकड़ों पर विश्वास किया है और यह टिप्पणी की है कि थाइलैंड के वैश्विक निर्यात का 14 प्रतिशत पाटित किया जाएगा और यह घरेलू उद्योग के लिए क्षतिकर होगा। इस संबंध में मै. इंडोरामा निम्नलिखित अनुरोध करना चाहते हैं :-

- क. प्राधिकारी ने मै. इंडोरामा को उनके द्वारा अनुरोध किए जाने के बावजूद वर्ल्ड ट्रेड एटलस डेटा प्रदान नहीं किया है। इसलिए, मै. इंडोरामा विश्लेषण के प्रयोजन से प्राधिकारी द्वारा आधार माने गए वर्ल्ड ट्रेड एटलस डाटा की सत्यता पर किसी प्रकार की टिप्पणी करने की स्थिति में नहीं है।
- ख. इसके अलावा, यह पता नहीं चला है कि किस प्रकार से प्राधिकारी ने वर्ल्ड ट्रेड एटलस डाटा से संबद्ध वस्तुओं से संबंधित सूचना/डाटा को अलग किया है। प्राधिकारी द्वारा प्रकटन विवरण में किसी पद्धति का उल्लेख नहीं किया गया है। इसके अलावा, प्राधिकारी द्वारा इस संबंध में कोई सूचना नहीं दी गई है कि किस प्रकार से ग्रेडवार पृथक्करण किया गया है।
- ग. प्राधिकारी के पास मै. इंडोरामा तथा थाइलैंड से अन्य उत्पादकों के वास्तविक आंकड़े हैं। वास्तविक सत्यापित आंकड़ों पर विश्वास करने के बजाए प्राधिकारी अप्रमाणित स्रोत पर विश्वास कर रहे हैं और उसे मै. इंडोरामा को प्रकट भी नहीं किया गया है। प्राधिकारी का यह दृष्टिकोण अस्वीकार्य है और साथ ही यह बिना तर्क के है।
- घ. इसके अलावा, यह नोट किया जाना चाहिए कि संबद्ध वस्तु अनेक श्रेणियों में उपलब्ध हैं। इन श्रेणियों की कीमतें डेनियर और फिलामेंट पर निर्भर करते हुए बिल्कुल अलग हैं। इसके अलावा, कुछ श्रेणियां ऑफ श्रेणी (निम्नतर गुणवत्ता) की हैं। प्राधिकारी ने अपने वर्तमान विश्लेषण को भारित औसत आधार पर आधारित किया है जो विभिन्न श्रेणियों के बीच पर्याप्त कीमत अंतर को देखते हुए विश्लेषण करने के लिए सही पद्धति नहीं है। यह सही रूप से सिद्ध किया हुआ और ज्ञात तथ्य है कि ऑफ श्रेणी एक निम्नतर श्रेणी है जिसकी बिक्री कीमत उतनी अधिक नहीं है जितनी कि समान श्रेणी की। इसके अलावा, इन श्रेणियों को ग्राहकों द्वारा एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग नहीं किया जा सकता है। तथापि, संभावना का विश्लेषण करते समय प्राधिकारी ने इस महत्वपूर्ण तथ्य को पूर्ण रूप से दरकिनार कर दिया है और सभी विश्लेषण एक श्रेणी के रूप में संबद्ध वस्तुओं पर विचार करते हुए भारित औसत

आधार पर किया गया है। इसलिए प्राधिकारी को इस बात का विश्लेषण अवश्य करना चाहिए कि किस श्रेणी का निर्यात भारत में किया जाता है और उन्हीं श्रेणियों की कीमतें क्या हैं जब उन्हें थाइलैंड से तीसरे देशों अथवा घरेलू बाजार को निर्यात किया जाता है। प्राधिकारी को पीसीएन से पीसीएन तुलना करनी चाहिए।

ग. अतिरिक्त क्षमता

221. यह भी नोट किया जाना है कि प्राधिकारी द्वारा क्षति के बार-बार होने की संभावना के संबंध में किया गया विश्लेषण व्यापक रूप से केवल चीन जन.गण. से संबंधित है। ऐसा कोई अनुरोध/साक्ष्य नहीं है जिसकी जांच थाइलैंड से आयातों के कारण क्षति की संभावना के संबंध में की गई है।
222. प्राधिकारी ने थाइलैंड में अतिरिक्त क्षमताओं के होने के संबंध में साक्ष्य नहीं दिया है और न ही किसी साक्ष्य की जांच की है। सभी विश्लेषण चीन जन.गण. में अतिरिक्त क्षमताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग द्वारा थाइलैंड में आधारित निर्यातकों के संबंध में किसी अतिरिक्त क्षमताओं के संबंध में कोई अनुरोध नहीं किया गया है। मै. इंडोरामा द्वारा प्राधिकारी को प्रस्तुत आंकड़ों से यह देखा जा सकता है कि इसमें संबद्ध वस्तुओं के लिए कोई बहुत अधिक अतिरिक्त क्षमता नहीं है।
223. मै. इंडोरामा प्राधिकारी द्वारा नीचे दिए गए अनुसार प्रकटन विवरण के पैरा 174 में की गई टिप्पणी का उत्तर देना चाहेगा :

I. घरेलू बिक्री कीमत और तीसरे देशों को निर्यात कीमत

224. थाइलैंड में संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्री कीमत भारत को संबद्ध वस्तुओं की निर्यात कीमत की तुलना में अधिक है। निर्यातक के प्रश्नावली के उत्तर के परिशिष्ट 2-क में यह देखा जा सकता है कि मै. इंडोरामा की औसत घरेलू बिक्री कीमत *** टीएचबी/किग्रा. है जबकि भारत को इसकी औसत निर्यात कीमत मात्र *** टीएचबी/किग्रा. है। इस कारण से मै. इंडोरामा को अपनी घरेलू बाजार बिक्री का त्याग करने तथा इन बिक्रियों को भारत में करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं दिया गया है।
225. तीसरे देशों को संबद्ध वस्तुओं की निर्यात की कीमत भारत को संबद्ध वस्तुओं की निर्यात कीमत की तुलना में अधिक है। निर्यातक के प्रश्नावली के उत्तर के परिशिष्ट 2-क में यह देखा जा सकता है कि मै. इंडोरामा की औसत निर्यात कीमत *** टीएचबी/किग्रा. है जबकि भारत को इसकी औसत निर्यात कीमत मात्र *** टीएचबी/किग्रा. है। इस कारण से मै. इंडोरामा को अपने निर्यात का त्याग करने तथा इन बिक्रियों को भारत में करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं दिया गया है।
226. उपर्युक्त अनुरोध से यह स्पष्ट है कि भारत द्वारा पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किए जाने की स्थिति में मै. इंडोरामा को अपनी घरेलू बिक्री अथवा निर्यात तीसरे देशों को भारत को करने के लिए कोई वाणिज्यिक प्रोत्साहन नहीं दिया गया है। प्राधिकारी इस महत्वपूर्ण तथ्य की जांच करने में असफल रहे हैं और उसके लिए कोई जांच परिणाम नहीं दिया गया है।

II. मै. इंडोरामा के पास उपलब्ध क्षमता

227. निर्यात की प्रश्नावली के उत्तर के परिशिष्ट 4 में यह देखा जा सकता है कि इसकी संस्थापित क्षमता *** मी.ट. है। जांच की अवधि में मै. इंडोरामा ने पूर्ण रूप से निकाली गई यार्न के *** मी.ट. का उत्पादन किया है जिसके द्वारा यह *** % की क्षमता उपयोग दर पर कार्य कर रहा है। अतः मै. इंडोरामा क्षमता उपयोग के आदर्शतम स्तर पर कार्य कर रहा है और इसके पास बहुत कम अप्रयुक्त क्षमता अर्थात् केवल *** % बची हुई है। इस कारण से मै. इंडोरामा द्वारा भारत को अपना निर्यात बढ़ाने की संभावना बहुत कम है क्योंकि यह पहले से आदर्शतम क्षमता उपयोग पर कार्य कर रहा है।
228. यदि हम इस पर विचार करते हैं कि मै. इंडोरामा भारत को अपनी अनुप्रयुक्त क्षमता का निर्यात करने का विकल्प चुनता है जो लगभग *** मी.ट. है, ये निर्यात भारत में कुल मांग का लगभग 0.77 प्रतिशत ही होंगे। अतः इस बात को मानते हुए भी कि मै. इंडोरामा 100 प्रतिशत क्षमता उपयोग पर कार्य करता है और अपनी अनुप्रयुक्त क्षमता को

भारत की ओर भेजता है, तब इसका भारत में घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह नोट किया जाए कि संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा बहुत कम है और यह भारत में कुल मांग का केवल 0.01 प्रतिशत (अधिकतम 0.5 प्रतिशत) है। इस बात से यह सिद्ध होता है कि मै. इंडोरामा द्वारा संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण आवेदक घरेलू उद्योगों को पाटन और क्षति की कोई संभावना अथवा उसका बार-बार होना नहीं है।

229. इसके अलावा, अतिरिक्त क्षमताओं के दावे के संबंध में यह अनुरोध किया जाता है कि अतिरिक्त क्षमताओं की मौजूदगी मात्र क्षति के बार-बार होने की संभावना को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है। **अतिरिक्त क्षमताओं के मौजूद होने का कोई प्रमाण कम कीमत पर आयातों की मौजूदगी के साथ प्रस्तुत किया जाना अपेक्षित है जिसे वर्तमान मामले में सिद्ध नहीं किया गया है।** भारतीय स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2004 (170) ईएलटी 144 (ट्राई-दिल्ली) के मामले में यह माना गया है कि अतिरिक्त उत्पादन क्षमता की मौजूदगी को स्पष्ट रूप से पूर्वानुमान किए जाने वाले और क्षति के आसन्न खतरे के रूप में नहीं लिया जा सकता है। इसके अलावा, प्राधिकारी स्वयं अन्य जांचों में अर्थात् यूएसए और जापान से एनीलाइन पर निर्णायक समीक्षा जांच में इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं (दिनांक 17 जनवरी, 2012 के इसके अंतिम जांच परिणाम का पैरा 73)।
230. इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि मै. इंडोरामा के पास कोई अतिरिक्त क्षमता नहीं है जिससे भारत में घरेलू उत्पादक प्रभावित होंगे। प्राधिकारी ने इसके संबंध में भी कोई कारण नहीं दिया है कि किस प्रकार से ऐसी अतिरिक्त क्षमता का संभावित उपयोग भारत को निर्यात के लिए किया जाएगा।

ढ. कीमत ह्रास और न्यूनीकरण

231. प्रकटन विवरण के पैरा 143 में प्राधिकारी ने टिप्पणी की है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत लागत में वृद्धि के अनुरूप नहीं बढ़ी है। इस संबंध में हम इस प्राधिकारी का ध्यान संबद्ध देशों से आयातों की बहुत कम मात्रा की ओर आकर्षित करना चाहेंगे। आयातों की इतनी कम मात्रा भारत में कीमतों का निर्धारण नहीं कर सकती है। इसके अलावा, प्राधिकारी को उन श्रेणियों की कीमतों की तुलना करनी चाहिए जिसका आयात भारत में संबद्ध देशों से किया जाता है।

ण. पाटन मार्जिन निर्धारण

232. जांच की अवधि के दौरान मै. इंडोरामा ने भारत को विभिन्न श्रेणियों का निर्यात किया है। इसके अलावा, ये निर्यात दो प्रकार की श्रेणियों का हुआ है (समान और ऑफ)। यह सही ढंग से सिद्ध किया हुआ और ज्ञात तथ्य है कि ऑफ श्रेणी एक निम्नतर श्रेणी है जिससे संभवतः अपेक्षाकृत कम कीमत प्राप्त होगी। तथापि, मै. इंडोरामा के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण करते समय, प्राधिकारी ने समान आधार पर समान श्रेणी और ऑफ श्रेणी पर विचार किया है और सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए भारित औसत लागत को लागू किया है तथा सभी श्रेणियों पर विचार पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए किया गया है। इस संबंध में मै. इंडोरामा का अनुरोध है कि प्राधिकारी को समान से समान तुलना करनी चाहिए और केवल उन्हीं श्रेणियों जिनका निर्यात भारत में किया गया है, की निर्यात कीमत की तुलना पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए प्रत्येक श्रेणी की घरेलू बिक्री कीमत से करना चाहिए।
233. प्राधिकारी ने मूल जांच के पैरा 63, जिसमें केवल उन्हीं पीसीएन पर विचार पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए किया गया था जिसका निर्यात भारत में किया गया था, में समान पीसीएन से पीसीएन विश्लेषण किया है।

त. क्षति मार्जिन का निर्धारण

234. इसी प्रकार से क्षति मार्जिन और क्षति रहित कीमत का निर्धारण करने के लिए, प्राधिकारी को समान और ऑफ श्रेणी के साथ प्रत्येक श्रेणी के लिए पृथक् रूप से क्षति मार्जिन और क्षति रहित कीमत का निर्धारण करना चाहिए क्योंकि ये श्रेणियां एक-दूसरे से तुलनीय नहीं हैं। इसके अलावा, इन श्रेणियों का उपयोग एक-दूसरे के स्थान पर ग्राहकों द्वारा नहीं किया जा सकता है। इसलिए प्राधिकारी को प्रत्येक ग्रेड के लिए क्षति मार्जिन और क्षति रहित कीमत का अलग-अलग निर्धारण करना चाहिए जैसा कि मूल जांच में किया गया है।

थ. पूरे नाम का उल्लेख करने के लिए अनुरोध

235. हम प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे मूल मांच परिणाम के अनुरूप अंतिम जांच परिणाम में मै. इंडोरामा पालिस्टर इंडस्ट्रीज पब्लिक कंपनी लि. के पूरे नाम का उल्लेख करें।

द. प्रार्थना

236. दिए गए सत्य कथन और इस अनुरोध में दिए गए साक्ष्य के आलोक में, मै. इंडोरामा विनम्रतापूर्वक प्राधिकारी से यह अनुरोध करता है कि वे इस निष्कर्ष पर पहुंचें कि थाइलैंड से आयातों पर पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की आवश्यकताएं वर्तमान समीक्षा जांच में पूरी न हो।

237. यह प्रार्थना की जाती है कि मै इंडोरामा को न दी गई सूचना इस जांच की कार्रवाई शुरू करने के पूर्व मै. इंडोरामा को उपलब्ध कराई जानी चाहिए और नए सार्वजनिक सुनवाई के रूप में सुनवाई किए जाने का एक अवसर मै. इंडोरामा के हित के विरुद्ध कोई निर्णय लिए जाने के पूर्व मै. इंडोरामा को अवश्य दिया जाना चाहिए।

238. वर्तमान अनुरोध इस प्राधिकारी द्वारा प्रकट किए गए तथ्यों के आधार पर दायर किया गया है। यदि प्राधिकारी द्वारा संसूचित किए गए तथ्यों में अथवा पाटन मार्जिन में किसी प्रकार का परिवर्तन होता है तब मै इंडोरामा को एक सुनवाई का अवसर दिया जाए तथा मै. इंडोरामा को किसी निर्धारण किए जाने के पूर्व टिप्पणियां करने के लिए एक अवसर प्रदान किया जाए।

(ii) मै. जियांगशू हेंग्ली कैमिकल फाइबर कंपनी लिमिटेड (इसके बाद "मै. जियांगशू")

239. निर्यातक मै. जियांगशू के लिए अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण: पैराग्राफ 100 में यह टिप्पणी की गई है कि "निर्यातक मै. जियांगशू द्वारा किए गए निर्यातों की मात्रा बहुत कम है और इसे वास्तविक के रूप में नहीं माना जा सकता है तथा पाटन मार्जिन के अलग मूल्यांकन के लिए इसे अपनाया नहीं जा सकता है।"

240. यह विनम्र अनुरोध है कि निर्यातक द्वारा भारत को किए गए निर्यातों के संबंध में सूचना निर्यातक द्वारा रखे गए रिकॉर्डों के अनुसार इसका वास्तविक निर्यात है और इसलिए निर्यातक के लिए अलग पाटन मार्जिन से कम मात्रा के आधार पर इंकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि इसका कोई कानूनी अथवा तार्किक आधार नहीं है। यदि निर्यातकों की कम मात्रा के कारण पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं करने के लिए कानून का कोई आशय होता तब संबंधित प्रावधानों को पाटनरोधी कानूनों के अंतर्गत शामिल किया जा सकता था। पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए संबद्ध वस्तुओं के सापेक्ष अथवा कम आयातों को दरकिनार करने के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 10 और 17 अथवा सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 9 क में ऐसा कोई कानूनी प्रावधान नहीं है।

241. भारतीय पाटनरोधी कानून में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसमें निर्यात की कम मात्रा के आधार पर इसके पाटन मार्जिन के निर्धारण के लिए किसी निर्यातक को अलग बर्ताव से इंकार किया जा सके। धारा 9 क (6) द्वारा यह अनिवार्य बनाया गया है कि पाटनरोधी जांच में किसी निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण वास्तविक आयातों के लिए दी गई सूचना तथा निर्यातक अथवा उत्पादक द्वारा रखे गए रिकॉर्डों के आधार पर किया जाएगा। माननीय प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे निम्नलिखित जांच परिणामों की ओर अपना ध्यान आकर्षित करें जिसमें पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नलिखित प्रावधानों का पालन करते हुए संबद्ध देशों से आयातों की निम्न मात्रा के बावजूद किया गया था :

क्र.सं..	मामला
1	चीन जन.गण. और इंडोनेशिया (एसएसआर) से फ्लोट ग्लास
2	चीन जन.गण. (एसएसआर) से पीओवाई।
3	चीन जन.गण. और थाइलैंड (एसएसआर) से ब्यास टायर्स
4	जापान और ताइवान (एसएसआर) से पेंटेरीश्रीटोल
5	चीन, ताइवान, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाइलैंड और कोरिया (एसएसआर) से नाइलोन फिलामेंट यार्न।
6	कोरिया से फिनॉल (एम टी आर)

242. माननीय प्राधिकारी निर्यातक द्वारा इसके अलग-अलग पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए वास्तविक निर्यातों की सूचना पर विचार कर सकते हैं।
243. निर्यातक की सूचना की कोई संभावना विश्लेषण नहीं हुआ है। हम माननीय प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे वर्तमान जांच में मै. जियांगशू का संभावना विश्लेषण करें। हम निर्यातक की संभावना विश्लेषण के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध भी करना चाहते हैं:
- चूंकि मै. जियांगशू का पाटन मार्जिन वर्तमान जांच में न्यूनतम है, अतः पाटन की कोई संभावना नहीं है। अन्य देशों को उनकी निर्यात कीमतों के आधार पर भी किसी प्रकार का पाटन नहीं होगा।
 - मै. जियांगशू का प्रमुख बल घरेलू बाजार में है जहां इसमें कैलेंडर वर्ष 2007 की तुलना में कैलेंडर वर्ष 2013 में अपनी बिक्री 73 प्रतिशत से अधिक बढ़ाई है। निर्यातक ने उपर्युक्त अवधि में अन्य देशों को अपनी बिक्री में भी 47 प्रतिशत से अधिक वृद्धि की है।
 - चूंकि मै. जियांगशू के उत्पादन के लिए घरेलू बाजार में बहुत अधिक वृद्धि है, अतः निर्यातक घरेलू बाजार और अन्य देशों को निर्यात पर अपना ध्यान केन्द्रित करते रहेंगे जहां यह अपनी बिक्री को बढ़ाने में सक्षम रहा है।
 - भारत में मै. जियांगशू का कोई आवश्यक बिक्री वितरण चैनल नहीं है और वह निर्यातक के लिए भारतीय बाजार में अपने माल की आपूर्ति करने में एक बाधा है।
 - निर्यातक की निर्यात कीमतों के आधार पर कीमत में कटौती और कम कीमत पर बिक्री दोनों नकारात्मक हैं।
244. उपर्युक्त को देखते हुए यह पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि मै. ज्ञान सुपर पाटनरोधी शुल्कों लगाने का कोई मामला नहीं बनता है क्योंकि कोई वर्तमान पाटन मार्जिन नहीं हुआ है और न ही निर्यातक द्वारा पाटन की कोई संभावना है।
245. प्रकटन विवरण के पैरा 170 में यह टिप्पणी की गई है कि अन्य देशों में मै. जियांगशू की कीमतें भारतीय कीमतों की तुलना में कम है। यह अनुरोध किया जाता है कि ऐसी टिप्पणियों से पाटन की संभावना के संबंध में कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है। इसलिए निर्यातक द्वारा अन्य देशों को निर्यात कीमतों के आधार पर पाटन मार्जिन विश्लेषण से केवल इस प्रकार का निष्कर्ष निकाला जा सकता है और न कि अन्य प्रकार से। इस कारण से हम माननीय प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे उपर्युक्त पैरा में निकाले गए निष्कर्ष में सुधार करें। इसके अलावा, हम यह भी अनुरोध करना चाहते हैं कि मै.; जियांगशू द्वारा अन्य देशों को निर्यात कीमतों के आधार पर भी कोई पाटन नहीं होगा।
246. वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग की संरचना में स्थान और परिवर्तन के संबंध में हमारे अनुरोधों को प्रकटन विवरण में शामिल कर दिया गया है। तथापि, उसका समाधान नहीं किया गया है और घरेलू उद्योग की संरचना में परिवर्तन के लिए प्रकटन विवरण में कोई कारण अथवा विश्लेषण नहीं दिया गया है। हम माननीय प्राधिकारी से अनुरोध करना चाहेंगे कि वे अंतिम जांच परिणाम में घरेलू उद्योग की संरचना में कारण और विश्लेषण संबंधी परिवर्तन के लिए हमारी चिंताओं का समाधान करें।
247. अत्यधिक गोपनीयता के संबंध में हमारी चिंताओं को प्रकटन विवरण में शामिल कर लिया गया है। हालांकि इसका समाधान नहीं किया गया है। हम माननीय प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे अंतिम जांच परिणाम में गोपनीयता से संबंधित हमारी चिंताओं का समाधान करें।
248. हमारे उपर्युक्त अनुरोधों और पूर्व में किए गए अनुरोधों को देखते हुए वर्तमान जांच में हमारे द्वारा दिए गए अभ्यावेदन में निर्यातक के विरुद्ध शुल्कों को जारी रखने का कोई मामला नहीं बनता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

249. घरेलू उद्योग तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन पश्चात की गई टिप्पणी/किए गए अनुरोधों की समुचित रूप से प्राधिकारी द्वारा संगत मानी गई सीमा से कम सीमा तक जांच की गई है।

250. प्राधिकारी मै. जियांगशू हेंगली कैमिकल फाइबर कंपनी लि., चीन (इसके बाद “मै. जियांगशू”) को एक अलग पाटन मार्जिन दिए जाने के संबंध में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों को नोट करते हैं।

251. मै. जियांगशू डेली द्वारा प्रत्युत्तर नहीं दिए जाने के संबंध में घरेलू उद्योग के अनुरोधों को नोट करते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. जियांगशू डेली ने जांच की अवधि के दौरान भारत में विचाराधीन उत्पाद का निर्यात नहीं किया है और इसलिए प्रश्नावली के उत्तर में मै. जियांगशू द्वारा रिपोर्ट किए गए निर्यात का संदर्भ लिया गया है और उसे विधिवत डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों से मिलाया गया है।

252. प्राधिकारी ने प्रकटन विवरण में प्रस्ताव किया था कि चूंकि मै. जियांगशू द्वारा किए गए निर्यात की मात्रा बहुत कम है, अतः इसे वास्तविक नहीं माना जा सकता है। प्राधिकारी वर्ल्ड ट्रेड एटलस से यथा उपलब्ध वैश्विक कीमतों सहित अन्य स्रोतों से मै. जियांगशू की निर्यात कीमत का मिलान मोटे तौर पर करने के बाद इस पहलू पर विभिन्न अनुरोधों को देखते हुए इसे दोहराते हैं कि जांच की अवधि में निर्यात की गई वस्तुओं की मात्रा निर्यात कीमत को वास्तविक मानने के लिए बहुत कम है। इसके अलावा, जैसा कि प्रकटन विवरण में उल्लेख किया गया है कि चूंकि मै. जियांगशू ने पूर्व में 2002 में बहुत अधिक मात्रा में निर्यात किया है और इसके पास अतिरिक्त अनुप्रयुक्त क्षमता है, अतः पाटन और परिणामी क्षति के बार-बार होने की संभावना है। इसके अलावा, मै. जियांगशू द्वारा भारत को छोड़कर अन्य देशों को किया गया निर्यात भी भारत की ओर परिवर्तित किया जा सकता है यदि पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिया जाता है क्योंकि तीसरे देशों को उनकी निर्यात कीमत भारत की तुलना में कम है।

253. प्राधिकारी मै. इंडोरामा को एक अलग पाटन मार्जिन देने के संबंध में अनुरोध को नोट करते हैं और इस बात पर बल देते हैं कि मै. इंडोरामा के लिए पाटन मार्जिन का मूल्यांकन निर्यातक द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर किया गया है और उसका सत्यापन निर्यातक के परिसरों में स्थल पर जाकर किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. इंडोरामा ने अपने घरेलू बाजार में इसके संबंधित पक्षकारों में से किसी पक्षकार को विचाराधीन उत्पाद की बिक्री नहीं की है। चीन जन.गण., मलेशिया, थाइलैंड और श्रीलंका (दिनांक 17 अगस्त, 2015 के एसएसआर जांच सं0 15/28/2013-डीजीएडी) में उत्पादित अथवा वहां से निर्यातित प्लेन मीडियम डेन्सिटी फाइबर (एमडीएफ) बोर्ड के निर्णय का हवाला देने के लिए घरेलू उद्योग के अनुरोध के संबंध में प्राधिकारी यह मानते हैं कि वर्तमान मामले के तथ्य एमडीएफ मामले के तथ्यों से बिल्कुल अलग हैं। प्राधिकारी का मानना है कि पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन दोनों का मूल्यांकन एक भारित औसत आधार पर किया गया है जिसे निर्यातक तथा घरेलू उद्योग के लिए यथा सत्यापित विचाराधीन उत्पाद के अलग-अलग पीसीएन के कम कीमत/लागत अंतरों को देखते हुए एक उपयुक्त पद्धति के रूप में पाई गई है। प्राधिकारी का मानना है कि चूंकि मै. इंडोरामा के लिए पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन पाटनरोधी शुल्क के लगाए जाने के बावजूद जांच की अवधि में सकारात्मक है अतः पाटन और परिणामी क्षति घरेलू उद्योग को मै. इंडोरामा द्वारा विचाराधीन उत्पाद के निर्यात के कारण हो रही है। प्राधिकारी डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों के आधार पर मूल्यांकन किए गए समग्र पाटन मार्जिन पर निर्यातक द्वारा किए गए अनुरोधों को भी नोट करते हैं। चूंकि मै. इंडोरामा ने इन वस्तुओं का निर्यात आई टी सी एचएस 54023300 के अंतर्गत और न कि 54024700 के अंतर्गत किया है, 54024700 के डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों का संदर्भ लेते हुए उनके अनुरोध भ्रामक हैं। मै. इंडोरामा के लिए पाटन मार्जिन निकालने की पद्धति गोपनीय आधार पर निर्यातक को पहले ही दे दी गई है जो जांच की अवधि के दौरान यथा अपनाई गई निर्यातक द्वारा किए गए निर्यातों की मात्रा को स्पष्ट करता है।

254. पाटन के बार-बार होने की संभावना के संदर्भ में प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक के पास अतिरिक्त क्षमता है और चूंकि उनका निर्यात भारत सहित विभिन्न देशों में उनके उत्पादन की एक बड़ी मात्रा है, यदि पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिया जाता है, तब न केवल चालू पाटन और अधिक होगा, बल्कि उत्पादक/निर्यातक की अतिरिक्त क्षमता भी भारत में संबद्ध वस्तुओं की बढ़ती हुई मांग के कारण भारत में खपाई जा सकती है।

255. मामूली अतिरिक्त मात्राओं के संबंध में निर्यातक के आश्वासन को नहीं माना जा सकता है क्योंकि कीमत में कटौती और ह्रास जांच की अवधि में निर्यातक की कीमतों को देखते हुए अवश्यभावी है जिसके जारी रहने से घरेलू उद्योग को कीमत की क्षति पर इसका बहुत अधिक प्रभाव नीचे तक पड़ सकता है।

256. प्राधिकारी मै. इंडोरामा द्वारा उन्हें वर्ल्ड ट्रेड एटलस और डी जी सी आई एंड एस आंकड़े देने के लिए किए गए अनुरोध को नोट करते हैं। मै. इंडोरामा के लिए संभावना विश्लेषण स्वयं मै. इंडोरामा द्वारा दिए गए आंकड़ों के आधार पर

की गई है और इसका सत्यापन प्राधिकारी द्वारा सत्यापन रिपोर्ट के साथ किया गया है जिसकी सूचना निर्यातक को दी गई है। वर्ल्ड ट्रेड एटलस आंकड़ों का संदर्भ चीन के लिए और थाइलैंड के निर्यातकों के लिए है जिसमें मै. इंडोरामा शामिल नहीं है, जिनका प्रतिनिधित्व मै. लक्ष्मी कुमारन श्रीधरन द्वारा नहीं किया गया है। डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों के संबंध में प्राधिकारी इसे उपयुक्त नहीं मानते हैं कि यूनियन ऑफ इंडिया बनाम मै. भारत सोल्वेंट एंड कैमिक कॉर्पोरेशन (एसएलपी (सी) सं. 13583/2015) के मामले में उच्चतम न्यायालय की व्यवस्था को देखते हुए उसे नहीं दिया जा सकता है जिसमें उच्चतम न्यायालय में सेंडिस्क इंटरनेशनल लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (डब्ल्यू पी (सी) 744/2015) के मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगा दी गई थी।

257. वर्तमान मामले में मै. इंडोरामा द्वारा किए गए निर्यात की तुलना प्राधिकारी द्वारा डी जी सी आई एंड एस आंकड़ों के साथ की गई है और निर्यात की मात्रा को प्राधिकारी के जांच की प्रक्रिया के भाग के रूप में स्वीकार किया गया है। चूंकि यह एक आंतरिक जांच कार्य है और माननीय उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश पर रोक लगा दी है अतः प्राधिकारी इसे उपयुक्त नहीं मानते हैं कि निर्यातक/उत्पादक/किसी अन्य हितवद्ध पक्षकार को डी जी सी आई एंड एस आंकड़े दिए जाएं।

258. प्राधिकारी का यह भी मानना है कि चूंकि संबद्ध वस्तुओं का वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और यह बाध्यकारी नहीं है, जैसा कि दिनांक 24.3.2014 के जांच शुरूआत अधिसूचना में भी उल्लेख किया गया है, विभिन्न मदों के अंतर्गत विचाराधीन उत्पाद के सभी निर्यातों की जांच की गई है और इस जांच परिणाम के विभिन्न पहलुओं के लिए उन पर विचार किया गया है।

259. अन्य संबद्ध देशों के लिए विचाराधीन उत्पाद के पूर्व एसएसआर के दौरान घरेलू उद्योग के आर्थिक मानदंडों पर विचार करने के संबंध में प्राधिकारी का मानना है कि इसने निर्धारित नियमावली/इसकी सतत प्रथा के अनुसार जांच की अवधि के दौरान तथा पिछले तीन वर्षों में वर्तमान मामले के लिए विचाराधीन क्षति मानदंडों का मूल्यांकन किया है। पूर्व जांच को घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध के वापस लेने के आधारों पर समाप्त कर दिया गया था और क्षति मानदंडों के संबंध में कोई मूल्यांकन नहीं किया गया था जिसे संभवतः निर्यातक द्वारा एक संदर्भ के रूप में तब उल्लेख किया जा सकता था।

260. चीन और थाइलैंड के लिए क्षति के अलग आकलन के मुद्दे के संबंध में प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली, 1995 के नियम 9 (2)(iii) अनुबंध-11 के अनुसार दो संबद्ध देशों के लिए संचयी आकलन किया है।

261. प्राधिकारी यह समझते हैं कि डी जी पद्धति आंकड़े और डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों का स्रोत एक ही है। इसके अलावा प्राधिकारी नोट करते हैं कि डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों का लेन देन से लेन देन के माध्यम से वर्तमान मामले में बिल्कुल सही ढंग से निर्यातों के मिलान का प्रयोजन सिद्ध हो जाता है। इस कारण से यदि डी जी पद्धति आंकड़े और अधिक दृष्टि भी हों तो यह वर्तमान मामले में उसी उद्देश्य को पूरा करेगा और इस कारण से प्राधिकारी का मानना है कि वर्तमान मामले में एक पुनरावृत्ति वैधकरण लागू नहीं है और इसलिए इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

घ. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

262. प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित हो सके जो देश के आम हित में है। पाटनरोधी उपायों के आरोपण से किसी भी प्रकार से संबद्ध देश/प्रक्षेत्र से आयात पर प्रतिबंध नहीं लगेगा और इसलिए इसके फलस्वरूप उपभोक्ताओं को उत्पाद की उपलब्धता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

263. यह मान लिया गया है कि पाटनरोधी शुल्कों के लगातार आरोपण से संबद्ध वस्तुओं का उपयोग करने वाले विनिर्मित उत्पाद की कीमत के स्तरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है और इसके फलस्वरूप इसका इस उत्पाद की सापेक्ष प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। हालांकि भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी उपायों से विशेष रूप से यदि पाटनरोधी शुल्क के आरोपण से घरेलू उद्योग को क्षति का निवारण करने के लिए आवश्यक सीमा तक सीमित हो जाता है, कम नहीं किया जाएगा। इसके प्रतिकूल पाटनरोधी उपायों के आरोपण से पाटन प्रथाओं द्वारा प्राप्त किए जाने वाले अनुचित लाभ को दूर किया जाएगा, घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में गिरावट को रोका जा सकेगा और संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं को अपेक्षाकृत अधिक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में मदद मिलेगी।

न. निष्कर्ष और सिफारिशें

264. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों तथा किए गए अनुरोधों तथा प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध कराए गए तथ्यों जिसे इस जांच परिणाम में रिकॉर्ड किया गया है, की जांच करने के बाद प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि :

(क) जांच अवधि में थाइलैंड से मै. इंडोरामा और थाइलैंड से अन्य उत्पादकों/निर्यातकों की क्षति और पाटन मार्जिन धनात्मक हैं जो इस तथ्य की पुष्टि करता है कि पाटनरोधी शुल्क के विद्यमान होने के बावजूद भी पाटन और क्षति होना निरंतर जारी है। इस प्रकार थाइलैंड से पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने पर भी पाटन और क्षति के निरंतर रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की भी संभावना है। चीन जन.गण. से मै. जियांगशू और चीन जन.गण. से अन्य निर्यातकों का निर्यात बहुत अधिक नहीं है, लेकिन पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए इन कीमतों पर वास्तविक रूप में विचार किया गया है। उनके उत्तर/निवेदन के अनुसार मै. जियांगशू के तृतीय देशों को निर्यात की कीमत और जांच अवधि पश्चात वर्ल्ड ट्रेड एटलस के अनुसार चीन जन.गण. से अन्य उत्पादकों/निर्यातकों की निर्यात कीमत सकारात्मक पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का प्रमाण है। इसके अलावा, यह भी नोट किया जाता है कि मै. जियांगशू के पास अतिरिक्त अप्रयुक्त क्षमता है और इस कारण से पाटन और परिणामी क्षति के बार-बार होने की संभावना है। मै. जियांगशू द्वारा भारत को छोड़कर अन्य देशों में किए गए निर्यात को भी उस स्थिति में भारत की ओर परिवर्तित किया जा सकता है जब पाटनरोधी शुल्क को वापस ले लिया जाएगा क्योंकि तीसरे देशों में उनकी निर्यात कीमतें भारत की तुलना में कम हैं।

(ख) संबद्ध वस्तुओं की मांग भारत में बढ़ रही है। पाटनरोधी शुल्क को वापस लेने से संभवतः संबद्ध वस्तुओं का निर्यात तीसरे देशों से भारत की ओर परिवर्तित होने को बढ़ावा मिलेगा तथा अतिरिक्त क्षमताओं का उपयोग भारत में निर्यात को पूर्व स्थिति में लाने के लिए किया जाएगा।

(ग) घरेलू उद्योग को पाटन और परिणामी क्षति संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क हटाए जाने की स्थिति में जारी रहने अथवा उसके बार-बार होने की संभावना है।

265. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच शुरू की गई थी और उसे सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था तथा घरेलू उद्योग, निर्यातक और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना देने के लिए समुचित अवसर दिए गए थे। पाटनरोधी नियमावली के संबंध में पाटन, क्षति और उसके कारणात्मक संबंध की जांच शुरू करने तथा उसे पूरा करने के बाद तथा पाटनरोधी शुल्क को हटाए जाने की स्थिति में पाटन और क्षति की संभावना को सिद्ध किए जाने के बाद, प्राधिकारी का यह मत है कि निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क के सतत आरोपण से संभावित पाटन और परिणामी क्षति को दूर किया जाना अपेक्षित है। इस कारण से प्राधिकारी इसे आवश्यक समझता है कि वह नीचे दिए गए निर्धारित रूप और तरीके से संबद्ध देशों में उत्पादित अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करे।

266. प्राधिकारी द्वारा अपनाए जा रहे अपेक्षाकृत कम शुल्क के संबंध में, प्राधिकारी पाटन के मार्जिन और क्षति के मार्जिन में से जो भी कम हो, के बराबर पाटन रोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को क्षति से बचाया जा सके। तदनुसार, नीचे दी गई तालिका के कॉलम 9 में दर्शायी गई राशि के बराबर पाटन रोधी शुल्क संबद्ध देशों में उत्पादित अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर लगाये जाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	सीमाशुल्क शीर्ष	वस्तुओं का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	*5402	पोलिस्टर नॉन टेक्सचर्ड और नॉन पीओवाई का सभी पूर्ण रूप से निकाला गया अथवा पूर्ण रूप से अभिमुख किया गया यार्न/स्पिन ट्रॉ यार्न/फ्लैट यार्न	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	547	मी.ट.	अम.डॉ.
2.	-वही-	-वही-	चीन जन.गण.	चीन जन.गण. को छोड़कर	कोई	कोई	547	मी.ट.	अम.डॉ.

				अन्य देश					
3.	-वही-	-वही-	चीन जन.गण. को छोड़कर अन्य देश	चीन	कोई	कोई	547	मी.ट.	अम.डॉ.
4.	-वही-	-वही-	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	जियांगशू हैंगली कैमिकल फाइबर क.लि.	जियांगशू हैंगली कैमिकल फाइबर क.लि.	256	मी.ट.	अम.डॉ.
5.	-वही-	-वही-	थाइलैंड	थाइलैंड	इंडो रामा पालिस्टर इंडस्ट्रीज पब्लिक कंपनी लि. (पूर्व में इंडोपोली (थाइलैंड)लि.	इंडो रामा पालिस्टर इंडस्ट्रीज पब्लिक कंपनी लि. (पूर्व में इंडोपोली (थाइलैंड) लि.	57.78	मी.ट.	अम.डॉ.
6.	-वही-	-वही-	थाइलैंड	थाइलैंड	उपर्युक्त क्र.सं. 4 पर उल्लिखित को छोड़कर कोई समूह		248.63	मी.ट.	अम.डॉ.
7.	-वही-	-वही-	थाइलैंड	थाइलैंड	कोई	कोई	248.63	मी.ट.	अम.डॉ.
8.	-वही-	-वही-	थाइलैंड	थाइलैंड को छोड़कर अन्य देश	कोई	कोई	248.63	मी.ट.	अम.डॉ.
9.	-वही-	-वही-	थाइलैंड को छोड़कर अन्य देश	थाइलैंड	कोई	कोई	248.63	मी.ट.	अम.डॉ.

*** सीमाशुल्क वर्गीकरण सांकेतिक मात्र हैं और यह इस जांच के कार्य क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।**

267. इस अधिसूचना के प्रयोजनार्थ आयातों का अवतरित मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य है और इसमें उक्त अधिनियम की धाराओं 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमा शुल्क शामिल हैं।

प. आगे की प्रक्रिया

268. इस आदेश के खिलाफ दायर की गई अपील को केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत करने के बाद अपील को सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर किया जाएगा।

ए. के. भल्ला, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd September, 2015

FINAL FINDINGS

Subject: Sunset Review (SSR) anti-dumping investigation concerning imports of 'All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn / Spin Draw Yarn / Flat Yarn of Polyester (non-textured and non-POY) and other yarns' originating in or exported from China PR and Thailand.

A. Background of the Case

1. **F. No. 15/03/2014-DGAD:**—Whereas having regard to the Customs Tariff Act 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Rules) thereof, the Designated Authority, in the Ministry of Commerce and Industry, Department of Commerce, Govt. of India, appointed under the Rules supra, (hereinafter referred to as “the Authority”), vide Notification No. 14/3/2008-DGAD dated 6th May 2008, initiated an anti-dumping investigation concerning import of “All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn/Spin Draw Yarn/Flat Yarn of Polyester (hereinafter referred to as “Subject Goods”)”, originating in or exported from China PR, Thailand and Vietnam. The Preliminary Findings were issued by the Authority, vide Notification No. 14/3 /2008-DGAD dated 23rd January, 2009 and provisional duty was imposed by the Central Government, vide Notifications No. 29/2009-Customs dated 26th March, 2009. The Final Findings were issued by the Authority, vide Notification No. 14/3/2008-DGAD dated 29th September, 2009. On the basis of the recommendations made by the Authority in the final findings, definitive anti-dumping duties were imposed by the Central Government, vide Notifications No. 124/2009-Customs dated 11th November, 2009 effective from the date of imposition of the provisional duty on the imports of the of the above goods, originating in or exported from the subject countries.

2. And whereas M/s Reliance Industries Ltd., M/s Wellknown Polyesters Ltd., M/s Garden Silk Mills Ltd. and M/s Alok Industries Ltd., the major domestic manufacturers of the subject goods in India, filed a duly substantiated application before the Authority, on behalf of the domestic industry, in accordance with the Act and the Rules, alleging likelihood of continuation or recurrence of dumping of the above goods, originating in or exported from subject countries and consequent injury to the domestic industry in the event of cessation of duty, and requested for a review of the same for continuation and enhancement of the anti-dumping duties imposed on the imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

3. And whereas on the basis of the duly substantiated application filed on behalf of the domestic industry and in accordance with section 9A(5) of the Act, read with Rule 23 of the Anti-dumping Rules, the Authority initiated a sunset review investigation, vide Notification No. 15/3/2014 -DGAD dated 24th March, 2014, to review the need for continued imposition of the duties in respect of subject goods, originating in or exported from China PR, Thailand and Vietnam, and to examine whether the expiry of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. However, Authority noted that there have been no imports from Vietnam during the entire injury period, neither is there any data or evidence indicating the prices from Vietnam to other countries. Therefore, Vietnam has been excluded from the scope of the current investigation. Accordingly, the countries involved in the present Sunset Review investigation are China and Thailand (hereinafter referred to as “subject countries”). The validity of the anti-dumping duty on the imports of the subject goods from the subject countries was extended by the Central Government up to and inclusive of 25th day of March 2015, vide Notification No. 18 /2014-Customs (ADD) dated 9th May, 2014.

4. On the request of the Authority, Central Government extended the time for completion of the Investigation up to 23rd September, 2015, in terms of Rule 17 of the AD Rules.

5. The scope of the present review covers all aspects of the original investigation concerning imports of the above goods, originating in or exported from the subject countries.

B. Procedure

6. The procedure described below has been followed with regard to the subject investigation:

- i. The embassies of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the investigations in accordance with Rule 6(2).
- ii. The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and the embassies of the subject countries in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non- confidential version of the application was also made available in the public file and provided to other interested parties, wherever requested.
- iii. The Authority forwarded a copy of the public notice to the following known manufacturers/ exporters in the subject countries (whose names and addresses were made available to the Authority) and gave them opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the letter in accordance with the Rules 6(2) & 6(4):

China PR

- i. Tongkun Group Co. Ltd
- ii. WuXi Godsheep Industrial (Group) Co., Ltd.
- iii. Jiangsu Hengli Chemical Fiber Co.
- iv. Zhejiang Flame Retardant Co. Ltd.
- v. Zhejiang Huaxin Chemical Fiber Co. Ltd

- vi. Shaoxing Yifeng Fancy Yarn Co.Ltd
- vii. Zhejiang Cifu Import And Export Co.Ltd
- viii. Shandong Wantonggda Fiber Co.Ltd
- ix. Yibin Grace Co.Ltd

Thailand

- i. Thai Polyester Company Limited
7. Following producers/exporters has filed the exporter's questionnaire response from the subject countries.

China PR

- i. M/s Jiangsu Hengli Chemical Fiber Co. (hereinafter referred to as “M/s Jiangsu”)

Thailand

- i. M/s Thai Polyester Company Limited
 - ii. M/s Indorama Polyester Industries
8. China being a Non-Market Economy country, a Market Economy Treatment (MET) questionnaire was also forwarded to all the known producers/exporters in China PR and the Embassy of China PR with the request to provide relevant information to the Authority within the prescribed time limit. While for the purpose of initiation the normal value in China was considered based on the cost of production of the subject goods in India, duly adjusted, the Authority informed the known producers/exporters from China PR that it has examined the claim of the applicant in the light of Para 7 and Para 8 of Annexure I of Anti-dumping Rules, as amended. The exporters/producers of the subject goods from China PR were, therefore, requested to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 of Annexure I referred above to enable the Authority to consider whether market economy treatment can be granted to the cooperative exporters/producers in that country. However, M/s Jiangsu hasn't claimed MET and has only filed exporter questionnaire response.

9. The Authority forwarded copies of the public notice to the following known importers/consumers of subject goods in India (whose names and addresses were made available to the authority) and advised them to make their views known in writing within forty (40) days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(4):

- i. M/s Coral India
- ii. M/s Baid Narrow Feb Pvt. ltd.
- iii. M/s Soft Touch Fabrics Pvt. Ltd.
- iv. M/s Ashu Impex
- v. M/s C K Lace
- vi. M/s Kinsum Industries
- vii. M/s Shubham Marketing
- viii. M/s Sujata Synthetics
- ix. M/s M. D. Rayon
- x. M/s Jai Raghuvir
- xi. M/s Tanya Synthetics
- xii. M/s Murlidhar Textiles
- xiii. M/s Meena textiles
- xiv. Yogeshwer Twisters
- xv. M/s Sahas Syntheics

10. No response to the prescribed questionnaire has been submitted by any of the importers and/or user industry.

11. Transaction-wise imports data procured from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) has been used in macro-analysis in present SSR investigation. Further, the Authority has also examined the Post-POI (October 2013 - March 2014) import data and World Trade Atlas data to analyze the trends for the purpose of likelihood assessment. The Authority has also verified the data of M/s Indorama Polyester Industries on various aspects of quantum of exports, Normal Value, Export Price, Cost of Production and likelihood parameters.

12. Exporters, producers, importers and other interested parties, who have neither responded to the Authority nor supplied information relevant to this investigation, have been treated as non-cooperating interested parties by the Authority.

13. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).

14. The Authority has examined the information furnished by the domestic producers to work out the cost of production and determined the non-injurious price of the subject goods in India, as per its consistent practices, so as to ascertain whether anti-dumping duty, lower than the dumping margin, would be sufficient to remove injury, if any, to the domestic industry.

15. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 16.02.2015. The interested parties were requested to file written/rejoinders submissions of their views expressed orally. However, subsequently, there was a change of the Designated Authority, which necessitated that another public hearing be held by the new DA as per the judgment of the Hon'ble Supreme Court in the matter of Automotive Tyre Manufacturers Association (ATMA) vs. Designated Authority, delivered by a Division Bench in Civil Appeal No. 949 of 2006 on 7-12-2011. The second oral hearing was, therefore, conducted by the new Designated Authority on 20.08.2015. All the interested parties attending the hearing were again requested to file written submissions/rejoinders of the views expressed orally.

16. Written submissions and rejoinder submissions has been filed by the following interested parties:

- a) Domestic Industry
- b) M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China
- c) M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand (hereinafter referred to as "M/s Indorama")

17. The submissions made by the interested parties during the course of the investigation and to the extent considered relevant by the Authority, have been appropriately addressed in this finding.

18. Verification of the information and data submitted by the participating domestic producers was carried out to the extent deemed necessary. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim in accordance with rules/ practice. The Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.

19. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has used "best information available" and has treated such parties as non-cooperative.

20. The Authority disclosed the essential facts of the case to all interested parties in the form of a disclosure statement on 11th September, 2015. The interested parties were given an opportunity to comment on various aspects of the investigations disclosed in the statement by 16th September, 2015. The comments received from the interested parties have been considered to the extent they are relevant and have been appropriately addressed in this finding.

21. In this Final Findings, "*****" represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

22. The exchange rate for the POI has been taken by the Authority as Rs.56.90 = 1 US\$.

C. Scope of Product under consideration and like article Submissions made by the Domestic Industry

23. Following are the submissions made by the domestic industry with regard to product under consideration and like article:

- i. Current investigation is a sunset review investigation. Accordingly, scope of the product under consideration in the present investigation should remain the same as in the original investigation.
- ii. The product under consideration includes All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn /Spin Draw Yarn / Flat Yarn of Polyester (non-textured and non-POY) and other yarns conforming to the tariff description of Customs Heading 5402.47.
- iii. The product in commercial market parlance is generally known as 'Fully Drawn Yarn' and is used for manufacture of apparel / household textiles, and other industrial textiles.
- iv. Technical specifications of the subject goods are defined in terms of their deniers, tenacities, lustres, colours etc.

Submissions by producers/exporters/importers/other interested parties

24. No submission has been made by the producers/exporters with regard to the scope of the product under consideration (PUC) and like article.

Examination by the Authority

25. The product under consideration in the present application, as also defined in the original investigation, is All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn/Spin Draw Yarn/Flat Yarn of Polyester (non-textured and non-POY) (hereinafter also being referred to as “product under consideration/subject goods”). The product in commercial market parlance is generally known as “Fully Drawn Yarn” (FDY). The subject goods are used for manufacture of apparel/household textiles, and other industrial textiles. Technical specifications of the subject goods are defined in terms of their deniers, tenacities etc.

26. The product under consideration is classified under the category “Man made filaments” in Chapter 54 of the Customs Tariff Act, 1975 and further under 5402.47 as per Customs Classification. However, Customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation. The Authority notes that the subject goods are identical to the goods produced by the domestic industry. There are no differences either in the technical specifications, functions or end-uses of the imports and the domestically produced subject goods. The two are technically and commercially substitutable and therefore, the subject goods produced by the petitioner is being treated as ‘like article’ to the subject goods being imported from the subject countries for the purpose of the present review investigation.

27. The Authority holds that present investigation being a sunset review investigation, the scope of the product under consideration in the present investigation remains the same as that of the original investigation.

D. Domestic Industry and Standing

Submissions by the Domestic Industry

28. Domestic industry has submitted that applicant producers account for 52% share in the total domestic production and therefore, have a clear standing in terms of the Anti-dumping Rules.

29. Condition of “standing” is not applicable to sunset review investigation, as Rule 5 has not been made applicable under Rule 23(3).

30. There is no law under which there is any restriction on the change of the composition of the domestic industry in the subject investigation *vis-à-vis* earlier investigations. Further, the interested parties have not produced even an iota of evidence to demonstrate that the applicant domestic producers are not representative of the domestic industry.

Submissions by producers/exporters/importers/other interested parties

31. M/s Jiangsu submitted that there are changes in the composition of the domestic industry in present sunset review investigation as compared to the original investigation. In the original investigation, there were 4 producers namely M/s Reliance Industries Ltd., M/s Nova, M/s Petrochemicals Ltd., M/s Gupta Synthetics Ltd, and M/s Chiripal Petrochemicals Ltd, which have been petitioners. In the current sunset review investigation, the information is being provided by 4 petitioners namely M/s Reliance Industries, M/s Alok Industries, M/s Garden silk Mills and M/s Wellknown. There are no reasons on record as to why the producers namely M/s Nova, M/s Petrochemicals Ltd., M/s Gupta Synthetics Ltd, and M/s Chiripal Petrochemicals Ltd, which were the petitioners in the previous investigation, have not provided any information in the current investigation. M/s Jiangsu therefore requested the Authority to obtain the information from the said 3 producers with a view to examine the effect of imposition of anti-dumping duties on them.

Examination by Authority

32. The Authority notes that Rule 2(b) of the Anti-dumping Rules provides as follows:

“(b) “domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are relate to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”.

33. The Authority notes that the application was filed by M/s Reliance Industries Ltd., M/s Wellknown Polyesters Ltd., M/s Garden Silk Mills Ltd. and M/s Alok Industries Ltd. The application has been duly supported by M/s JBF Industries Ltd and M/s Sumeet Industries Ltd.

34. The Authority therefore holds that on the basis of the production, the applicant producers constitute a major proportion i.e., 52% in the Indian production and, therefore meet the standing requirement has been complied with. The production figures of the domestic producers are as under:

Production	2010-11	Share	2011-12	Share	2012-13	Share	POI	Share
Reliance	***	19%	***	15%	***	16%	***	15%
Alok	***	4%	***	11%	***	11%	***	9%
Garden	***	13%	***	14%	***	14%	***	12%
Wellknown	***	11%	***	10%	***	10%	***	15%
Total Petitioner	182966	47%	204803	49%	224709	50%	244843	52%
JBF	***	9%	***	10%	***	10%	***	10%
Sumeet	***	3%	***	3%	***	7%	***	8%
Supporters	44243	11%	55107	13%	76121	17%	82628	17%
Indorama	***	2%	***	1%	***	1%	***	1%
Nova/Chiripal	***	6%	***	5%	***	3%	***	3%
Nova/Gupta	***	5%	***	5%	***	1%	***	0%
Subhalakshmi	***	5%	***	6%	***	4%	***	4%
Bhilosa	***	3%	***	6%	***	5%	***	5%
Raj Rayon	***	4%	***	4%	***	3%	***	2%
Gujarat Polyfil	***	5%	***	4%	***	3%	***	3%
Welspun	***	1%	***	2%	***	1%	***	1%
Others	***	10%	***	5%	***	10%	***	11%
Other producers	158831	41%	154180	37%	144954	33%	145395	31%
Total Production	386039	100%	414090	100%	445783	100%	472866	100%

E. Confidentiality

Submissions by the Domestic Industry

35. Domestic industry submitted that the exporters have not provided a meaningful summary of the various Appendices enclosed in the non-confidential version of the response; and that, almost in all of the above appendices, the information even in the indexed form has not been provided.

36. The details regarding the production, exports to India, domestic sales and capacity have also been claimed as confidential by the exporters from the subject countries. The Authority was requested to disclose the absolute numbers of the exports, production and capacities of the exporters considering the consistent practice of the Authority.

37. The domestic industry claimed confidentiality on their business sensitive information with adequate reasons in accordance with the legal provisions and the guidelines prescribed by the Authority. The reasons and grounds for claiming confidentiality have been given in the non-confidential version of the application.

38. The domestic industry has provided in the application, names of all major producers in India including the names of applicants and supporters. It is only for the remaining 11% of the total Indian production that the names are not mentioned in the application as these units are very small and scattered. The Domestic Industry cannot be expected to give the names of all the producers particularly when it has no bearing on its own standing nor will it affect the investigation in any manner whatsoever.

Submissions by the producers/exporters/importers/other interested parties

I. Submission by M/s Jiangsu:

39. M/s Jiangsu submitted that the non-confidential version of the application of the domestic industry is highly deficient. The domestic industry has kept lots of information as confidential without assigning any reasons on record. In addition, M/s Jiangsu has pointed out following loopholes on the part of the domestic industry in connection with confidentiality:

- Non-confidential Application not serially numbered:** As per Trade Notice No. 1/2013 dated 9th December 2013, the non-confidential version of the application has to be a replica of the confidential application. Since the non-confidential version of the application is not serially numbered, it cannot be said to be exact replica of the confidential application submitted by the domestic industry. We also invite kind attention of the Authority to relevant para in the said Trade Notice and the same is reproduced below for the ready reference of the Authority:

“Para 2 (iii): The non-confidential version is required to be a replica of the confidential version with the confidential information indexed or blanked out (in case indexation is not feasible) and summarized depending upon the information on which confidentiality is claimed....”

In view of the above guidelines issued by the Authority, the non-confidential version of the application fails to meet the requirement relating to its being replica of the confidential version.

- ii. **Names of other domestic producers in India not provided:** The domestic industry has not disclosed the names of category “other domestic producers”. It may be seen that as per the submission of the domestic industry in the public hearing, there are more than 25 producers of the subject goods in India. However, they have chosen not to give the information of the category of more than 11 other producers. It may also be seen that the production of these other producers is substantial at 11% in the total domestic production and it appears that they even have not been informed or put to notice by the Hon’ble Authority as the domestic industry has also not provided the contact details of those other producers.
- iii. The domestic industry has also not provided the complete names and contact details of most of the domestic producers listed by them in the production details table provided in response to question No. 3 of Section 2. We are not able to appreciate as to under what provisions they have been authorised to withhold even the names and contact details of the domestic producers. It is vital information and must be shared with the Hon’ble Authority and those domestic producers ought to be provided an opportunity to make their views known in the investigation. In the absence of such details, the standing of the domestic industry cannot be considered as correct.
- iv. **Soft and Hard copy of Original/Raw import data from ICL:** The domestic industry has not provided a soft copy in excel file of the raw/original import data received by it from ICL along with the application nor it has indicated that the same has been provided to the Authority. In the absence of this information to Authority and to us, we are handicapped to our offer comments on the correctness of the sorted import data by the petitioners provided along with the petition. It is submitted that the domestic industry is under an obligation to provide the raw import data obtained from ICL to all interested parties including us and that it cannot be kept as confidential as per Trade Notice No. 1/2013 dated 09.12.2013. The relevant excerpts from the said Trade Notice are reproduced below for the ready reference of the Hon’ble Authority:

“4 (iv) to Annexure I: A claim of confidentiality shall not be accepted by the Authority on the grounds of commercial restrictions, for example, in case the information is available in the public domain and can be obtained by any party after payment of fee, etc. information/data procured from a private source as IBIS shall not be treated as confidential and the party submitting the same should submit a letter of permission for its disclosure from the party supplying the same before being accepted.(Emphasis added)”
- v. Thus, in view of the explicit guidelines issued by the Authority, the domestic industry is under an obligation to provide a copy of the raw import data as part of the non-confidential version. **And, in the absence of its disclosure, the data submitted by the domestic industry cannot be relied upon.**
- vi. **Soft Copy of Sorted Import Data:** The domestic industry has also not provided a soft copy in excel file of the sorted ICL import data for the periods April 10-March 11, April 11-March 12, April 12-March 13 and October 2012 to September 2013. It may be appreciated that the raw/original ICL import data as well as sorted import data is necessary for us to make comments on the correctness of the import data considered by the domestic industry in its application.
- vii. **Stock and No. of Employees:** The petitioners have also kept stock volume figures and number of employees figures as confidential. We are yet again not able to appreciate as to how the said information can be kept as confidential.
- viii. **Annual Reports:** The petitioners have even not provided the copies of the annual reports of the petitioners along with the non-confidential version of the application nor the same have been placed in the public file. It is submitted that the same are required to be provided as part of the non-confidential version and cannot be withheld by them. In this connection, we once again invite the kind attention of the Hon’ble Authority to sub-para (i) to para 2 of Trade Notice No. 1 of 2013 dated 9th December, 2013 which lays down that the domestic industry is required to submit both the confidential version and non-confidential version in soft copy along with the hard copies and the same is reproduced below for the ready reference of the Authority:

“Para 2 (i): Any submission made without such marking shall be deemed as non-confidential. Soft copy of both the versions will be required to be submitted along with the hard copies, to the authority.”
- ix. It may be seen from the above that since the domestic industry failed to submit the non-confidential version as required under the law, the information submitted by them cannot be relied upon and therefore, the current investigation is required to be terminated on this ground also.

40. The domestic industry has made generalized statements for all exporters participating in the investigation. They have not pointed out any specific deficiency in the response of Jiangsu. In the absence of specific comments, the submissions of the domestic industry are requested to be rejected by Jiangsu. Besides, Jiangsu submitted that it has provided a meaningful summary in the Appendices 1, 2, 2A, 3, 4, 7, 8, 8A and 9 in its non-confidential response and claimed the information confidential in these appendices to the extent permissible.

41. There are four domestic producers who are petitioners in the current investigation and none of the four domestic producers has given any separate information for themselves and only the combined information is given for the domestic industry as a whole. It has therefore requested the Authority to insist for separate information from each of the constituent of the domestic industry before they should be allowed to make such a claim. Further, that the domestic industry has also not cited the relevant provisions in support of their claim, as a result, there is no merit in the submissions of the domestic industry and the same are required to be rejected.

42. Further, disclosure of the quantitative information of the individual exporters would be commercially disadvantageous and may give competitive advantage to their competitors.

Submission by M/s Indorama:

43. Domestic Industry has claimed excessive confidentiality with respect to the following issues which has hindered the Respondent's ability to make meaningful comments on the petition:

- a. Copy of mail from CCFEI regarding capacities in China PR
- b. Information pertaining to production process;
- c. Information pertaining to Costing which could have been provided in indexed form;
- d. Brief write-up of policies; and
- e. Annual reports of the Applicant Domestic Producers.

44. The Authority must evaluate the claim for confidentiality of information and not designate information as confidential without a proper examination. The decision of the Hon'ble Supreme Court of India in *Sterlite Industries (India) Ltd. v. Designated Authority 2003 (158) E.L.T. 673 (S.C.)* is relevant in this regard, where the Hon'ble Court held that confidentiality was not to be granted automatically and was to be based on thorough scrutiny.

45. M/s Indorama has submitted a duly filled up Exporters Questionnaire Response as well as a Sunset Review Questionnaire Response, and has claimed confidentiality only on business proprietary information which has been accepted by the Authority to be confidential in nature. Also, that it has provided the meaningful summary of various appendices as per past practice of the Authority.

46. M/s Indorama denies the allegation of the domestic industry that it disclosed the absolute number of export in number of investigation conducted by the Authority. It therefore requested the Authority to policy a decision in this regard rather than adopting a case to case basis for the purpose of disclosure of export, production and capacity of participating exporters.

Examination by the Authority:

47. With regard to confidentiality of information Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:-

(1) Notwithstanding anything contained in sub-rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.

(2) The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.

(3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorize its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information.

48. The Authority has examined the confidentiality claims of the interested parties in light of its consistent practice and rules and after satisfying itself made available only the non- confidential version of submissions/evidences submitted by various interested parties for inspection was placed in the public file as per Rule 6(7).

F. Completeness of Import Data

Submissions made by the producers/exporters/importers and other interested parties

49. M/s Indorama submitted that the Domestic Producers, while disclosing the import data of the subject goods into India, have furnished only the refined data and not the raw data. Therefore, it is now impossible to verify the correctness of the import data.

50. The Domestic Producers have procured the import statistics from a private source: Immortal Computer Lab Pvt. Ltd. Clause 4(iv) of Annexure 1 to Trade Notice No. 1/2013 dated 9th December 2013 clearly states that “*information/data procured from a private source as IBIS shall not be treated as confidential and the party submitting the same should submit a letter of permission for its disclosure from the party supplying the same before being accepted*”. Therefore, as per Trade Notice No. 1/2013, the Applicant Domestic Producers are required to disclose the import statistics and cannot claim confidentiality over the raw import data.

51. The application submitted by the Applicant Domestic Producers is incomplete as it does not contain the name and address of Indorama as a “known exporter” despite the fact that Indorama participated in the original investigations. As a result, the Applicant Domestic Producers fails the standards set in Article 5.3 of the WTO Anti-Dumping Agreement read with Rule 5(3) of AD Rules, which require the Authority to examine the “accuracy and adequacy” of the petition submitted by the Applicant Domestic Producers before initiating an investigation.

52. As per the application format issued by the Authority, the domestic industry is required to provide complete information with respect to names and addresses of known exporters of the alleged dumped goods in India (Question 7, Part I of the application format).

G. Miscellaneous Submissions:

Submissions by the domestic industry:

53. The export sales to India of the so-called cooperating exporters should be reconciled with the DG Systems Data so as to verify the correctness of the data submitted by the exporters considering the consistent practice of the Authority. The Authority has adopted the same approach in many cases including Graphite Electrode from China PR (No.14/02/2013-DGAD dated 19th November, 2014).

54. Only the subject goods reported in HS Code of the product concerned i.e., 5402470 should be considered as the subject goods exported to India. Product concerned reported in other HS Codes should not be taken on record as the sole purpose of clearing the goods in the other HS Code is either to evade the anti-dumping duty levied by the Authority or to undervalue the goods for the purpose of payment of the custom duties.

55. Adopting the exchange rate of the POI for calculating Normal Value, Non-injurious Price etc. is the standard practice being followed by the anti-dumping Authorities that are based on sound economic and accounting rationale and logic. Considering the standard practice of the Authority, the same has been adopted by the domestic industry for the purpose of calculating Export Price, Normal Value etc. Further, the interested parties have not pointed out any legal or logical infirmity in the said approach.

56. The likely landed value of the subject goods to India has been calculated after adjusting the freight as chargeable from China PR to India and not from China PR to Korea PR/Turkey.

57. Sunset review against imports of Fully Drawn Yarn originating in or exported from Thailand, Korea RP, Malaysia and Chinese Taipei was a *suo moto* initiation of the investigation in accordance with the legal position prevailing at the relevant time. Subsequent to the *suo moto* initiation, the Authority asked the Domestic Industry to provide necessary information to establish that there is a likelihood of dumping / injury. Since the prevailing international prices from these sources and other market conditions at that point of time did not warrant continuation of duties, the investigations were closed.

Submissions by producers/exporters/importers of the subject goods and other interested parties

58. The exchange rate for USD that has been adopted by domestic industry is 56.90. However, the prevailing rate of USD, as per RBI currently is Rs. 62.24. It is also predicted that the rupee will not appreciate once again and may get depreciated further. This means that imports into India currently are priced significantly higher than what they used to be during the POI.

59. Domestic producers have computed the likely landed value of the subject goods to India based on the price at which they are exported from China PR.

60. Interested parties have argued that the Authority had terminated an earlier sunset review of anti-dumping duties against imports of Fully Drawn Yarn originating in or exported from Thailand, Korea RP, Malaysia and Chinese Taipei vide Final Findings No. 15/26/2010 dated 16th August, 2012 on account of the fact that the domestic industry itself was not interested in seeking the extension of the period for imposition of original duties. Therefore, the subject investigation must also be terminated because the domestic industry is suffering at best, the same level of injury as it did in the earlier anti-dumping investigation and at worst, substantially lesser level of injury as compared to what it suffered in the earlier anti-dumping investigation.

61. The Authority in the Initiation Notification stated that it was excluding Vietnam from the scope of the sunset review as there were no exports of Fully Drawn Yarn made from Vietnam during the POI. However exporters fail to understand why the Authority has continued the investigation against China PR and Thailand when the imports from these countries are miniscule in quantity and form only 0.02% of the total demand in India.

62. The Authority may reconcile its export sales data with the DG Systems data.

Examination by the Authority:

63. The Authority has reconciled the import data by referencing the transaction wise data of DGCI&S & the responses filed by the exporters from the subject countries. The Authority adopted the same in the present Final Findings.

64. The Authority, noting the claims made by various interested parties on import data's correctness, has analysed the DGCI&S data primarily on the basis of the description of the product under consideration as also stipulated in paras 24 & 25 of the disclosure statement, as per its consistent practice.

65. The Authority has considered the exchange rate for the period of investigation and determined in accordance with its consistent practice. The Authority finds that no case has been made out by the interested parties which could even remotely suggest that the consistent approach of the Authority suffers from any kind of legal or logical infirmity.

H. Assessment of Dumping - Methodology and Parameters:

SUBMISSIONS BY THE DOMESTIC INDUSTRY:

A. Normal Value

i. Normal Value for China, PR:

66. Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China ("M/s Jiangsu") has not filed the questionnaire response of its wholly owned subsidiary, Jiangsu Deli Fibre Co., Ltd. which is involved in the product concerned. The incomplete information filed by exporters impedes the investigations and prevents the Authority from verifying the factual position of the exports/domestic sales made by them and their respective related parties. Accordingly, the response filed by M/s Jiangsu should be rejected outright and individual dumping margin should also not be granted to them considering the standard practice of the Authority which has also been followed in the recent case of MDF from Malaysia, Sri Lanka, China & Thailand [Final Findings F. No. 15/28/2013-DGAD dated 17th August, 2015].

67. Thai Polyester Co. Ltd., Thailand ("M/s TPC") sold the product concerned to one of its related parties but did not file the questionnaire response of the said related party. The incomplete information filed by M/s TPC impedes the investigations and prevents the Authority from verifying the factual position of the exports/domestic sales made by them and their respective related parties. Accordingly, response filed by the M/s TPC should be rejected outright, and individual dumping margin should also not be granted to them considering the standard practice of the Authority which has also been followed in the recent case of MDF from Malaysia, Sri Lanka, China & Thailand [supra].

68. M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand ("M/s Indorama") claimed that it has not sold the product concerned to any of its related parties. However, in the Annual Report of Indorama Ventures for the year 2013 it has been categorically stated that M/s Indorama has sold the product concerned to one of its related party i.e., PT. Indorama Synthetics Tbk. ("PTIRS") which has a number of sales branches including the one located in Thailand. Accordingly, it is amply clear that M/s Indorama has not filed the questionnaire response of its related party i.e., PTIRS and concealed this fact from the Authority. The incomplete information filed by exporters impedes the investigations and prevents the Authority from verifying the factual position of the exports/domestic sales made by them and their respective related parties. Accordingly, response filed by the M/s Indorama should be rejected outright and individual dumping margin should also not be granted to them considering the standard practice of the Authority. The decision of the Hon'ble Authority in the recent case of MDF from Malaysia, Sri Lanka, China & Thailand [supra] is fully applicable in this case also.

69. Further, China being a non market economy, normal value of the subject goods in that country cannot be determined on the basis of price prevailing in that country and therefore, needs to be constructed.

70. Market economy status cannot be granted to a country unless the responding exporter/company and its group as a whole make a claim. In the present case, there is no claim for market economy treatment by Chinese exporters.

71. The Normal Value in China can be determined on the basis of: (a) price in India; and (b) cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit in case when no response has been filed by the exporter. Normal Value in China should be determined based on the cost of production in India, duly adjusted.

72. The Normal Value in China may be constructed by considering international price of the raw material and adopting the consumption norms and conversion cost as per the best information available, including that of the domestic industry.

ii. Normal Value for Thailand:

73. Only two exporters have filed the questionnaire response i.e., M/s Thai Polyester Co. Ltd., Thailand (M/s TPC) and M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand (M/s Indorama). These exporters have not filed the questionnaire response of their related parties. In the absence of such full response, responses filed by these exporters cannot be accepted considering the standard practice of the Authority, and therefore, normal values for Thailand cannot be based on the incomplete information filed by them. Therefore, normal values for Thailand should also be constructed by considering international price of the raw materials and adopting the consumption norms and conversion cost as per the best information available, including that of the domestic industry.

74. Domestic industry has submitted evidence for the deductions made under the categories of ocean freight, marine insurance, port handling, inland freight, sales commission and bank charges with regard to computation of export price which is reasonably available to it.

SUBMISSIONS BY PRODUCERS/ IMPORTERS/ EXPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

A. Normal Value

75. The Domestic Producers have constructed the normal value for Thailand on the basis of international prices of the raw material and the best norms of the domestic industry. They used the constructed normal value established for China PR for Thailand as well, which is erroneous as it is inconsistent with the relevant provisions contained in Section 9A of the Act, Annexure I to the AD Rules and Article 2.2 of the WTO ADA. As a result, such normal value constructed by the Domestic Industry is to be rejected.

76. One can resort to constructed normal value only in the following circumstances:

- a. Where there are no sales of the like article in the domestic market of the exporting country; or
- b. When because of the particular market situation or low volume of sales in the domestic market of the exporting country such sales do not permit a proper comparison. [Explanation (c)(ii), Section 9A(1) of the Customs Tariff Act 1975]

77. The Domestic Producers have not proved anywhere that either of the above two conditions existed, thus necessitating the construction of normal value. The two conditions specified in the relevant provisions do not include “non-availability” of data relating to domestic selling prices as a ground for construction of normal value. The basis stated in the application for resorting to constructed normal value is thus erroneous.

78. The Domestic Producers calculated the cost of the subject goods on the basis of the international price of the raw material but have provided no evidence for the same. Such information is therefore required to be disclosed along with the petition in order to prove the veracity of the prices adopted for the computation of normal value.

79. The Domestic Producers have not adopted the correct principles for construction of the normal value. Rule 4 of Annexure I of the AD Rules mentions that the amounts for administrative, selling and general costs and profits shall be based on actual data pertaining to production and sales in the ordinary course of trade, of the like article by the exporter or producer under investigation. It is not stated anywhere in Annexure I to the AD Rules that the ‘experience of the Domestic Industry’ or the costs incurred by the domestic industry may be used to construct the normal value. The Domestic Producers have on the other hand equated all relevant costs required for the computation of normal value for Indorama with the cost of the Domestic Producers when the Domestic Producers and Indorama are completely different entities functioning in India and Thailand respectively.

80. Even the construction of normal value for China PR, which has been used as the normal value for Thailand, has not been done in accordance with the AD Rules. Rule 7 of Annexure I of the AD Rules deals with the computation of normal value for non-market economy countries. The abovementioned Rule 7 states that the normal value for imports from non-market economy countries is required to be determined on the basis of:

- a. The price or constructed value in a market economy third country; or
- b. The price from such a third country to other countries, including India; or
- c. Where the above options are not possible, the normal value may be constructed on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted and including a reasonable profit margin.

81. Thus, the twin requirements involve (i) the submission of Domestic Producers on prices prevailing in a market economy third country; and (ii) the evaluation by the Authority of such submission. Neither of these requirements has been satisfied in the present matter.

82. The Domestic Producers should have first considered the price or constructed value in a market economy third country and if this option is not possible, considered the price from such a market economy third country to other countries. Only when these two options are not possible can they resort to construction of the normal value on any other

reasonable basis. However, in the present case, the Domestic Producers have not attempted the first two options and have directly constructed the normal value on “any other reasonable basis”. Therefore, the construction of normal value carried out by them is inconsistent with the relevant provisions contained in Section 9A of the Act, Annexure I to the AD Rules and Article 2.2 of the WTO ADA. As a result, such a normal value constructed by the Domestic Producers is to be rejected.

B. Export Price

83. The Applicant Domestic Producers have not provided any evidence for the deductions made under the categories of ocean freight, marine insurance, port handling, inland freight, sales commission and bank charges. Moreover, certain adjustments are grossly inflated and liable to be rejected. For instance, marine insurance is normally 0.125% of 110% of the CIF value and it is never as high as 0.5% of CIF.

84. Ocean freight from China and Thailand has been arbitrarily delineated as USD 50/MT without providing any evidence in support of the same. The adjustment for ocean freight has been estimated as USD 50/MT for both China PR and Thailand when the distance from Thailand (Bangkok Terminal) to India (Jawaharlal Nehru Port Terminal) is 6039 km and the distance from China PR (Zhenjiang Terminal) to India (Jawaharlal Nehru Port Terminal) is 8792 km.² The difference in distance serves to highlight that in any case, the same figure for ocean freight cannot be adopted for both countries.

85. M/s Jiangsu submitted that the stand of the domestic industry in the current case is contradictory as on the one hand, they state for non-determination of dumping margin for the exporters or for injury in view of the meager imports and on the other hand the domestic industry has heavily contended that

a. Injury to the domestic industry in terms of low profitability, selling prices, increase in closing stock, significant dumping margin due to so-called meagre imports from subject countries (Para Nos. 14-18 of the written submissions of the domestic industry).

b. Price undercutting and price underselling due to so-called meagre imports from subject countries (Para 13 of the written submissions of the domestic industry).

c. Likelihood of price undercutting, injury margin / price underselling on the basis of so-called meagre imports from subject countries (Para Nos. 23-26 of the written submissions of the domestic industry).

d. Likelihood of dumping margin analysis on the basis of so-called meagre imports from subject countries (Para Nos. 27-28 of the written submissions of the domestic industry).

e. Likely impact on the profitability and other growth parameters on the basis of so-called meagre imports from subject countries (Para Nos. 29-30) of the written submissions of the domestic industry).

86. Thus, in view of the above glaring contradictions in the submissions of the domestic industry, the case of the domestic industry is liable to be rejected as has been done in the case of *SSR Anti-dumping investigation concerning import of MDF Board from China, Malaysia, Thailand and Sri Lanka [Para 107(i)]* when the Hon'ble Authority rejected the claim/response of the exporter for individual dumping margin on the basis of contradictions in their submissions.

87. Further, it also submitted that even in the POY case cited by the domestic industry, the Authority determined the dumping margin and therefore, there is no merit in the submissions of the domestic industry.

88. Therefore, in view of the said contradiction, M/s Jiangsu requested the Hon'ble Authority for not to consider the submissions of the domestic industry with regard to determination of dumping margin and likelihood of dumping margin and injury margin and to terminate the current investigation.

89. In addition, Jiangsu contended that it has submitted all the details in the exporters' questionnaire for the determination of dumping margin and the information as required in the Part II to Exporters' Questionnaire. It once again requests the Hon'ble Authority for carrying out the verification visit for its data for the determination of dumping margin and to carry out the analysis of the export figures submitted by it on the basis of DG Systems data.

90. Jiangsu has further opposed the contention of the domestic industry that it has not submitted the response of its related company, i.e. M/s Jiangsu Deli Fibre Co., Ltd. on the ground that the related company has not exported the subject goods to India in the period of investigation. It submitted that the submission of the domestic industry in the present investigation are misplaced and misdirected as the facts in the case of *SSR Anti-dumping investigation in the case of MDF Board from China, Malaysia, Thailand and Sri Lanka* were totally different.

91. In that case, the product manufactured by one company is exported by another company and all the details of complete value chain of the goods exported were not there. Besides, there were also contradictions in the submissions of the exporter. It is due to this reason the Hon'ble Authority did not determine their individual dumping margin. Whereas

²Distance adopted from <http://www.searates.com/reference/portdistance/> (last visited on 19th February 2015).

in our questionnaire response, we clearly clarified that our related company did not export the subject goods to India in the period of investigation and there is no contradictions in our submissions. In fact, it is for the first time, the domestic industry after expiry of as high as about 17 months for the first time raised concerns over the response of our related company which is not tenable. Thus, there is no merit in the submissions of the domestic industry and the same are required to be rejected.

92. With respect to the calculation of Dumping Margin, Indorama opposed the submission of the domestic industry that meager quantity should not be considered for the determination of injury and dumping margin. Indorama quoted the following investigations in support of it:

a. Sunset review anti-dumping investigation concerning nylon filament yarn originating in or exported from China PR, Malaysia, Indonesia, Taiwan, Korea and Thailand (final finding issued on 19th November, 2011): The co-operating exporters from Indonesia (PT Susilia Indah Synthetic Fiber Industries) had exported only three consignments to India during POI at quite high prices which made him get the lowest dumping margin in Indonesia.

b. Mid-term review anti-dumping investigation concerning phenol originating in or exported from Korea (final finding issued on 23rd February, 2012), The co-operating producer from Korea (Kumho P&B Chemicals Inc) had exported only two consignments to India during POI (one through Humade Co. Korea and the other through Chemoil Co. Korea) at quite high prices which made him get negative dumping margin for one combination and 0.9% dumping margin for the other combination.

c. Sunset review anti-dumping investigation concerning phenol originating in or exported from European Union, Singapore and South Africa (final finding issued on 4th August, 2008): The co-operating exporter from Singapore [Mitsui & Co. Ltd. (Asia Pacific) Pte. Ltd.] had exported only two consignments to India during POI at quite high prices because of which the dumping margin worked out to be negative.

EXAMINATION BY AUTHORITY

A. Normal Value

i. *Normal Value for M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China ("M/s Jiangsu"), Producer/ Exporter from China, PR:*

93. M/s Jiangsu has filed the Exporter's Questionnaire Response Part I & II, and has not claimed MET. The Authority observes that M/s Jiangsu Deli Fibre Co Ltd. which is a wholly owned subsidiary of M/s Jiangsu has not exported the subject goods to India during the POI.

94. In view of the fact that M/s Jiangsu, the producer/exporter of the subject goods, has exported directly and has not claimed MET, the Authority has referenced the Normal Value for the producer/exporter by adopting international prices of main raw materials, best consumption norms achieved by the domestic industry, cost of utility and consumables incurred by the least NIP plant of the domestic industry and providing a normal profit on the constructed cost as per its consistent practice. Accordingly, the Normal Value of the subject goods in China, PR is considered as *** US\$/MT.

95. **For non-cooperative/ residual producers/exporters in China, PR**, the Authority has adopted the constructed Normal Value as stated above at *** US\$/MT in accordance with the Rules for all producers/exporters in China, PR including the cooperative exporter i.e. M/s Jiangsu.

i. *Normal Value for Producers/ Exporters from Thailand*

• **Normal Value for M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand ("M/s Indorama"):**

96. M/s Indorama filed the questionnaire response and also Part-II response on SSR. The Authority undertook an on-site verification of the data filed in the questionnaire at the exporter's premises and verified the data on domestic sales, cost of production, ex-factory export prices and other aspects related to the production- process, etc. The Weighted Average Cost of various grades of the product under consideration has been evaluated on the basis of financial records and in accordance with the GAAP.

97. The Authority applied the significant quantity test as well as the ordinary course of trade test (80:20 test) and verified various adjustments claimed on domestic sales. Adjustments on packing charges, commission, inland transportation, credit cost and insurance are allowed to an extent of ***US\$/MT, ***US\$/MT, ***US\$/MT, ***US\$/MT and ***US\$/MT respectively. Accordingly, the Authority has considered the ex factory Normal Value as ***US\$/MT.

• **Normal Value for Thai Polyester Co. Ltd., Thailand ("M/s TPC"):**

98. The Authority had sent an email dated 27.01.2015 to M/s TPC, one of the producers of the subject goods, regarding data verification. However no response was received by the Authority from M/s TPC. The Authority had also sent emails dated 30.01.2015 and 07.08.2015 to M/s TPC regarding public hearings to be held on 15.02.2015 and 20.08.2015 respectively. But there was no response from M/s TPC nor did it attend the oral hearings nor made any submissions during the investigations including at the stage of filing response to the disclosure statement. It was further

noted that M/s TPC exported the subject goods through M/s Global Trade Well Pte Ltd., Singapore during the Period of Investigation. Questionnaire response was filed by M/s TPC but not by M/s Global Trade Well, Singapore. The incomplete and unverified information of value chain has thus prevented the Authority from verifying the factual position of the export sales made by the exporter. The Authority, therefore, as per its practice, has not determined the individual Dumping Margin in respect of M/s TPC and adopted the Dumping Margin determined for residual category.

- **Normal Value for Residual/ Non Cooperative producers/ exporters of Thailand:**

99. For all Residual/Non Cooperative producers/ exporters of Thailand, the Authority has referenced the average domestic selling price of the cooperative exporter, i.e. M/s Indorama without any adjustments on the same. The normal value is referenced as *** US\$/MT.

B. Ex- Factory Export Price

i. Export Price for M/s Jiangsu, Producer/ Exporter from China, PR:

100. The Authority notes the submissions made by the Domestic Industry as well as by the producer/exporter of the subject goods regarding non- filing of questionnaire response by M/s Jiangsu in light of the Designated Authority's recent *SSR Anti-dumping investigation in the case of MDF Board from China, Malaysia, Thailand and Sri Lanka* [Final Findings F. No. 15/28/2013-DGAD dated 17th August, 2015]. The Authority notes that the facts in the instant case are different from that of the MDF case. In the instant case, the producer/ exporter's subsidiary has not exported subject goods to India during the period of investigation and therefore the issue of causing any impediment to evaluate the entire value chain, does not arise.

101. The Authority notes that M/s Jiangsu has exported *** MT only of the subject goods to India during the Period of Investigation. The Authority referencing the CIF export price, i.e. ***US\$/MT as correlated with import evidence and allowing adjustments of overseas freight, bank charges, credit cost, inland freight & port handling charges to an extent of ***US\$/MT, ***US\$/MT, ***US\$/MT and ***US\$/MT respectively as per the response/evidence filed by the producer/exporter and duly correlated with the import data, notes that the net ex factory export price is ***US\$/MT, and the **Dumping Margin** is accordingly de minimis. However, the quantity of exports is too meager and has not been treated as realistic and therefore not adopted for individual Dumping Margin evaluation.

ii. Export Price for Producers/ Exporters from Thailand

- **Export Price for M/s Indorama:**

102. The Authority notes the submissions made by the Domestic Industry as well as by the producer/exporter of the subject goods regarding non- filing of questionnaire response in light of the Designated Authority's recent *SSR Anti-dumping investigation in the case of MDF Board from China, Malaysia, Thailand and Sri Lanka* [Final Findings F. No. 15/28/2013-DGAD dated 17th August, 2015]. The Authority notes that the facts in the instant case are different from that of the MDF case. The Authority's has in fact conducted an onsite verification of the exporter's data wherein no sales of Product under Consideration to M/s Indorama's related party, i.e. M/s PTIRS during the Period of Investigation were observed.

103. The CIF export price of M/s Indorama is determined as *** US\$/MT. In order to calculate the ex-factory export price for M/s Indorama, the Authority considers the adjustments of inland transportation, ocean freight, insurance, port handling charges, commission, credit cost, bank charges and duty drawback to an extent of *** US\$/MT, *** US\$/MT, *** US\$/MT, *** US\$/MT, *** US\$/MT, *** US\$/MT and *** US\$/MT respectively to evaluate the ex factory exported price. The ex factory export price is determined as *** US\$/MT, and accordingly the **dumping margin** is considered to be *** US\$/MT (0-10%)

- **Export Price for M/s Thai Polyester Co. Ltd., Thailand ("TPC"):**

104. The Authority had sent an email dated 27.01.2015 to M/s TPC, one of the producers of the subject goods, regarding data verification. However no response was received by the Authority from M/s TPC. The Authority had also sent emails dated 30.01.2015 and 07.08.2015 to M/s TPC regarding public hearings to be held on 15.02.2015 and 20.08.2015 respectively. But there was no response from M/s TPC nor did it attend the oral hearings nor made any submissions during the investigations including at the stage of filing response to the disclosure statement. It was further noted that M/s TPC exported the subject goods through M/s Global Trade Well Pte Ltd., Singapore during the Period of Investigation. Questionnaire response was filed by M/s TPC but not by M/s Global Trade Well, Singapore. Such incomplete and unverified information of value chain has thus prevented the Authority from verifying the factual position of the export sales made by the exporter. The Authority, therefore, as per its practice, has not determined the individual ex factory export price in respect of M/s TPC.

- **Export Price for Residual/ Non Cooperative producers/ exporters of Thailand:**

105. For ex factory export price for all residual/ non- cooperative producers/ exporters from Thailand including M/s TPC, the Authority has referenced the weighted average CIF export price of M/s Indorama, i.e. *** US\$/MT duly adjusted with the adjustments of Inland Transportation, Ocean Freight, Insurance, Port Handling Charges, Commission

and Bank Charges to an extent of *** US\$/MT, *** US\$/MT, *** US\$/MT, *** US\$/MT, *** US\$/MT and *** US\$/MT respectively as claimed by the petitioners and in accordance with the consistent practice of the Authority in such cases. The weighted average ex factory export price for such producers/exporters accordingly comes to *** US\$/MT. Accordingly the dumping margin is considered as *** US\$/MT (15-25%).

106. Dumping Margin during the Period of Investigation is tabulated as below:

Sr. No.	Producer/ Exporter	Normal Value (US\$/MT)	Ex-Export Price (US\$/MT)	Factory Price (US\$/MT)	Dumping Margin (US\$/MT)	Dumping Margin %	Dumping Margin range%
1.	M/s Indorama Polyester Industries, Thailand	***	***	***	***	***	0-10%
2.	Other Producers/ Exporters from Thailand	***	***	***	***	***	15-25%
3.	M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd., China	***	***	***	De minimis	De minimis	De minimis
4.	Other Producers/ Exporters from China.	***	***	***	De minimis	De minimis	De minimis

- The Authority further notes that there are no exports by M/s Jiangsu and other producers/ exporters from China, PR to India during post POI. Therefore, the likely Dumping Margins on the basis of third country exports made by producers/ exporters from China during one year post POI is tabulated as below:

Sr. No.	Producer/ Exporter	Normal Value (US\$/MT)	Ex-Export Price (US\$/MT)	Factory Price (US\$/MT)	Dumping Margin (US\$/MT)	Dumping Margin %	Dumping Margin range%
1.	M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd., China*	***	***	***	***	***	0-10%
2.	Other Producers/ Exporters from China**	***	***	***	***	***	10-20%

* As per the exporter's questionnaire response.

** As per the World Trade Atlas.

I. Methodology for Injury Determination and Examination of Injury and Causal Link

SUBMISSIONS BY THE DOMESTIC INDUSTRY

107. The domestic industry has made the following submissions with regard to the injury and causal link:

- Performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow, inventory and capacity utilization has deteriorated in the current Period of Investigation.
- The demand of the product under consideration has shown a growth throughout the injury period. Hence, the contraction in demand is not a possible reason, which could have contributed to injury to the domestic industry.
- Since the pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Change in pattern of consumption is unlikely to contribute to the injury to the domestic industry.
- There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the domestic industry.
- Technology for production of the product has not undergone any change nor are there any likely changes in coming future. Developments in technology are therefore, not a factor of injury.
- The productivity of the domestic industry has remained almost at the same level during the entire period of injury. Hence, productivity is not a factor of injury.
- Dumping margin and injury margin are negative. However, this being a sunset review, the prices offered to

India cannot be considered as reliable considering the fact that only a negligible quantity of 27 MT has been exported to India during the period of investigation.

SUBMISSIONS BY PRODUCERS/EXPORTERS/IMPORTERS OTHER INTERESTED PARTIES

108. M/s Indorama Polyester Industries PCL (“Indorama”) submitted as follows:

A. **Termination of earlier sunset review against imports of Fully Drawn Yarn originating in or exported from Indonesia, Malaysia, Korea RP and Taiwan**

The Designated Authority had terminated an earlier sunset review of anti-dumping duties against imports of Fully Drawn yarn originating in or exported from Indonesia, Korea RP, Malaysia and Chinese Taipei vide Final Findings No. 15/26/2010 dated 16th August 2012 (hereinafter referred to as the “earlier anti-dumping investigation”) on account of the fact that the domestic industry itself was not interested in seeming the extension of the period for imposition of original duties. The petition in the earlier anti-dumping investigation had been filed by the Association of Synthetic Fibre Industry on behalf of four producers namely M/s Wellknown Polyesters Limited, M/s JBF Industries Limited, M/s Garden Silk Mills Limited and M/s Reliance Industries Limited.

The comparison of injury indicators in the subject anti-dumping investigation and the earlier anti-dumping investigation pertaining to Indonesia, Korea, Malaysia and Taiwan reveals that *many of the injury indicators of the domestic industry in the earlier and subject anti-dumping investigation follow a similar trend; and therefore* the present sunset review must be terminated as well.

The movement of injury parameters in the earlier and subject anti-dumping investigation is summarized in the following manner:

(i) In the earlier anti-dumping investigation, production increased from 85631 MT in 2007-08 to 86599 MT in 2008-09, 109727 MT in 2009-10 and 158783 MT in POI. In the subject anti-dumping investigation, production increased from 182966 MT in 2010-11 to 204803 MT in 2011-12, 224917 MT in 2012-13 and 245638 MT in the POI;

(ii) In the earlier anti-dumping investigation, sales of the domestic industry as a percentage of demand remained steady at 42% in 2007-08, 43% in 2008-09, 47% in 2009-10 and marginally increased to 52% in POI. In the subject anti-dumping investigation, sales of the domestic industry as a percentage of demand followed a similar trend; it remained steady at 46% in 2010-11, 48% in 2011-12, 50% in 2012-13 and 51% in POI;

(iii) In the earlier anti-dumping investigation, imports marginally increased from 396 MT in 2007-08 to 379 MT in 2008-09, 1438 MT in 2009-10 and 2365 MT

in POI. In the subject anti-dumping investigation, imports decreased from 566 MT in 2010-11 to 96 MT in POI;

(iv) In the earlier anti-dumping investigation, imports from subject countries as a percentage of total demand marginally increased from 0.2% in 2007-08 to 0.84% in POI. In the subject anti-dumping investigation, imports from subject countries as a percentage of total demand decreased from 0.2% in 2010-11 to 0.02% in POI;

(v) In the earlier anti-dumping investigation, losses increased from (100) indexed points in 2007-08 to (545) indexed points in POI. In the subject anti-dumping investigation, the domestic industry remained in profits even though profits decreased from 100 indexed points in 2010-11 to 26 indexed points in POI.

109. A comparison of the data relating to major injury parameters in the earlier anti-dumping investigation and subject anti-dumping investigation may be expressed by way of the following table:

Particulars	Trend in Earlier AD Investigation	Trend in Subject Investigation
Sales of the domestic industry as a % of Demand	Share was lower in the earlier anti dumping investigation	Share is higher in the subject investigation as compared to the earlier anti-dumping investigation
Imports	Increase of 497%	Decrease of 83%
Profits/Losses	Losses increased by 445%	Profit decreased by 74%
Imports as % of Demand	Increased from 0.2% to 0.84%	Decreased from 0.2% to 0.02%

110. On an overall analysis, it is clear that the *domestic industry was operating under worse conditions in the earlier anti-dumping investigation than in the subject investigation. Yet, the earlier investigation was terminated while the present investigation is being continued.*

Particulars	POI in Original Investigation (Oct 06—Sep 07)	POI in Sunset Review (Oct 12—Sep 13)
Sales of Domestic Industry	98365 MT	220967 MT
Market Share of All Domestic Producers in Demand	77.11%	99.98%
Production of Domestic Industry	99479 MT	245638
Capacity of Domestic Industry	101346 MT	322460

111. The domestic industry has received adequate protection from the Authority since the imposition of anti-dumping duty in the original investigation. The domestic industry has flourished after such imposition and the volume of imports are now so low as to be considered negligible. Hence, the Respondent requests the Authority not to extend the anti-dumping duty for a further period of 5 years.

A. No Current Injury Sustained by the Domestic Industry

Injury Factors:

112. The Applicant Domestic Producers have exhibited positive and exceptional movement in almost all the factors of injury. The same is detailed herein:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Capacity	MT	214290	286460	289460	322460
Production	MT	182966	204803	224917	245638
Sales	MT	154434	183420	207243	220967
Capacity Utilization	%	85%	71%	78%	76%
Employees	Indexed	100	104	116	133
Production/Employee	Indexed	100	108	106	101
Wages/Employee	Indexed	100	123	125	120
Profit	Indexed	100	-11	13	26
Cash Flow	Indexed	100	39	50	53
ROCE	Indexed	100	64	79	99
Imports from Subject Countries	MT	566	1080	174	96
Imports as % of Total Demand	%	0.2	0.3	0.04	0.02

113. From the above, it is clear that the Applicant Domestic Producers are not suffering any injury at present due to the exhibited positive movement in capacity, production, sales, capacity utilization, employees, productivity and wages throughout the injury period as well as the POI.

114. Indorama submitted that the ROCE of the Applicant Domestic Producers is still quite impressive. Furthermore, in any case, it is unclear as to how the Applicant Domestic Producers propose to link ROCE with subject imports as the two indicators are entirely separate. An increase or decrease in imports has no effect on the ROCE on the domestic industry and it is an absurd proposition for the same to be considered. In any case, imports cannot lead to a reduction in ROCE as they only constitute 0.02% of the demand.

115. With regard to the profitability and cash flow of the Applicant Domestic Producers, it is clear that the profits and cash profits of the Applicant Domestic Producers are quite reasonable. It may be noted that the subject imports cannot be linked with a reduction in the above factors as the subject imports are so low that they only constitute 0.02% of the market, and they cannot have any influence on the pricing of the goods in India. On the other hand, the domestic industry controls 99.98% of the market. In such a situation, it is clear that the domestic industry, if it is suffering any injury, has intrinsic issues that are the cause of such injury and not the subject imports.

B. No Likelihood of Recurrence of Injury to the Domestic Industry

116. Volume of imports

(i) Domestic Selling Price and Export Price to Third Countries:

During the public hearing, the Applicant Domestic Producers raised the contention that Indorama is likely to shift its exports of the subject goods to India in the future, thus establishing that there is a likelihood or recurrence of dumping and injury to the Applicant Domestic Producers. Indorama disagreed with the said contention on the ground that its domestic selling price of the subject goods in Thailand as well as its export price of the subject goods to third countries is higher than the export price of the subject goods to India.

(ii) Capacity available with the Respondent:

In Appendix 4 of the Exporters Questionnaire Response, it can be seen that Indorama's installed capacity is ***MT. In the POI, it produced ***MT of Fully Drawn Yarn, thereby operating at a capacity utilization rate of ***%. Therefore, Indorama is operating at an optimum rate of capacity utilization and has very little unutilized capacity left i.e. only ***%. Hence, the chances of Indorama increasing its exports to India are extremely slim, as it is already operating at optimal capacity utilization.

Even if Indorama chooses to export its unutilized capacity to India, which is about *** MT, these exports will still constitute only about *** % of the total demand in India. Therefore, even assuming that Indorama operates at 100% capacity utilization and diverts its unutilized capacities to India, it will not have any effect on the domestic industry in India.

(iii) Negligible Volume of Imports:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Imports from Subject Countries	MT	566	1080	174	96
Imports from other countries	MT	9	0	0	24
Total Imports	MT	574	1080	174	120
Total Production of Domestic Industry	MT	182966	204803	2241917	245638
Total Demand	MT	339152	378448	412475	431643
Total Domestic Sales of all Domestic Producers	MT	338577	377368	412301	431523
Imports as % of Total Production	%	0.3	0.5	0.008	0.04
Imports as % of Total Domestic Sales	%	0.2	0.3	0.04	0.02
Imports as % of Total Demand	%	0.2	0.3	0.04	0.02

117. It is a settled practice of the Authority to terminate an anti-dumping investigation against a subject country when the volumes of imports from that country are extremely low. It may be noted that in *Final Findings dated 25th March, 2011 in sunset review of anti-dumping duty against imports of Pentaerythritol originating in or exported from China PR and Sweden, the Authority observed that imports from Sweden were entering India in very low volumes and with negative dumping and injury margin. Due to such a reason, the Authority revoked the anti-dumping duty against imports of Pentaerythritol originating in or exported from Sweden.*

118. Furthermore, in Final Findings dated 20th May, 2013 in sunset review of anti-dumping duty against imports of Dry Cell Batteries originating in or exported from China PR, the Authority held that the anti-dumping duty may be revoked due to low volume of imports. The observations of the Authority are extracted below:

"80. After analyzing this case, it is noted that imports of the product under consideration are insignificant and constitute less than 0.5% of the demand of the subject goods in the country. It is also noted that imports of the subject goods from subject country constitute less than 0.5% of the demand during the entire injury period of the review investigation. Further, there are 3 major producers of subject goods in the country and their performance has significantly improved during the review period. Hence, it is considered appropriate to hold that there is no likelihood of injury to the domestic industry if anti-dumping duties is not extended.

81. Overall analysis therefore reveals clearly that against a total demand of 1.7 billion pieces, imports from China PR are to the tune of only 7 million pieces. Once anti-dumping duty is removed, the likelihood of import becoming steep is not borne out by facts and circumstances of this case. The three producers who constitute domestic industry have a complete grip on the domestic market. However, it is also noted that if there is a tremendous surge in the dumped imports from the subject country after the present anti dumping duty is not extended in this case, the domestic

industry can always file application for initiation of fresh anti dumping investigation. But duty cannot be extended on the basis of surmise above."

119. The above finding of the Authority applies squarely to the facts of the subject investigation. The Respondent reiterates once again that the **imports as a percentage of the total demand constituted a mere 0.02% in the POI.**

120. The principle that anti-dumping duty should not be continued when there are negligible exports from a subject country in a likelihood analysis was applied by the European Commissions in its Council Regulation (EC) No 1074/96 of 10 June, 1996 as regards definitive anti-dumping duties on imports of polyester yarn originating in Taiwan and Turkey wherein the Commission terminated the sunset review for goods originating from Taiwan due to the extremely low volume of imports. The relevant observations of the Commission are extracted herein:

"Import of Taiwanese POY regressed from 2812 tonnes in 1991 (2,4% market share) to 1117 tonnes in 1992 (0,9 % market share), to 551 tonnes in 1993 (0,5 % market share) and to 448 tonnes during the investigation period (0,4 % market share). It should be noted in this respect that the three major Taiwanese producers were not subject to any anti-dumping duty. When excluding the imports from these three producers, which are not concerned by the review investigation, the Community market share held by the remaining imports from Taiwan amounts to 0.1 % only. Information available suggests that the Taiwanese producers have re-oriented their exports to other third countries geographically closer where a steady growth for POY is being registered. Furthermore, these producers have apparently moved to a greater extent into the downstream product, PTY. Consequently, there is no reasonable indication that the expiry of the anti-dumping measures on imports of POY originating in Taiwan would lead to a recurrence of injury or threat of injury to the Community industry."

121. In the present case, it is thus clear that the volume of imports is so low that there exists no likelihood of recurrence of injury to the domestic industry by the volume of subject imports.

b. Price Effect:

122. The price data with regard to the subject goods is presented below:

Particulars	Unit	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Landed Value	Rs/ MT	98086	109481	106576	82663
Trend	Indexed	100	112	109	84
Domestic Selling Price	Indexed	100	112	119	121

From the above, it is also discerned that the domestic selling price of the subject goods was highest when the landed value was the lowest, thus proving that there is no link between the landed value of imported goods and the domestic selling price.

(ii) Likely Injury Margin:

The Applicant Domestic Producers have also made submissions regarding the likely injury margin of imports originating from China PR, and adduced evidence of prices of the subject goods from China PR to Korea RP and Turkey. However, it is once again pertinent to note that the Applicant Domestic Producers have not made any submissions with regard to Thailand and any injury margin/price underselling that may arise as a result of imports from Thailand. The Respondent submits that there is no likely injury margin submitted by the Applicant Domestic Producers as a result of imports from Thailand.

(iii) Likely price undercutting:

The Applicant Domestic Producers have also made claims and submissions on likely price undercutting with regard to landed values and prices of the subject goods exported from China to third countries. There is no sufficiently detailed claim with regard to any price undercutting occurring as a result of imports from Thailand.

c. No likelihood analysis for Thailand:

123. It is also to be noted that the analysis carried out by the Applicant Domestic Producers in terms of likelihood of recurrence of injury widely pertains only to China. There are no submissions which have been made with regard to the likelihood of injury due to imports from Thailand for the following factors:

- Surplus capacities in the countries of export: The Applicant Domestic Producers submitted that China possesses surplus capacity to the extent of 34 times the capacity of the domestic industry and have made such submission in support of extension of anti-dumping duties. ***However, it is glaring to note that no submission whatsoever has been made regarding any surplus capacities with regard to exporters based in Thailand.*** From the data submitted by the Respondent to the Authority, it can be seen that it does not possess any great surplus capacity

for the subject goods. On this basis, the Respondent submits that the Authority must disregard all claims of excess capacities made with regard to the Respondent.

- ii. Additionally, in respect of the claim of surplus capacities, it is submitted that mere existence of surplus capacities is not sufficient to establish likelihood of recurrence of injury. Any proof of existence of surplus capacities is required to be accompanied by the presence of low priced imports, which has not been established in the present instance. It has been held in the case of *Indian Spinners Association v. Designated Authority* 2004 (170) E.L.T. 144 (Tri. - Del.) that the “*existence of surplus production capacity cannot be taken as posing a clearly foreseen and imminent threat of injury.*” Furthermore, the Authority itself has come to this conclusion in other investigations. In the sunset review investigation on Aniline from USA and Japan, the Authority has held in its final findings dated 17th January, 2012 as follows:

“73...The objective of the business is to earn and maximize profits but not to incur or increase losses. **The fact of a mere availability of surplus capacity does not in itself sufficient to conclude a finding that the dumping from a subject country, USA in the present case, would recur or continue and cause injury to the domestic industry in case of withdrawal of duties...**”

- iii. **Likely Injury Margin:** The Applicant Domestic Producers have also made submissions regarding the likely injury margin of imports originating from China PR, and adduced evidence of prices of the subject goods from China PR to Korea RP and Turkey. However, it is once again pertinent to note that the Applicant Domestic Producers have not made any submissions with regard to Thailand and any injury margin/price underselling that may arise as a result of imports from Thailand. The Respondent submits that there is no likely injury margin submitted by the Applicant Domestic Producers as a result of imports from Thailand.
- iv. The Applicant Domestic Producers have also made claims and submissions on likely price undercutting with regard to landed values and prices of the subject goods exported from China to third countries. There is no sufficiently detailed claim with regard to any price undercutting occurring as a result of imports from Thailand.

d. Incorrect Calculation of Likely Landed Value to India:

124. The Applicant Domestic Producers have computed the likely landed value of the subject goods to India based on the price at which they are exported from China PR. For this purpose, the Applicant Domestic Producers have adopted the CIF price from China PR to Korea RP and Turkey respectively. For the computation of the same, the Applicant Domestic Producers have considered the ocean freight from China PR to Korea RP and Turkey respectively. It is the submission of the Respondent that the computation of landed value in India of the subject goods exported from China PR will be incorrect in such a situation.

125. The reason for the above is that the correct landed value of the subject goods must include the freight as chargeable from China PR to India and not from China PR to Korea RP/Turkey. Such a calculation is incorrect and required to be rejected by the Authority.

a. Factors other than dumped imports

126. While examining injury to the domestic industry, Annexure II to the AD Rules stipulates that any factors other than dumped imports should be segregated from the injury analysis. Para (v) of Annexure II to the AD Rules provides in pertinent part as follows:

“.... The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports.”

127. In the facts of the present case, Applicant Domestic Producers have failed to address the following additional factors. The Authority is requested to take into account these factors, while examining injury to the Applicant Domestic Producers:

a. Exchange Rate Considerations:

128. It is relevant to note that during the POI, the exchange rate for USD that has been adopted by domestic industry is Rs. 56.90. However, the prevailing rate of USD, as per the RBI currently is Rs. 62.24. It is also predicted that the Rupee will not appreciate once again and may get depreciated further.

129. **M/s. Jiangsu** submitted that there is no likelihood of dumping and injury in the present investigation as may be seen from the following:

- a. **Negligible Imports from China:** It is submitted that throughout the injury investigation period the imports from China are very negligible. The imports from China in absolute terms are merely 21 MT in base year 2010-11 and 48 MT in POI October 2012-September 2013 and in comparison to total demand and total domestic production are 0.01% both in the base year and in the POI. It indicates that in case of discontinuance of duties the imports from China are not likely to spurt.

b. **No Dumping Margin for the exporter from China:** It is submitted that there is no dumping margin for the exporter represented by us. It indicates that there is no likelihood of dumping from the exporter represented by us or from China.

c. **No injury to the domestic industry from Imports:** It is submitted that there is no injury to the domestic industry from the imports from China or from other subject countries. Their lower level of profitability and their inability to increase prices to fully recover their increase in costs indicates that the cause of injury to the domestic industry lies somewhere else. The reasons for injury may be due to inter se competition among domestic producers, high cost of production, inefficiency etc. Thus, the injury to the domestic industry is not likely due to the imports from China or any other subject country.

d. **No Excess Capacity in China:** With regard to capacity in China, Jiangsu submitted that the domestic industry has not provided any evidence along with the non-confidential version of the application. The domestic industry has given details of the capacity in China. However, they have not given details of the excess capacity available in China. The likelihood analysis is carried out on the basis of excess capacity available but not on the basis of name plate capacities as it will lead to misleading conclusions. It is the excess capacities which may allow the exporters to export their production but not otherwise. As per the information with the exporter, there are no excess capacities available with the Chinese producers which will be directed to Indian market in case of discontinuance of duties.

In view of the above, thus, Jiangsu submitted that there is no likelihood of injury to the domestic industry from imports from the subject countries as well as dumping from the subject countries. Thus, the present case is a fit case where the Hon'ble Authority may be pleased to terminate the investigation and discontinue the anti-dumping duties in the current sunset review investigation in the interest of justice.

130. The interested parties have submitted that there is no injury and causal link on account of the subject imports as its volume is miniscule.

Examination by the Authority

131. The Authority has taken note of various submissions of the interested parties on consequent injury to the domestic industry and has analyzed the same considering the facts available on record and applicable law. All relevant issues concerning the facts and figures are addressed *appropriately* in the injury analysis.

132. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure-II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, "... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles...". In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

133. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the rules *supra*.

134. The present investigation is a sunset review of anti-dumping duties in force. Rule 23 provides that provisions of Rule 11 shall apply, *mutatis mutandis* in case of a review as well. The Authority has, therefore, determined injury to the domestic industry considering, *mutatis mutandis*, the provisions of Rule 11 read with Annexure II. Further, since anti-dumping duties are in force on imports of the product under consideration, the Authority considers whether the existing anti-dumping duties on the imports of subject goods from subject countries are required to be considered while examining injury to the domestic industry. The Authority has examined whether the existing antidumping measure is sufficient or not to counteract the dumping which is causing injury.

135. According to Section 9(A)(5) of the Customs Tariff Act, anti-dumping duty imposed shall, unless revoked earlier, cease to have effect on the expiry of five years from the date of such imposition, provided that if the Central Government, in a review, is of the opinion that the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury, it may, from time to time, extend the period of such imposition for a further period of five years and such further period shall commence from the date of order of such extension.

136. For the purpose of current injury analysis, the Authority has examined the volume and price effect of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal link between the dumping and injury. The volume and price effect of dumped imports have been examined as follows:

VOLUME EFFECT:**Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry demand and market share**

137. The Authority has determined the demand or apparent consumption of the product in the country as the sum of domestic sales of the Indian producers and imports from DGCI&S. The demand so assessed can be seen in the table given below. The Authority on the basis of the response from cooperating exporters, notes that imports of PUC under other heads are also at best around 0.5% of the demand. The Authority notes that the demand for the subject goods in the country has increased during POI as compared to the base year. However, the imports from the subject countries are small and quite insignificant due to the existence of anti-dumping duties with the current market share of imports being low.

Year	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Imports from subject countries (MT)	731	726	89	27
Imports from other countries (MT)	11	27	64	18
Total Imports (MT)	741	753	153	45
Total demand (MT)	339319	378121	412384	430994
Domestic Industry Sales (MT)	154434	183420	207173	220393

Import Volume & market share

138. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or in relative terms. Information on the imports volume and the market share are provided in the table given below.

Year	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Imports from subject countries (MT)	731	726	89	27
Imports from other countries (MT)	11	27	64	18
Total Imports (MT)	741	753	153	45
Total demand (MT)	339319	378121	412384	430994
Share of subject countries in demand	0.22%	0.19%	0.02%	0.01%
Share of domestic industry in demand	99.78%	99.80%	99.96%	99.99%

139. The volume of imports is small rather negligible as the anti-dumping duties have been in existence of the subject goods. Even if exports by subject countries as reported by cooperating exporters under different heads of chapter 54 are included, the share of imports from the subject countries increases by 0.5% only thus being at a low level.

PRICE EFFECT**Price effect to dumped imports and impact on domestic industry**

140. The impact on the prices of the domestic industry on account of imports of the subject goods from the subject countries have been examined with reference to price undercutting, price underselling, price suppression and price depression. For the purpose of this analysis the cost of production, net sales realization (NSR) and the non-injurious price (NIP) of the domestic industry have been compared with landed value of imports from the subject countries. A comparison for subject goods during the period of investigation was made between the landed value of the imports from the subject countries and the domestic selling price in the domestic market. In determining the net sales realization of the domestic industry, taxes, rebates, discounts and commission incurred by the domestic industry have been adjusted. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non-injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been evaluated for the domestic industry in terms of the principles outlined in Annexure III by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. The authority has accordingly evaluated these parameters for the cooperating and non-cooperating exporters in the following sections.

Price Undercutting

141. The Authority notes that it is required to consider whether there has been significant price undercutting by the imports from the subject countries when compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

142. The Authority notes that price undercutting for China PR and Thailand is negative, on the basis of DGCIS data. As per DGCIS data, the total quantity from the subject countries is 27 MT under the customs head 540247. The imports from China are about 21 MT whereas imports from Thailand are only about 6 MT. Since it is a case of sunset review, the quantum of imports along with likelihood of dumping and injury is to be examined. The Authority has referenced the response of the cooperating exporters, to correlate exports and thereby analyze the Price Undercutting and Price Underselling in the POI, and likelihood analysis based on the world trade data, submissions of various interested parties viz domestic industry and cooperating exporters.

143. The above approach applies equally to the price underselling analysis as well. The negative price underselling for China PR and Thailand is to be seen along with the likelihood analysis for cooperative/other producers/exporters of subject countries.

Price Suppression and Depression

144. To examine the price suppression and depression effects of the dumped imports on the domestic prices, the trend of net sales realization of the domestic industry has been compared with the cost of sales. The data given below shows that the domestic industry's selling price has not grown in tandem with the increase in the cost during the POI vis-à-vis base year.

Particulars	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Cost of sales Rs/MT	***	***	***	***
Trend	100	118	124	124
Net Selling Price Rs/MT	***	***	***	***
Trend	100	112	119	120

Examination of other economic parameters of the domestic industry

145. Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the imports from the subject countries on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry reveals that the domestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below.

Production, capacity and capacity utilization

146. The Authority notes from the table below that the capacity utilization of the product under consideration has decreased from 83.23% in the base year to 75.20% in the POI. However, it is also noted that there is an increase in the capacity utilization level when compared to the year 2011-12. The level has remained more or less constant when compared to the immediately preceding year. The Authority also notes that there had been an increase in the capacity of the Domestic Industry considering the increase in demand.

Year	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Capacity (MT)	219840	289610	292610	325610
Trend	100	132	133	148
Production PUC only (MT)	182966	204803	224709	244843
Trend	100	112	123	134
Capacity utilization (MT)	83.23%	70.72%	76.79%	75.20%
Trend	100	85	92	90

Sales of the Domestic Industry

147. From the information given below, the Authority notes that the domestic sales of the domestic industry have increased in the POI as compared to base year as there is increase in the demand during the POI *vis-à-vis* the base year. Sales have increased even when compared to the immediately preceding years.

Particulars	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Domestic Sales (MT)	154434	183420	207173	220393
Trend	100	119	134	143

Profit/loss, Return on Investment and Cash Flow

148. The return on investment, profitability per unit and cash profit are as shown in the table below:

Year	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Domestic selling price Rs/MT	***	***	***	***
Trend	100	112	119	120
Cost Rs./MT	***	***	***	***
Trend	100	118	124	124
Profit Rs/MT	***	***	***	***
Trend	100	-13	16	39
Cash Profit Rs/MT	***	***	***	***
Trend	100	40	53	63
ROCE (%)	***	***	***	***
Trend	100	59	81	105

149. The Authority notes that profits of the domestic industry declined in the period of investigation. The increase in selling price is lower than the increase in the level of costs. It has been further noted that the cash profits has increased in POI as compared to the last two years but declined when compared to the base year. Further, the return on capital employed has increased marginally in the POI as compared to the base year.

Inventories

150. The data given in the table below shows that the inventory levels with the domestic industry have increased significantly in the POI as compared to the base year.

Year	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Closing stock (MT)	***	***	***	***
Trend	100	100	93	121

151. From the table given below, the Authority notes that employment have shown improvement in the injury period as compared to the base year. The Authority also notes that the wages per employee increased in the POI as compared to the base year on account of the annual increase in wages.

Year	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Employees	***	***	***	***
Trend	100	104	116	133
Wages/employee (Rs)	***	***	***	***
Trend	100	124	122	115

Productivity

152. The Authority notes from the table below that the productivity of the domestic industry has increased in the POI as compared to the base year.

Year	2010-11	2011-12	2012-13	POI
Production (MT)	182966	204803	224709	244843
Employees	100	112	123	134
Production/employee	***	***	***	***
Trend	100	108	106	101

Magnitude of Dumping Margin

153. The Authority notes that the dumping margin of the imports of the subject goods from the subject countries is negative on the basis of the overall DGCIS data. However, the same is evaluated for cooperating exporters separately and referenced appropriately for individual cooperating exporters.

Growth

154. The Authority notes that the growth has also followed the same trend as followed by profitability, cash flow and inventory.

Factors Affecting Domestic Prices

155. The imports from the subject countries are though small and negligible, the Authority is of the view that the same need to be seen in the overall context of data submitted by cooperating exporters and likelihood of dumping and injury analysis as per the best available data.

Ability to raise Capital Investment

156. The Authority notes that after the imposition of the antidumping duties against the subject goods from the subject countries, capacities have added in India. The Authority has analyzed the impact on these in event of withdrawal of anti-dumping duty.

a. Causal Link

157. The Rules mandates the Authority to examine the causal link between the imports from the subject countries and the injury caused to the domestic industry on account of the imports from the subject countries. The Authority has therefore highlighted the following known factors could have caused injury to the domestic industry as follows:

- i. Contraction in Demand:- The Authority notes that the demand of the subject goods in the country has grown consistently from base year to POI.
- ii. Imports from Third Countries:- The Authority notes that insignificant quantities have been imported from countries other than the subject countries.
- iii. Pattern of consumption:- It is noted that none of the interested parties has made any submission about the change in the pattern consumption of the subject goods causing injury to the domestic industry.
- iv. Export performance of the domestic industry:- The export performance of the domestic industry is not relevant since the Authority has considered only the domestic performance of the Domestic Industry for injury analysis.
- v. Conditions of competition:- The Authority notes that the investigation has not shown that conditions of competition or trade restrictive practices are responsible for the claimed injury to the domestic industry.
- vi. Developments in technology:- The Authority notes that the investigation has not shown that there was any significant change in technology which could have caused injury to the domestic industry.

Conclusion on Material Injury and Causal Link

158. In view of the fact that the present case concerns sunset review investigations, the injury in the POI on various parameters such as market share of the domestic industry in the total demand, sales, production, ability to increase its selling price matching the level of the increase in the cost, profitability of the domestic industry in the POI as compared to the injury period, cash flows has been evaluated. Further, the Authority notes that the absence of price undercutting, underselling and dumping margin on the overall import data has to be viewed considering the fact that only meagre quantity i.e., 27 MT have been imported from the subject countries under the head 54024700. Therefore, the prices offered to India by cooperating exporters are considered as acceptable or reliable for the purpose of calculating the price undercutting, underselling and the dumping margins.

J. Likelihood of continuation/recurrence of dumping and injury

Submissions by the domestic industry

159. Following are the submissions made by the domestic industry:

- i. China is the largest producer of FDY and it also has the greatest number of FDY manufacturing enterprises. From the information provided in the table given below, it is amply clear that the capacity in China of the subject goods is 34 times (3411%) of the capacity of the Domestic Industry. Further domestic industry has submitted that Chinese capacity of the subject goods is 25 times (2548%) and 44 times (4478%) of the demand in India and production of the Domestic Industry respectively. Accordingly, it can be clearly seen that there is every likelihood of continuance or recurrence of dumping and injury to the Domestic Industry once the anti-dumping duty levied by the Authority are withdrawn.

Particulars	
Chinese capacity (MT)	11000000
Capacity of domestic industry (MT)	322460
Demand in India (MT)	431643
Production of Domestic industry (MT)	245638
Sales of Domestic industry (MT)	220967
Chinese capacity as a % of capacity of domestic industry (%)	3411%
Chinese capacity as a % of demand in India (%)	2548%
Chinese capacity as a % of production of domestic industry (%)	4478%
Chinese capacity as a % of sales of domestic industry (%)	4978%

- ii. Domestic industry has submitted that M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China has increased the capacity of the product concerned from 100 (Indexed) in the year 2010 to 150 (Indexed) in the year 2013. This fact is clearly reflected on Page No. 21 of the response filed by it. Accordingly, there is clear likelihood that Indian market will be flooded with dumped goods in case anti-dumping duty levied by the Authority has been withdrawn.
- iii. The decline in imports post imposition of anti-dumping duty implies likelihood of dumping in the event of withdrawal of duty and in itself justifies extension of anti-dumping duty.
- iv. Domestic industry has argued that M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand have categorically admitted in Para 42 of its written submissions that the domestic prices within Thailand and to the rest of the world are higher than the prices to India. Hence, they have no incentive to abandon their domestic market sales as well as exports sales to third countries and divert these sales to India. The statement by the said exporter is a categorical and unambiguous admission of current as well as likely dumping into India.
- v. Domestic industry has submitted that there is positive and significant injury & dumping margin when calculated based on the prices from the subject countries to countries other than India. The domestic industry has provided copies of sample invoices and contract of exports from China PR to countries other than India to demonstrate the prices of the subject goods from the subject countries to other countries. Details of the likely injury and dumping margin based on these prices are provided in the table given below:

Injury and dumping margin based on prices from China to other countries

Likely Dumping Margin	Prices to Korea		Prices to Turkey	
	Rs/MT	\$/MT	Rs/MT	\$/MT
Normal Value	119281	2096	119281	2096
Export Price	81821	1438	78307	1376
Dumping Margin	37459	658	40973	720
Dumping Margin %	46%	46%	52%	52%
Dumping Margin (Range)	45-50	45-50	50-55	50-55
Likely Injury Margin	Prices to Korea		Prices to Turkey	

Particulars	Rs/MT	\$/MT	Rs/MT	\$/MT
NIP	***	***	***	***
Landed Value	96073	1689	92146	1620
Injury Margin	***	***	***	***
Injury Margin %	***	***	***	***
Injury Margin (Range)	25-30	25-30	30-35	30-35

vi. As regards Thailand, the Domestic Industry submits that it is for the Thai exporters and the Thai government to provide all the necessary details to the Authority for carrying out the likelihood analysis. It is important to note that that full information regarding the current and future capacities and the surplus over demand has not been made available by any of the interested parties including the Thai government. The onus to prove that there is no likelihood of dumping and injury is on the interested parties making such a claim. It is important to note that the likelihood analysis can be done only if the cooperating exporters give sufficient information with regard to the exports to other countries and also establish that there is no likelihood of dumping or injury when a proper grade-wise price analysis is carried out. In the absence of any such information, there is no reason not to continue the duties against Thailand.

vii. Revocation of anti-dumping duty shall imply continuation of dumping and injury to the domestic industry. Cessation of anti-dumping duty is likely to have significant suppressing and depressing effect on the prices of the product under consideration in the market.

160. In view of the above, domestic industry has submitted that there is every likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury once the duties are withdrawn, as withdrawal of the anti-dumping duties will provide a free access to the manufacturers/exporters of the subject goods from the subject countries to dump the subject goods in India.

Submissions by producers/exporters/importers/other interested parties

161. Imports from China over the injury investigation period are very negligible and very close to no imports in absolute terms as well as in comparison to total domestic production and the total demand in India. Therefore, considering the level of imports from China which are very negligible and similar to the situation of no imports from Vietnam, the current investigation may please be terminated against China as there is no likelihood of dumping and injury in the present investigation.

162. There is no present or future injury in terms of price of the subject imports and the imports are not capable of influencing the domestic selling price.

163. M/s Indorama Polyester Industries PCL Thailand ("M/s Indorama ") has argued that that they are already operating at optimal capacity utilization level. Hence, very little unutilized capacity is left.

164. No submissions have been made by the Domestic Industry with regard to the likelihood of injury from Thailand.

Examination by the Authority

165. The present investigation is a sunset review of anti-dumping duties imposed on the imports of subject goods from China PR and Thailand. Under the Rules, the Authority is required to determine whether continued imposition of anti-dumping duty is warranted. In the present investigation while there are continued imports of the subject goods in small quantity from the subject countries, the Authority notes that it is required to examine whether revocation of duty is likely to lead to continued dumping of the product concerned. However, considering the fact that the dumping margin in the original investigation was significant and that there are favourable market conditions in the Indian market as far as demand of the subject goods is concerned, dumping may recur if the AD duty is revoked.

166. The following analysis shows about the likelihood of dumping and further injury to the domestic industry in the event of cessation of anti-dumping duties.

(i) Level of dumping margin

167. The level of dumping margin in the original investigation was significant. As far as the dumping margin in the current period of investigation is concerned, the authority has evaluated the same for M/s Indorama and other non cooperative exporters based on the best available information. The authority notes that the Dumping margin for China based on DGCIS data is negative and that the response by M/s Jiangsu also depicts a negative Dumping Margin. However the exports quantity by M/s Jiangsu being small, the authority has not considered the same realistic and has examined the likelihood of dumping in case of revocation of AD duty.

(ii) **Level of injury and dumping margin based on prices and surplus capacity utilization from subject countries to other countries**

168. The Authority notes that the injury and dumping margin estimated on the prices from the subject countries to other countries is positive and significant. Therefore, the Authority notes that withdrawal of the anti-dumping duties will encourage manufacturers/exporters of the subject goods from the subject countries to dump the subject goods in India, and thus, there is a possibility of continuation or recurrence of dumping and injury once the AD duties are withdrawn.

(iii) **Attractiveness of the Indian Market**

169. The demand of subject goods has been rising in India. The withdrawal of ADD is likely to encourage exports to third countries at prices lower than India to get diverted to India on one hand and utilization of surplus capacities to restore exports to India.

(iv) **Surplus capacities in the subject countries**

170. The Authority notes that China holds significant capacities of the product concerned which is almost 34 times of the capacity of the domestic industry, 25 times of demand in India and 44 times of the production of the domestic industry. Further, the Authority notes that all the exporters who have filed the questionnaire response, hold surplus capacities to increase exports to India. In such circumstances, there is every possibility of continuation or recurrence of dumping and injury once the duties are withdrawn.

171. For instance, M/s Jiangsu's capacity of the subject goods is *** MT, with utilization of 83%. Its global exports of about *** to ***MT are at prices lower than that to India. Its exports to India though have declined in recent past years including the POI, it was of an order of almost *** MT in 2009. Thus, there is a likelihood of recurrence of dumping in the event of withdrawal of ADD on account of better prices availability in India and the available surplus capacity with the producer/exporter.

172. The Authority further notes that as per the World Trade Atlas data, out of the total exports of *** MT of the subject goods from China, PR globally during the Period of Investigation (POI), 56% of the subject goods exported are found to be dumped and 54% as injurious to the Indian industry if analysed on the basis of the constructed Normal Value of the subject goods for China, PR and Non Injurious Price (NIP) for Domestic Industry in the POI. For the purpose of evaluating, the ex- factory export price in China, PR and Landed Value of the subject goods in India, the response of the cooperating exporter has been referenced for various adjustments on freight, insurance and other logistic charges etc.

173. The Authority notes that one year post- POI, the total exports of the subject goods from China, PR to third countries is *** MT. On the basis of Normal Value, NIP and adjustments as stated in the preceding para, the dumped and injurious exports came to more than 90% of the total exports. This therefore implies that there is a likelihood of these goods being exported in the event of cessation of Anti- Dumping Duty (ADD) on the subject goods.

174. As regards Thailand, the Authority notes that as per the World Trade Atlas data, the total exports of the subject goods from Thailand globally are in the range of *** to *** MT in the POI and post POI. By referencing Normal Value, as computed for residual exporters in Thailand, adjustments on FOB price for ex- factory Export Price and Landed Value in India, 14% of Thailand global exports would be dumped and injurious to the Domestic Industry in India. In post- POI, the value of dumped imports increases to 17%. Therefore, there is a **likelihood** of some diversion in exports of these dumped and also injurious subject goods to India in the event of cessation of the existing ADD duty on the subject goods.

175. In case of M/s Indorama, a producer/exporter of the subject goods from Thailand, the Authority notes that despite the imposition of ADD, the exports by M/s Indorama to India constitute about ***% of its production during the POI. A surplus capacity of ***% is also available with the producer/exporter. The Dumping Margin and Injury Margin are both positive in POI for the producer/ exporter.

176. The Authority has evaluated the injury margin during the POI for the producers/ exporters of the subject goods as follows:

Sr. No.	Producer/Exporter	Landed Value (US\$/MT)	Non Injurious Price (US\$/MT)	Injury Margin	Injury Margin %	Injury Margin Range %
1.	M/s Indorama Polyester Industries, Thailand	***	***	***	***	10-20%
2.	Other Producers/ Exporters from Thailand	***	***	***	***	10-20%
3.	M/s Jaingsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd., China	***	***	De minimis	De minimis	De minimis
4.	Other Producers/ Exporters from China	***	***	De minimis	De minimis	De minimis

• Since in the post POI there are no exports to India by M/s Jiangsu and other producers/ exporters from China, PR, the likely Injury Margin in the event of the diversion of exports of third countries to India is evaluated as follows:

Sr. No.	Producer/ Exporter	Non Injurious Price (US\$/MT)	Landed Value (US\$/MT)	Injury Margin (US\$/MT)	Injury Margin %	Injury Margin range%
1.	M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd., China*	***	***	***	***	0-10%
2.	Other Producers/ Exporters from China**	***	***	***	***	0-10%

* As per the exporter's questionnaire response.

** As per the World Trade Atlas.

K. Post-Disclosure Comments

177. The following are the post-disclosure comments/submissions made by the domestic industry and other interested parties:

Domestic Industry

178. Key submissions on the Disclosure Statement dated 11.09.2015 on behalf of Domestic Industry are as follows:

A. Individual dumping margin not to be granted to M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China and M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand-

179. M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China and M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand have not filed the questionnaire response of their respective related parties and, therefore, are not entitled to be considered as cooperating exporters. Details of each of these so-called cooperating exporters and their respective related parties are as follows:

a) M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China (hereinafter referred to as "Jiangsu") has mentioned on page no. 3 of the questionnaire response filed by Jiangsu that is its wholly owned subsidiary i.e., Jiangsu Deli Fibre Co., Ltd and is involved in the product concerned. However, Jiangsu has not filed the questionnaire response of its related party Jiangsu Deli Fibre Co., Ltd.

b) M/s Indorama Polyester Industries PCL Thailand (hereinafter referred to as "M/s Indorama"): M/s Indorama has claimed on page no. 4 of its questionnaire response that it has not sold the product concerned to any of its related party. However, it is amply clear from the Annual Report of Indorama Ventures for the year 2013 that M/S INDORAMA has sold the product concerned to one of its related party i.e., PT. Indorama Synthetics Tbk. (hereinafter referred to as "PTIRS"). Relevant pages of the Annual Report are enclosed as Annexure 1 to the written submissions dated 24th August, 2015 filed with the Authority. Same are not enclosed again for the sake of brevity. Further, it is also submitted that PTIRS has a number of sales branches located in Sri Lanka, India, Thailand, Turkey, and Nepal, and administrative offices in United Kingdom, Hong Kong and Singapore. Annexure 2 is enclosed to the written submissions dated 24th August, 2015 filed with the Authority to substantiate our claim in the context of sales branches of PTIRS. Same are not enclosed again for the sake of brevity.

180. In view of the above, domestic industry humbly prays that the response filed by the Jiangsu and M/S INDORAMA should be rejected outright as they have not filed the response of their related parties. The incomplete information filed by exporters impedes the investigations and prevents the Authority from verifying the factual position of the exports/domestic sales made by them and their respective related parties. Accordingly, individual dumping margin should also not be granted to them considering the standard practice of the Authority. In this context, kind attention of the Authority is invited to Para 37 of the Final Findings (SSR Investigation - No.15/28/2013-DGAD dated 17th August, 2015) in the case of Plain Medium Density Fibre Board originating in or exported from China PR, Malaysia, Thailand and Sri Lanka wherein Authority has categorically mentioned that M/s Dongwha MDF (M) Sdn. Bhd. has mentioned in its questionnaire response that M/s Dongwha Fibreboard Sdn. Bhd. (DFB) is also indulged in domestic sales. DFB, a related company of DMM, has not filed any questionnaire response. The Authority, therefore, as per its practice, did not determine the individual dumping margin in respect of M/s Dongwha MDF (M) Sdn. Bhd., Malaysia and M/s Dongwha Global Sales Sdn. Bhd., Malaysia. In view thereof, Domestic Industry reiterates that the very same grounds exist in this case also and, therefore, the Authority may kindly follow the same principle as laid down in the MDF case. The fact that the exporter's response may have been rejected in that case for other reasons also is not material factor which would allow a departure from the uniform and non-discriminatory application of the principle and practice.

B. Meagre quantities sold to India should not be considered for the determination of injury and dumping margin-

181. Meagre quantities exported by the subject countries (i.e., 27 MT) cannot be considered as a base for the determination of individual injury or dumping margin during sunset review investigations considering the consistent practice of the Authority. Same view has been taken by the Authority in the case of POY from China PR (SSR Investigation - No.15/27/2010-DGAD dated 10th February, 2012).

182. It may kindly be appreciated that the basic premise for not accepting meagre quantities for the purpose of determining dumping margin in a SSR is the fact that the exporters are aware of the precise Period of Review which allows them to manipulate their export prices during that particular period. With respect, it is submitted that this practice is followed universally around the world.

C. Export sales to India of the so-called cooperating exporters should be reconciled with the DG System Data-

183. Export sales to India of the so-called cooperating exporters should be reconciled with the DG System Data so as to verify the correctness of their claim considering the consistent practice of the Authority. The Authority has adopted the same approach in many cases including Graphite Electrode from China PR (No.14/02/2013-DGAD dated 19th November, 2014). Relevant excerpts from the Final Findings of Graphite Electrode are reproduced below for the perusal of the Authority.

During verification of the response of the exporter M/s Anssen, it has been noted that their exports of subject goods to India did not match with the DG systems record which has been procured from the Directorate General of Systems & Data Management which show transaction wise information of subject goods to India. In particular, it is noted from the response of the exporter that information submitted by the exporter did not tally with the importers data. It is also noted that payments received from Indian importers to the company as per information received from Indian importers and also data received from DG systems does not tally with the payments shown by the company from their records in many transactions. In particular, payments made by Alloy Steel Plant SAIL, as per the importers questionnaire and also data as per DG systems differ with the payments shown by the exporters in their documents in many transactions.

In view of the above, export price claimed by the exporter on account of subject goods procured from two cooperating sampled producers i.e. M/s Fushun oriental and M/s Fangda have been rejected by the Authority and no individual dumping margin has been determined for the exports made by M/s Anssen on account of export subject goods.

D. Exports in HS Code other than 5402470 should not be considered for grant of individual dumping margin-

184. Only the subject goods reported in HS Code of the product concerned i.e., 5402470 should be considered as the subject goods exported to India. Product concerned reported in other HS Codes should not be taken on record as the sole purpose of clearing the goods in other HS Code is to evade the anti-dumping duty levied by the Authority.

185. The exports made by the exporters in HS Code other than 540247, if any, are only with the purpose to evade the anti-dumping duties in force. Therefore, exporters should not be rewarded with individual dumping margin for evading the duties.

E. Continuation of the duty levied in the Original Investigation –

186. The Authority is requested to continue the duty levied in the Original Investigation considering the following facts:

a) Incomplete information has been filed by M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China and M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand that cannot be based for calculation of dumping and injury margins considering the standard practice of the Authority.

b) Meagre quantities have been exported from the subject countries due to the anti-dumping duties in force, and therefore, cannot be based for calculation of dumping and injury margins considering the standard practice of the Authority.

c) Exports have been made in HS Code other than HS Code of the product concerned i.e., HS Code 5402470 with the only purpose to avoid anti-dumping duties in force. Our claim is evidenced from the fact that in the POI of the Original Investigation 39,137 MT has been reported in the HS Code 5402470 while in the POI of the Current Investigation only 27 MT has been reported as exports from the subject countries. Therefore, in such circumstances domestic industry humbly request the Authority not to award them with the individual dumping margin.

d) The decline in imports from 39,137 MT (POI of Original Investigation) to 27 MT (POI of Current Investigation) implies clear likelihood of dumping in the event of withdrawal of duty and in itself justifies extension of anti-dumping duty.

e) M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China has increased the capacity of the product concerned from 100 (Indexed) in the year 2010 to 150 (Indexed) in the year 2013. This fact is clearly reflected on Page No. 21 of the response filed by it. Accordingly, there is clear likelihood that Indian market will be flooded with dumped goods in case anti-dumping duty levied by the Authority has been withdrawn.

f) Exporters in the subject countries have surplus capacities of the product concerned. Details of the same have already submitted in our earlier communications, and therefore, not been repeated herein for the sake of brevity.

g) M/s Indorama Polyester Industries PCL, Thailand has categorically admitted in Para 42 of its written submissions that the domestic prices within Thailand and to the rest of the world are higher than the prices to India. The statement by the said exporter is a categorical and unambiguous admission of current as well as likely dumping into India.

h) Positive and significant likely injury & dumping margin when calculated based on the prices from the subject countries to countries other than India. Details of the same have already submitted in our earlier communications, and therefore, not been repeated herein for the sake of brevity.

F. Disclosure of absolute numbers of exports, production and capacities of the so-called cooperating exporters as done in other investigations –

187. The Authority is requested to disclose the absolute numbers of the exports, production and capacities of the exporters considering the consistent practice of the Authority. Kind attention of the Authority is invited to the following decisions of the Authority:

(i) Plain Medium Density Fibre Board originating in or exported from China PR, Malaysia, Thailand and Sri Lanka (SSR Investigation - No.15/28/2013-DGAD dated 17th August, 2015) - Para 37; and

(ii) DI Pipes from China PR (SSR Investigation - No. 15/1006/2012-DGAD dated 4th September, 2013) - Para 76

188. The Designated Authority invariably insists the domestic industry to provide actual numbers of their production, capacity and domestic sales in absolute terms even in the non-confidential version of the application filed with the Authority. The actual numbers of their production, capacity and domestic sales of the domestic industry are subsequently disclosed in the findings of the Authority. Same approach has been taken by the Authority in this case also. In view thereof, it is submitted that the exporter is also under an obligation in terms of the Rules and the Trade Notices issued to provide us with the meaningful summary of the confidential response filed by them with actual absolute quantities of their capacity, production and exports sales to India during the POI and preceding 3 years.

189. Only due to the timely protection provided by the Authority in the form of anti-dumping duties against the dumped imports from the subject countries not only the state of the domestic industry in existence during the Original Investigation has improved significantly but also significant capacities have been added in India. In order to support the above claim details are provided in the table below:

Particulars	Unit	Original POI (Oct 06 - Sep 07)	SSR POI (Oct 12 - Sep 13)
Indian Capacity	MT	149038	628851
Indian Capacity	Trend	100	422
Demand in India	MT	190798	430994
Demand in India	Trend	100	226
Indian Production	MT	146293	472866
Indian Production	Trend	100	323
Domestic sales of Indian Producers	MT	147139	430949
Domestic sales of Indian Producers	Trend	100	293
Market Share of Indian Producers in demand	%	77.11	99.99
Profit/Loss - Domestic (Rs/MT)	Index	-15	39
Profit/Loss - Domestic (Rs/MT)	Trend	-100	260

****Figures of the current POI are based on final figures post verification***

190. From the information provided in the above table, the following fact emerges:

a) Significant increase in the capacity – Considering the increasing demand in this country with a CAGR of ***% over the years coupled with the protection against dumped imports from the subject countries, the Domestic Industry was in a position to increase its capacity to cater to the increasing demand in India. As mentioned earlier, the demand increased also on account of the new applications for the PUC. Accordingly, the capacity of the Indian Industry

increased from 1,49,038 MT in the POI (Oct 06 - Sep 07) of Original Investigation to 6,28,851 MT in the POI (Oct 12 - Sep 13) of this Review Investigation. The Domestic Industry submits that withdrawal of the duties at this stage would be a serious blow to the industry's performance and prospects which is poised for growth.

b) Significant increase in the production - The production of the Indian Industry increased from 1,46,293 MT in the Original POI to 4,72,866 MT in the Review POI which was commensurate with the increasing demand in the country and the fact that the imports from the subject countries were virtually non-existent proving the fact that they were not competitive if sold at non-competitive prices.

c) Significant increase in the sales - The sales of the Indian Industry also saw the same trend as capacities and production and increased from 1,47,139 MT in the Original POI to 4,30,949 MT in the Review POI. Thus, it is proved beyond doubt that the Indian industry can cater to the increasing demand and respond to the market growth positively if it is protected against the dumped imports.

d) Significant increase in the market share - The market share of the Indian Producers in demand increased significantly from 77.11% in the Original POI to 99.99% in the Review POI. As mentioned earlier, the dumped imports were not competitive and that is the reason as to why virtually no imports had taken place during the POI. However, there are indications that the unscrupulous exporters and importers may have imported the subject goods under different customs headings to avoid the anti-dumping duties. Accordingly, we humbly request the Authority that product concerned reported in other HS Codes should not be taken on record as the sole purpose of clearing the goods in the other HS Code is either to evade the anti-dumping duty levied by the Authority or to undervalue the goods for the purpose of payment of the custom duties. We once again request the Authority to kindly look into this aspect for appropriate action as it may deem fit.

e) Increase in the profit per unit - The profit per unit of the domestic Industry increased from -15 (Indexed) in the Original POI to 39 (Indexed) in the Review POI. However, this profit is still below the optimum profit which the industry is entitled to get. Withdrawal of the anti-dumping duties would certainly lead to serious impact on the financial performance of the industry.

191. In view of the submissions advanced above, domestic industry humbly request the Authority not to grant the individual dumping & injury margin to the exporters from the subject countries and continue the duties levied in the Original Investigation as revocation of the duties will jeopardize the huge investments made by the Indian producers and a to the interest of the Indian Industry.

Interested Parties

(i) **M/s Indorama Polyester Industries Public Company Limited (hereinafter , "M/s Indorama"):**

M/s Indorama has the following comments on the disclosure statement issued by DGAD:

A. DGCI&S, World Trade Atlas and other information not provided

192. The Authority has relied upon the DGCI&S import data, World Trade Atlas and other information for the purpose of likelihood analysis for Thailand. M/s Indorama submits that the information relied upon by the Authority was neither provided to it, nor kept in the public file so that interested parties could access it. In light of this fact, M/s Indorama submits that no decision must be taken by the Authority in this matter before the following information is provided to M/s Indorama and M/s Indorama has sufficient time to analyze and make meaningful comments on the same:

- a) DGCI&S import data
- b) World Trade Atlas data
- c) Methodology adopted by the authority for identifying the subject goods from World Trade Atlas data
- d) Computation of Normal Value
- e) Computation of Ex-Factory Export price
- f) Landed Value
- g) Adjustments considered by the Authority

193. Further, the Authority has not made any justifiable reason to claim the above information as confidential. The Hon'ble Supreme Court of India in *Reliance Industries Vs Designated Authority* [2006 (202) ELT 23 (SC)] has stated that the Authority has no right under Rule 7 of the under Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumping Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred as "Antidumping Rules, 1995") to claim confidentiality. The relevant extract from the decision of the Supreme Court is reproduced below:

In our opinion, Rule 7 does not contemplate any right in the DA to claim confidentiality. Rule 7 specifically provides that the right of confidentiality is restricted to the party who has supplied the information, and that party has also to satisfy the DA that the matter is really confidential. Nowhere in the rule has it been provided that the DA has the right to claim

confidentiality, particularly regarding information which pertains to the party which has supplied the same. In the present case, the DA failed to provide the detailed costing information to the appellant on the basis of which it computed the NIP, even though the appellant was the sole producer of the product under consideration, in the country. In our opinion this was clearly illegal, and not contemplated by Rule 7.

194. Therefore, the Authority is required to disclose the information on which it will base its analysis and decision. Non-disclosure of the information would amount to a direct contravention of the obligations imposed on it under Rule 7 of Antidumping Rules. The non-disclosure of above information has adversely affected the right of defense of M/s Indorama.

195. Moreover, the Hon'ble Supreme Court of India in its decision in Sterlite Industries (India) Ltd Vs Designated Authority [2003 (158) ELT 673 (SC)] has stated as follows:

".. under Rule 7(3) the Designated Authority can come to the conclusion that confidentiality is not warranted it may, in certain cases, disregard that information. It must be remembered that not making relevant material available to the other side affects the other side as they get handicapped in filing an effective appeal."

196. Furthermore, CESTAT has explicitly ruled in its decision in Birla Ericsson OpticalVs Designated Authority [2004 (167) ELT 163 (Tri-Del)] that *"confidentiality applies only to specific factual, commercial data of a party"*. It may be noted that the DGCIS and World Trade Atlas Data pertains to exporters and is collected by an agency/government authority. Therefore, it does not relate to any specific commercial data of the domestic industry. In view of the same, there was no basis on which confidentiality could have been claimed on World Trade Atlas Data.

.0.

B. Non Consideration of improvement of performance of domestic industry in present investigation vis-a-vis earlier sunset review Indonesia, Malaysia, Korea RP and Taiwan (Terminated)

197. Reference is being made to the Authority's observation in paras 141, 145, 146, 148, 152 & 157 of the disclosure statement.

198. The observations made in the above cited paras indicate a substantial improvement in the performance of domestic industry along with absence of price undercutting, underselling and dumping margin on the basis of the overall DGCIS data. These observations substantiate the fact that domestic industry is not suffering injury due to imports from subject country, especially Thailand.

199. The Authority had terminated an earlier sunset review of anti-dumping duties against imports of Fully Drawn yarn originating in or exported from Indonesia, Korea RP, Malaysia and Chinese Taipei vide Final Findings No. 15/26/2010 dated 16th August 2012 (hereinafter referred to as the "earlier anti-dumping investigation") **on account of the fact that the domestic industry itself was not interested in seeking the extension of the period for imposition of original duties**. The petition in the earlier anti-dumping investigation had been filed by the Association of Synthetic Fibre Industry on behalf of four producers namely M/s Wellknown Polyesters Limited, M/s JBF Industries Limited, M/s Garden Silk Mills Limited and M/s Reliance Industries Limited.

200. M/s Indorama has compared the injury indicators in the subject anti-dumping investigation and the earlier anti-dumping investigation. This comparison reveals the following facts:

- i. ***Many of the injury indicators of the domestic industry in the earlier and subject anti-dumping investigation follow a similar trend;***
- ii. If the Applicant Domestic Producers are claiming that they are suffering injury now, then they were suffering ***substantially more injury in the earlier anti-dumping investigation than it is allegedly suffering now.*** Consequently, it follows that if the earlier sunset review was terminated, the present sunset review must be terminated as well.

201. M/s Indorama is contending that the subject investigation must also be terminated because ***the domestic industry is suffering at best, the same level of injury as it did in the earlier anti-dumping investigation and at worst, substantially lesser level of injury as compared to what it suffered in the earlier anti-dumping investigation.***

202. The injury indicators in the ***earlier and present anti-dumping investigation*** may be summed up by way of the following table:

Particulars	Unit	2007-08 (for earlier investigation)/ 2010-11 (for present investigation)	2008-09 (for earlier investigation)/ 2011-12 (for present investigation)	2009-10 (for earlier investigation)/ 2012-13 (for present investigation)	Jan – Dec '10 (POI) (for earlier investigation)/ Oct '12 – Sep '13 (POI) (for present investigation)
Sales of Domestic Industry in Earlier Anti-Dumping Investigation	MT	83195	88478	106908	144669
Sales of Domestic Industry as % of Demand in Earlier Anti-Dumping Investigation	%	42%	43%	47%	52%
Sales of Domestic Industry in Subject Anti-Dumping Investigation	MT	154434	183420	207173	220393
Sales of Domestic Industry as % of Demand in Subject Anti-Dumping Investigation	%	46%	49%	50%	51%
Profit in Earlier Anti-Dumping Investigation	Indexed	(100)	(217)	(770)	(545)
Profit in Subject Anti-Dumping Investigation	Indexed	100	(13)	16	39
Imports from Subject Countries in Earlier Anti-Dumping Investigation	MT	396	379	1438	2365
Imports from Subject Countries in Subject Anti-Dumping Investigation	MT	731	726	89	27
Demand in Earlier Anti-Dumping Investigation	MT	195961	207534	229050	278583
Demand in Subject Anti-Dumping Investigation	MT	339319	378121	412384	430994
Imports from subject countries as % of Total Demand in Earlier Anti-Dumping Investigation	%	0.2%	0.18%	0.62%	0.84%
Imports from Subject Countries as % of Total Demand in Subject Investigation	%	0.22%	0.19%	0.02%	0.01%

203. Overall, the movement of injury parameters in the earlier and subject anti-dumping investigation may be summarized in the following manner:

- i. In the earlier anti-dumping investigation, production increased from 85631 MT in 2007-08 to 86599 MT in 2008-09, 109727 MT in 2009-10 and 158783 MT in POI. In the subject anti-dumping investigation, production increased from 182966 MT in 2010-11 to 204803 MT in 2011-12, 224709 MT in 2012-13 and 244843 MT in the POI;
- ii. In the earlier anti-dumping investigation, sales of the domestic industry as a percentage of demand remained steady at 42% in 2007-08, 43% in 2008-09, 47% in 2009-10 and marginally increased to 52% in POI. In the subject anti-dumping investigation, sales of the domestic industry as a percentage of demand followed a similar trend; it remained steady at 46% in 2010-11, 49% in 2011-12, 50% in 2012-13 and 51% in POI;
- iii. In the earlier anti-dumping investigation, imports marginally increased from 396 MT in 2007-08 to 379 MT in 2008-09, 1438 MT in 2009-10 and 2365 MT in POI. In the subject anti-dumping investigation, imports decreased from 731 MT in 2010-11 to 27 MT in POI;
- iv. In the earlier anti-dumping investigation, imports from subject countries as a percentage of total demand marginally increased from 0.2% in 2007-08 to 0.84% in POI. In the subject anti-dumping investigation, imports from subject countries as a percentage of total demand decreased from 0.22% in 2010-11 to 0.01% in POI;
- v. In the earlier anti-dumping investigation, losses increased from (100) indexed points in 2007-08 to (545) indexed points in POI. In the subject anti-dumping investigation, the domestic industry remained in profits even though profits decreased from 100 indexed points in 2010-11 to 39 indexed points in POI.

204. A comparison of the data relating to major injury parameters in the earlier anti-dumping investigation and subject anti-dumping investigation may be expressed by way of the following table:

Particulars	Trend in Earlier AD Investigation	Trend in Subject Investigation
Sales of the domestic industry as a % of Demand	Share was lower in the earlier anti-dumping investigation	Share is higher in the subject investigation as compared to the earlier anti-dumping investigation
Imports	Increase of 497%	Decrease of 96%
Profits/Losses	Losses increased by 445%	Profit decreased by 61%
Imports as % of Demand	Increased from 0.2% to 0.84%	Decreased from 0.22% to 0.01%

205. *The above table reveals that in injury indicators such as profits and losses, the domestic industry was performing substantially worse in the period of injury analyzed in the earlier anti-dumping investigation than in the subject investigation. M/s Indorama fails to understand in that case why the earlier anti-dumping investigation was terminated while the present investigation is being continued.* Further, in the disclosure statement the authority has not gave any observations on the above submission made by M/s Indorama.

206. **However, despite repeated submissions of M/s Indorama, the authority has failed to examine this critical issue raised by M/s Indorama.** The M/s Indorama requests the Authority to critically examine this important issue and submits that the present anti-dumping investigation must also be terminated at least against Thailand.

C. **Separate Examination of Imports from Thailand and China PR:**

207. From the disclosure statement, it can be observed that the domestic producers in India control 99.99% of the total demand at present and the imports only a mere 0.01%. M/s Indorama additionally submits that the Authority must undertake a separate examination of imports originating in Thailand and China PR. From the data submitted by M/s Indorama, it is clear that it exports only a miniscule quantity of the subject goods to India.

208. Furthermore, the landed value for POI is Rs 78871 per MT for China PR, and Rs 86456 per MT for Thailand, as per Annexure 12 of the petition filed by the Applicant Domestic Producers. It can be seen that the landed price for Thailand is higher than the landed price for China PR. Additionally, if the Authority analyzes the data of M/s Indorama, it can be seen that the landed price of the subject goods exported by M/s Indorama is higher than the figure provided by the Applicant Domestic Producers for Thailand.

209. It is a practice of the Authority to carry out a country-wise analysis and terminate the investigation against a particular country if imports from that country are of very low volumes. M/s Indorama submits that a separate analysis of imports from Thailand and China PR is fully within the mandate of the Authority, and the Authority itself has carried out many such analyses in the past.

210. In light of the above submissions, M/s Indorama requests the Authority to carry out a separate examination of imports from Thailand and imports from China PR.

D. No Likelihood of continuation / recurrence of dumping and injury

a. Negligible Volume of Imports

211. Thus, the authority has correctly observed in para 136 of the disclosure statement that the imports from subject countries are insignificant. It is submitted that there is no likelihood of recurrence of injury on account of the subject imports from Thailand. **Further, the Authority has not explained how such negligible imports are causing injury to domestic industry.**

212. It is a settled practice of the Authority to terminate an anti-dumping investigation against a subject country when the volumes of imports from that country are extremely low. It may be noted that in *Final Findings dated 25th March 2011 in sunset review of anti-dumping duty against imports of Pentaerythritol originating in or exported from China PR and Sweden, the Authority observed that imports from Sweden were entering India in very low volumes and with negative dumping and injury margin. Due to such a reason, the Authority revoked the anti-dumping duty against imports of Pentaerythritol originating in or exported from Sweden.*

213. Furthermore, in Final Findings dated 20th May 2013 in sunset review of anti-dumping duty against imports of Dry Cell Batteries originating in or exported from China PR, the Authority held in paras 80 & 81 that the anti-dumping duty may be revoked due to low volume of imports.

214. The above finding of the Authority applies squarely to the facts of the subject investigation. M/s Indorama reiterates once again that the **imports as a percentage of the total demand constituted a mere 0.01% in the POI.**

215. The principle that anti-dumping duty should not be continued when there are negligible exports from a subject country in a likelihood analysis was applied by the European Commissions in its Council Regulation (EC) No 1074/96 of 10 June 1996 as regards definitive anti-dumping duties on imports of polyester yarn originating in Taiwan and Turkey wherein the Commission terminated the sunset review for goods originating from Taiwan due to the extremely low volume of imports. The relevant observations of the Commission are extracted herein:

“Import of Taiwanese POY regressed from 2812 tonnes in 1991 (2,4% market share) to 1117 tonnes in 1992 (0,9 % market share), to 551 tonnes in 1993 (0,5 % market share) and to 448 tonnes during the investigation period (0,4 % market share). It should be noted in this respect that the three major Taiwanese producers were not subject to any anti-dumping duty. When excluding the imports from these three producers, which are not concerned by the review investigation, the Community market share held by the remaining imports from Taiwan amounts to 0,1 % only. Information available suggests that the Taiwanese producers have re-oriented their exports to other third countries geographically closer where a steady growth for POY is being registered. Furthermore, these producers have apparently moved to a greater extent into the downstream product, PTY. Consequently, there is no reasonable indication that the expiry of the anti-dumping measures on imports of POY originating in Taiwan would lead to a recurrence of injury or threat of injury to the Community industry.”

216. In the present case, it is clear that the volume of imports is so low that there exists no likelihood of recurrence of injury to the domestic industry by the volume of subject imports. It is established that the domestic producers in India control 99.99% of the total demand at present and the imports only a mere 0.01%.

217. The Authority has never continued the antidumping duty when imports are very negligible and price undercutting/underselling is negative. Thus M/s Indorama submits that the Authority, in line with its decision to terminate the anti-dumping investigation against imports of Fully Drawn Yarn from Indonesia, Korea, Malaysia and Chinese Taipei, must terminate the present investigation as well.

b. Magnitude of Dumping and injury margin

218. With regard to margin of dumping, the authority has made contradictory observations in Para 152 and 157 of the disclosure statement.

219. In Para 173 of the disclosure statement, the authority made a positive likelihood analysis for Thailand.

220. In Para 152 of the disclosure statement, the authority concluded on the basis of DGCIS that dumping margin is negative. Further in para 157, the authority has concluded that price underselling is absent. However, in Para 173, the authority has relied upon the undisclosed World Trade Atlas data and observed that 14% of Thailand global exports would be dumped and injurious to domestic industry. In this regard, M/s Indorama would like to submit the following:

a. The authority has not provided the World Trade Atlas data to M/s Indorama despite request made by M/s

Indorama. Therefore, M/s Indorama is not in position to submit any comments on correctness of World Trade Atlas data relied upon by the Authority for the purpose of analysis.

b. Further, it is not known how authority has separated the information/data related to subject goods from World Trade Atlas Data. No methodology has been mentioned by the Authority in the disclosure statement. Further, no information is provided by the authority how gradewise segregation has been done.

c. The authority has actual data for M/s Indorama and other producers from Thailand. Instead of relying upon the actual verified data, the authority is relying upon unauthenticated source and same is not even disclosed to M/s Indorama. Such approach of authority is unacceptable and without any logic.

d. Further, it should be noted that the subject goods are available in many grades. The prices of these grades vary substantially depending upon denier and filament. Moreover, some grades are of off grade (second quality). The authority has based its present analysis on weighted average basis, which is incorrect method to analyse in view of substantial price variation between different grades. It is well established and known fact that off grade is a lower grade which selling price is not as high as even grade. Further, these grades cannot be interchangeably used by the customers. However, while doing the likelihood analysis the Authority has completely disregarded this crucial fact and all analysis has been done on weighted average basis considering the subject goods as single grade. Therefore, the authority must analyse which grade are exported to India and what are the prices of the similar grades when exported from Thailand to 3rd countries and domestic market. The authority should do PCN to PCN comparison.

c. Surplus Capacity

221. It is also to be noted that the analysis carried out by the Authority in terms of likelihood of recurrence of injury widely pertains only to China PR. **There are no submissions/evidence which has been examined with regard to the likelihood of injury due to imports from Thailand.**

222. The authority has also not provided and examined any iota of evidence with regard existence of surplus capacities in Thailand. **All analysis has been done taking into account the surplus capacities in China PR.** Further no submission has been made by domestic industry regarding any surplus capacities with regard to exporters based in Thailand. From the data submitted by M/s Indorama to the Authority, it can be seen that it does not possess any great surplus capacity for the subject goods.

223. M/s Indorama would like to reply to the observation made by authority in para 174 of the disclosure statement as under:

i. **Domestic Selling Price and Export Price to Third Countries:**

224. The domestic selling price of the subject goods in Thailand is higher than the export price of the subject goods to India. In Appendix 2A of the Exporters Questionnaire Response, it can be seen that M/s Indoramas' average domestic selling price is *** THB/KG while its average export price to India is only ***THB/KG. Therefore, M/s Indorama has no incentive to abandon its domestic market sales and divert these sales to India.

225. The export price of the subject goods to third countries is higher than the export price of the subject goods to India. In Appendix 2A of the Exporters Questionnaire Response, it can be seen that M/s Indoramas' average export price to India is *** THB/KG while its average export price to third countries is *** THB/KG. Therefore, M/s Indorama has no incentive to abandon its exports to third countries and divert these sales to India.

226. From the above submission, it is clear that M/s Indorama has no commercial incentive to shift its domestic sales or exports to third countries to India in the event of revocation of anti-dumping duty by India. The authority has failed to examine this crucial fact and no findings have been given for the same.

ii. **Capacity available with M/s Indorama:**

227. In Appendix 4 of the Exporters Questionnaire Response, it can be seen that its installed capacity is *** MT. In the POI, M/s Indorama produced *** MT of Fully Drawn Yarn, thereby operating at a capacity utilization rate of ***%. Therefore, M/s Indorama is operating at an optimum rate of capacity utilization and has very little unutilized capacity left i.e. only ***%. Hence, the chances of M/s Indorama increasing its exports to India are extremely slim, as it is already operating at optimal capacity utilization.

228. Even if we consider that M/s Indorama chooses to export its unutilized capacity to India, which is about *** MT, these exports will still constitute only about 0.77% of the total demand in India. Therefore, even assuming that M/s Indorama operates at 100% capacity utilization and diverts its unutilized capacities to India, it will not have any effect on the domestic industry in India. It may be noted that the volume of imports of the subject goods are miniscule and occupy only 0.01% (0.5% at best) of the total demand in India. This fact establishes that there is no likelihood or recurrence of dumping and injury to the Applicant Domestic Industries due to imports of the subject goods by M/s Indorama.

229. Additionally, in respect of the claim of surplus capacities, it is submitted that mere existence of surplus capacities is not sufficient to establish likelihood of recurrence of injury. **Any proof of existence of surplus capacities**

is required to be accompanied by the presence of low priced imports, which has not been established in the present instance. It has been held in the case of *Indian Spinners Association v. Designated Authority* 2004 (170) E.L.T. 144 (Tri. - Del.) that the “*existence of surplus production capacity cannot be taken as posing a clearly foreseen and imminent threat of injury.*” Furthermore, the Authority itself has come to this conclusion in other investigations, e.g. the sunset review investigation on Aniline from USA and Japan, (Para 73 of its final findings dated 17th January 2012)

230. Thus, it is clear that M/s Indorama has no surplus capacity which will impact the domestic producers in India. The authority has not given any reason how such surplus capacity is likely to be used for exports to India.

E. Price Suppression and Depression

231. In para 143 of the disclosure statement, the authority observed that domestic industry selling price has not grown in tandem with increase in cost. In this regard, we would like to bring attention of the authority towards significantly low volume of imports from subject countries. Such low volume of imports cannot determine the prices in India. Further, the authority should compare the prices of those grades only which are imported into India from subject countries.

F. Dumping Margin Determination

232. During the period of investigation, M/s Indorama has exported various grades to India. Further these grades of two types (even and off). It is well established and known fact that off grade is a lower grade which is likely to fetch lower price. However, while determining the dumping margin for M/s Indorama, the authority has considered even grade and off grade on the same footing and applied weighted average cost for determining the normal value and all the grades have been considered for determination of dumping margin. In this regard, M/s Indorama submits that authority should do like to like comparison and compare the export price of only those grades which are exported to India with the domestic selling price of each grade for determining the dumping margin.

233. The Authority has done the similar PCN to PCN analysis in para 63 of the original investigation wherein only those PCN was taken into account for determination of dumping margin which was exported to India.

G. Injury Margin Determination

234. Similarly for determination of injury margin and non-injurious price, the authority should separately determine injury margin and non-injurious price for each grade with even and off grade as grades are not comparable to each other. Further, these grades cannot be interchangeably used by the customers. Therefore, the authority must determine separately determine injury margin and non-injurious price for each grade separately as done in the original investigation.

H. Request to mention the complete name

235. We request the authority to kindly mention the complete name of M/s Indorama Polyester Industries Public Company Limited in the final findings in line with original findings.

I. Prayer:

236. In light of the averments made and evidence provided in this submission, M/s Indorama humbly requests the Authority to conclude that the requirements for continuation of anti-dumping duty on imports from Thailand are not fulfilled in the present review investigation.

237. It is prayed that the information not provided to M/s Indorama should be made available to M/s Indorama before proceeding with the investigation and an opportunity of being heard by way of fresh public hearing must be granted to M/s Indorama before any decision is taken against the interest of M/s Indoramas.

238. The present submission has been filed based upon the facts disclosed by the authority. If there is any change in facts communicated by the Authority or the dumping margin, then a hearing may be granted to M/s Indorama and an opportunity may be given to M/s Indorama to make comments before making any determination is made.

(ii) M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co., Ltd. (hereinafter, “M/s Jiangsu”)

239. **Determination of individual dumping margin for the exporter M/s Jiangsu:** In paragraph 100, it has been observed that “the quantity of exports made by the exporter M/s Jiangsu is too meager and cannot be treated as realistic and cannot be adopted for individual dumping margin evaluation”.

240. It is humbly submitted that the information on exports made by the exporter to India are its actual exports as per the records maintained by the exporter and therefore, the individual dumping margin for the exporter cannot be denied on the ground of low quantity as there is no legal or logical basis. Had it been the intention of the law for not making the determination of dumping margin on account of low quantity of exporters, the related provisions could have been included under the Anti-dumping law. There are no such legal provisions in Section 9A of the Customs Tariff Act, 1975 or Rules 10 and 17 of the Anti-dumping Rules for disregarding the relative or low imports of the subject goods for dumping margin determination.

241. There is nothing in the Indian anti-dumping law wherein individual treatment can be denied to an exporter for the determination of its dumping margin on the ground of low export volumes. Section 9A(6) makes it mandatory that in an anti-dumping investigation the dumping margin for an exporter shall be determined on the basis of information provided for actual exports and records maintained by the exporter or producer. The Hon'ble Authority is requested to draw its attention to the following findings wherein the dumping margin was determined in spite of the low volume of imports from the subject countries by following the provisions as mentioned above:

Sl. No.	Case
1	Float Glass from China PR and Indonesia (SSR)
2	POY from China PR (SSR)
3	Bias Tyres from China PR and Thailand (SSR)
4	Pentaerythritol from Japan & Taiwan (SSR)
5	Nylon Filament Yarn from China, Taiwan, Malaysia, Indonesia, Thailand and Korea (SSR)
6	Phenol from Korea (MTR)

242. The Hon'ble Authority may consider the information of actual exports to India by the exporter for determination of its individual dumping margin.

243. There is no likelihood analysis of the information of the exporter. We would request the Hon'ble Authority for undertaking likelihood analysis of M/s Jiangsu in the current investigation. We would also like to submit as under with regard to the likelihood analysis of the exporter:

- a. Since the dumping margin of M/s Jiangsu is de minimis in the current investigation, there is no likelihood of dumping. Even on the basis of their export prices to other countries, there would not be any dumping.
- b. The main thrust of M/s Jiangsu is in the domestic market where it has increased its sales by more than 73% in the calendar year 2013 as compared to the calendar year 2007. The exporter also increased its sales to other countries by over 47% over the aforesaid period.
- c. Since there is a robust growth in the domestic market for the production of M/s Jiangsu, the exporter would continue to focus on the domestic market and on export to other countries where it has been able to increase its sales.
- d. There is no necessary sales distribution channel of M/s Jiangsu in India and that it is a hindrance for the exporter to supply its material in the Indian market.
- e. The price undercutting and underselling both on the basis of the export prices of the exporter are negative.

244. In view of the above, it is amply clear that there is no case for imposition of the anti-dumping duties on M/s Jiangsu as there is no current dumping margin nor there is any likelihood of dumping by the exporter.

245. In the disclosure statement in para 170, it has been observed that M/s Jiangsu prices to other countries are lower as compared to Indian prices. It is submitted that such observation does not lead to any conclusion with regard to likelihood of dumping. Therefore, the dumping margin analysis on the basis of the export prices to other countries by the exporter would only lead to such a conclusion not otherwise. Therefore, we would request the Hon'ble Authority for the correction of conclusion made in the aforesaid para. Besides, we would also like to submit that there would not be any dumping even on the basis of export prices by M/s Jiangsu to other countries.

246. With regard to standing and change in the composition of the domestic industry in the present case, our submissions have been included in the disclosure statement. However, the same have not been addressed and there are no reasons and analysis in the disclosure statement for the change in the composition of the domestic industry. We would request the Hon'ble authority for addressing our concerns for reasons and analysis change in the composition of the domestic industry in the final findings.

247. Our concerns relating to excessive confidentiality have been included in the disclosure statement. However, the same have not been addressed. We would request the Hon'ble authority for addressing our concerns confidentiality in the final findings.

248. In view of our submissions above and earlier submissions, there is no case for the continuation of the duties against the exporter represented by us in the current investigation.

Examination by the Authority

249. The post-disclosure comments/submissions made by the domestic industry and other interested parties are appropriately examined below to the extent considered relevant by the Authority:
250. The Authority notes the submissions of various interested parties regarding awarding an individual dumping margin to M/s Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd, China (hereinafter “M/s Jiangsu”).
251. The Authority noting the submissions of the Domestic Industry regarding non- filing of response by M/s Jiangsu Deli, notes that M/s Jiangsu Deli has not exported the PUC to India during the POI and has therefore referenced the exports reported by M/s Jiangsu in the Questionnaire Response and duly correlated with DGCI&S data.
252. The Authority in the disclosure statement had proposed that the quantity of exports made by M/s Jiangsu being meager, it cannot be considered realistic. The Authority in view of various submissions on this aspect, after broadly correlating the export price of M/s Jiangsu with other sources including the world prices as available from the World Trade Atlas, reiterates that the volume of goods exported in the POI is too small to consider the exports price realistic. Further, as has been stated in the disclosure statement that since M/s Jiangsu has exported much larger volumes earlier in 2009 and has surplus unutilized capacity, there is a likelihood of recurrence of dumping and consequential injury. Further, the exports made by M/s Jiangsu to countries other than India could also get diverted to India if ADD is withdrawn as their exports prices to third countries are lower than India.
253. The Authority notes the submissions regarding awarding of an individual dumping margin to M/s Indorama and reiterates that the evaluation of dumping margin for M/s Indorama has been made on the basis of the questionnaire response filed by the exporter and verified on- site at the exporter’s premises. The Authority notes that M/s Indorama has not sold the product under consideration (PUC) to any of its related parties in their domestic market. As regards the submission of the Domestic Industry to refer the judgment of Plain Medium Density Fiber (**MDF**) Board originating in or exported from China PR, Malaysia, Thailand and Sri Lanka (SSR Investigation - No.15/28/2013-DGAD dated 17th August, 2015), the Authority holds that the facts of the present case are different from that of the MDF case. The Authority holds that both dumping margin and injury margin have been evaluated on a weighted average basis which has been found to be an appropriate methodology in view of narrow price/cost variations of different PCNs of the PUC as verified for the exporter as well as for the Domestic Industry. The Authority holds that since dumping margin and injury margin for M/s Indorama are positive in the POI despite the imposition of ADD, the dumping and consequential injury is continuing to the domestic industry due to exports of PUC by M/s Indorama. The Authority also notes the submissions made by the exporter on the overall dumping margin evaluated on the basis of DGCI&S data. Since M/s Indorama has exported the goods under the ITC HS 54023300 and not under 54024700, their submissions referencing the DGCI&S data of 54024700 are misplaced. The working of dumping margin for M/s Indorama has already been provided to the exporter on a confidential basis, which clarified the quantum of exports made by the exporter as adopted during the POI.
254. As regards the likelihood of the recurrence of dumping, the Authority notes that the exporter is having a surplus capacity and with their exports being a sizeable quantity of their production to various countries including India, if the ADD is withdrawn, not only the ongoing dumping would intensify but also the surplus capacity of the producer/ exporter could get offloaded in India on account of growing demand of the subject goods in India.
255. The exporter’s premise on insignificant surplus quantities is not tenable since the price undercutting and suppression is inevitable in view of the prices of the exporter in the POI, continuance of which may lead to cascading and spiraling effect on price injury to the domestic industry.
256. The Authority notes the request made by M/s Indorama to provide the World Trade Atlas and DGCI&S data to them. The likelihood analysis for M/s Indorama has been carried out on the basis of the data provided by M/s Indorama itself and verified by the Authority with the verification report shared with the exporter. The World Trade Atlas data has been referenced for China and for the exporters from Thailand other than M/s Indorama, who are not represented by M/s Lakshmikumaran Sridharan. With respect to DGCI&S data, the Authority doesn’t consider it appropriate to provide the same in view of the Supreme Court ruling in the case of *Union of India vs. M/s Bharat Solvent & Chemical Corporation* (SLP (C) No. 13583/2015) wherein the apex Court had put a stay on the order of the Delhi High Court in case of *Sandisk International Ltd. vs. The Designated Authority* (WP (C) 744/2015).
257. In the instant case, the exports made by M/s Indorama have been correlated by the Authority with DGCI&S data and quantity of exports accepted as a part of the Authority’s investigation process. As it is an internal investigation exercise and the Hon’ble Supreme Court has stayed the Delhi High Court’s order, the Authority doesn’t consider it appropriate to provide DGCI&S data to the producer/ exporter/ any other interested party.
258. The Authority also holds that since the classification of subject goods is only indicative and not binding as also stated in the Initiation Notification dated 24.03.2014, all exports of PUC under different heads have been examined and taken into consideration for various aspects of this Finding.
259. As regards considering the economic parameters of the Domestic Industry during the earlier SSR of the PUC for other subject countries, the Authority holds that it has evaluated the injury parameters for the instant case under

consideration during POI and past 3 years in accordance with the stipulated rules/ its consistent practice. The earlier investigation was terminated on the grounds of withdrawal of request by the domestic industry and no evaluation was undertaken on injury parameters which probably could then have been cited as a reference by the exporter.

260. As regards the issue of a separate assessment of injury for China and Thailand, the Authority has undertaken a cumulative assessment for the two subject countries in accordance with Annexure II, Rule 9(2)(iii) of the AD Rules, 1995.

261. The Authority understands that source of DG Systems data and DGCI&S data is same. The Authority further notes the transaction to transaction DGCI&S data serves the purpose of reconciliation of exports data quite well in the instant case. Therefore, even if the DG Systems data may be more detailed it would serve the identical purpose in the instant case and the Authority therefore holds that a repeat validation in the instant case is redundant and therefore not warranted.

L. Indian Industry's Interest & Other Issues

262. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of antidumping measures would not restrict imports from the subject country/territory in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

263. It is recognized that the continued imposition of the anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of this product. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline in the performance of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

M. Conclusion And Recommendations

264. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority, as recorded in this finding, the authority concludes that:

(a) The positive dumping and injury margin of M/s Indorama and other producers/exporters from Thailand in POI despite the existence of AD duty justify the continuance of AD duty as there is a likelihood of continuance or recurrence of dumping and injury if the AD duties are withdrawn from Thailand. The exports from M/s Jiangsu and other exporters from China, PR are not significant but the prices have not been considered realistic for determining dumping margin and injury margin. M/s Jiangsu's export price to third countries as per their response/ submission and that of other producers/exporters from China, PR as per the World Trade Atlas in post POI evidence a positive dumping margin and injury margin. Further, it is also noted that M/s Jiangsu has surplus unutilized capacity, therefore there is a likelihood of recurrence of dumping and consequential injury. The exports made by M/s Jiangsu to countries other than India could also get diverted to India if ADD is withdrawn as their exports prices to third countries are lower than India.

(b) The demand of subject goods has been rising in India. The withdrawal of ADD is likely to encourage exports of subject goods to third countries to get diverted to India as well as the utilization of surplus capacities to restore exports to India.

(c) Dumping and consequent Injury to the domestic industry is likely to continue or reoccur in the event of cessation of anti dumping duty on imports of subject goods from the subject countries.

265. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the domestic industry, exporters and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and the causal link. Having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established likely dumping and injury in the event of cessation of anti-dumping duty, the Authority is of the view that continued imposition of definitive anti-dumping duty is required to offset likely dumping and consequent injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on the imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries in the form and manner described hereunder.

266. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the anti-dumping duty equal to the amount indicated in Col. 8 of the table below is recommended on the imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries.

DUTY TABLE

Sl. No	Customs Tariff Heading	Description of goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	*5402	All Fully Drawn or Fully Oriented Yarn/Spin Draw yarn/Flat Yarn of Polyester non-textured and non – POY)	China PR	China PR	Any	Any	547	MT	USD
2.	-do-	-do-	China PR	Any country other than China PR	Any	Any	547	MT	USD
3.	-do-	-do-	Any country other than China PR	China	Any	Any	547	MT	USD
4.	-do-	-do-	China PR	China PR	Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd	Jiangsu Hengli Chemical Fibre Co. Ltd	256	MT	USD
5.	-do-	-do-	Thailand	Thailand	Indorama Polyester Industries Public Company Limited (formerly Indo Poly (Thailand) Ltd.)	Indorama Polyester Industries Public Company Limited (formerly Indo Poly (Thailand) Ltd.)	57.78	MT	USD
6.	-do-	-do-	Thailand	Thailand	Any combination other than mentioned at Sr no. 4 above		248.63	MT	USD
7.	-do-	-do-	Thailand	Thailand	Any	Any	248.63	MT	USD
8.	-do-	-do-	Thailand	Any country other than Thailand	Any	Any	248.63	MT	USD
9.	-do-	-do-	Any country other than Thailand	Thailand	Any	Any	248.63	MT	USD

* The customs classification is indicative only and is not binding on the scope of this investigation.

267. Landed value of imports for the purpose of this Notification is the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

N. Further Procedure

268. An appeal against this order, after its acceptance by the Central Government, shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975.

A. K. BHALLA, Designated Authority